७
पत्र व्यवहार
जमनालाल बजाज
का समाज-सेवियों एवं व्यापारी-वर्ग से

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

५८२

जमनालाल बजाज सेवा ट्रस्ट—पंद्रहवां ग्रंथ

पत्र-व्यवहार

भाग ७

—समाज-सेवियों तथा व्यापारियों के साथ—

•

सम्पादक
रामकृष्ण बजाज

•

दो शब्द
श्री घनश्यामदास बिड़ला

•

१९६९
मुख्य विक्रेता
सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

जमनालाल बजाज सेवा ट्रस्ट के लिए
मार्तण्ड उपाध्याय, नई दिल्ली
द्वारा प्रकाशित

प्रथम बार : १६६६
मूल्य
पांच रुपये

मुद्रक,
सम्मेलन मुद्रणालय
इलाहाबाद

दो शब्द

श्री जमनालाल बजाज के सुपुत्र श्री रामकृष्ण ने स्वर्गीय सेठजी के पत्रों को कई विभागों में संकलित करके प्रकाशित करवाया है। प्रस्तुत प्रकाशन में उनके ऐसे पत्रों का संकलन किया गया है, जो या तो व्यवसाय-संबंधी हैं या घरेलू कहे जा सकते हैं। ऐसे पत्रों में सर्व-साधारण की कोई दिलचस्पी नहीं हो सकती, क्योंकि इनमें कोई ऐसा मसाला नहीं है, जिसमें कोई सार्वजनिक हेतु हो। पर रामकृष्ण का आग्रह रहा कि ये पत्र भी प्रकाशित हों और मैं इस प्रकाशन की भूमिका लिखूं। इसी आग्रह के वश होकर मैं यह दो शब्द लिख रहा हूं।

श्री जमनालालजी मेरे अंतरंग मित्र थे और चूंकि मूलतः वह व्यापारी थे, इसलिए इस प्रकाशन से पाठक को इतना तो ज्ञान मिल ही जायगा कि जमनालालजी अपने व्यवसाय को किस प्रकार की कुशाग्र बुद्धि से चलाते थे और जहां उन्होंने कांग्रेस और राजप्रकरणी मसलों में दिलचस्पी दिखाई, वहां उन्होंने अपने व्यवसाय की अवहेलना भी नहीं की।

गीताकार ने व्यवसायात्मिका बुद्धि की प्रचुर प्रशंसा की है :

'व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन"

व्यवसायी की बुद्धि एकात्मक होती है और अव्यवसायी की बुद्धि बहुशाखा और अनेक होती हैं। इस तरह जहां व्यवसायी को एक अलभ्य प्रमाण-पत्र दिया, अव्यवसायी पर आक्षेप भी किया। व्यवसायी शब्द का संस्कृत में कई अर्थों में विशेष अर्थ है व्यापारी। प्रचलित सेठ शब्द का भी प्राचीन श्रेष्ठिन् से ही उद्भव हुआ है। इस तरह जमनालालजी सेठ—

'श्रेष्ठिन्' थे, व्यवसायी थे और व्यापारी थे। गीताकार ने जहां व्यवसाय को उच्च पद दिया अव्यवसायी पर कटाक्ष किया।

इसलिए व्यवसायी जमनालालजी के व्यवसाय-सम्बन्धी पत्रों से भी पाठकों को कुछ सीखने को मिल जायगा, इस भूमिका का यही हेतु है।

—घनश्यामदास बिड़ला

कलकत्ता,
२२ अक्तूबर, १९६८

संपादकीय

पूज्य पिताजी (श्री जमनालाल बजाज) की प्रवृत्तियां विविध थीं और उनके संपर्क बहुत व्यापक। उनकी इन विविध प्रवृत्तियों और व्यापक संपर्कों का दर्शन "पत्र-व्यवहार" माला की इन पुस्तकों से होता है। साथ ही उस युग की स्थिति पर इनसे गहरा प्रकाश पड़ता है।

पूज्य पिताजी की "पत्र-व्यवहार"-माला में अबतक छः भाग पाठकों के सामने आ चुके हैं।

इनके प्रारंभिक तीन और छठे भाग में पिताजी का सार्वजनिक जीवन मुख्य रूप से सामने आता है। चौथे और पांचवें भाग में उनके कौटुम्बिक जीवन की झलक पाठकों को मिलती है।

अब हम पत्र-व्यवहार-माला की सातवीं कड़ी आपके सम्मुख प्रस्तुत कर रहे हैं। इसमें पिताजी का समाज-सेवियों और व्यापारियों के साथ हुआ पत्र-व्यवहार संकलित है। प्रारंभिक जीवन से पिताजी का झुकाव आध्यात्मिक विकास की ओर था। इस विकास के लिए शुरू-शुरू में उन्होंने शिक्षा के माध्यम को अपनाया। और इसके बाद धीरे-धीरे वह सामाजिक क्रान्ति की दिशा में अग्रसर हुए।

पिताजी की वृत्ति हमेशा से ही रचनात्मक व सामाजिक सुधार की रही। व्यापार में शुद्ध साधनों से धन कमाने की ओर उनका विशेष आग्रह रहता था। वह सदा इस बात के लिए प्रयत्नशील रहते थे कि धन का समाज के हित में सदुपयोग हो। होनहार युवकों का संग्रह कर उन्हें व्यापार के कार्यों में निपुण करने की ओर उनकी विशेष दिलचस्पी थी। धनिक मित्रों को सामाजिक कार्यों में खींचने और उनमें इस प्रकार के कार्यों के प्रति रुचि

पैदा करने का वह सदा प्रयत्न करते थे। प्रस्तुत पत्र-व्यवहार में इन प्रयत्नों की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

पिताजी के पत्र-व्यवहार का दायरा बहुत विस्तृत और बहुमुखी रहा है। उनमें से कुछ प्रतिनिधि पत्र ही छांटे जाकर इस संग्रह में दिये जा सके हैं, जिससे उनकी कार्य-प्रवृत्ति तथा कार्यनीति की कुछ झलक पाठकों को मिल सके।

श्री रामकृष्ण डालमिया के साथ हुए पिताजी के पत्र-व्यवहार के अन्तर्गत पत्र-संख्या ३१ के संबंध में श्री रामकृष्णजी डालमिया ने एक विस्तृत पत्र लिखा है, जिसमें स्थिति का स्पष्टीकरण किया गया है। वह परिशिष्ट नं १ में दिया जा रहा है।

श्रीघनश्यामदासजी बिड़ला के हम अत्यन्त आभारी हैं कि हमारी विनती को मानकर उन्होंने इस पुस्तक की भूमिका लिखने की कृपा की। दरअसल पूरी किताब को देख जाने के बाद उनके मन में शंका रही कि इन पत्रों के प्रकाशन से किसीको विशेष लाभ हो सकता है क्या। उनका मानना था कि इस विज्ञान-युग में नए-से-नए विषय भी इतनी जल्दी पुराने हो जाते हैं कि ऐसी पुस्तक को पढ़ने में शायद ही किसी को दिलचस्पी होगी। हम भी उनके इस विचार से सहमत हैं। किन्तु 'ट्रस्ट' के प्रकाशनों के पीछे मूल उद्देश्य यही है कि उस ऐतिहासिक ज़माने की जितनी सामग्री हमारे पास है वह प्रकाश में आ जाय और शोध-कार्य में दिलचस्पी रखनेवाले लोगों को वह उपलब्ध हो जाय उतना अच्छा। इस दृष्टिकोण के कारण तथा पू० पिताजी से उनकी घनिष्ठता व मेरे प्रति उनके स्नेह को ध्यान में रख-कर अंततोगत्वा श्री बिड़लाजी ने पुस्तक की भूमिका लिखी इसके लिए हम उनके अनुगृहीत हैं।

इस खंड की पांडुलिपि तैयार करने में जिनकी सहायता व सहयोग मिला उनके हम आभारी हैं।

—संपादक

पत्र-व्यवहार

भाग : सात

•

समाज सेवियों तथा
व्यापारी वर्ग के साथ

•

श्री रामेश्वर अग्रवाल की ओर से —

: १ :

कानपुर,
२१-११-३५

पूज्य काकाजी,

आपका पत्र मला। मैं जवाब तुरंत देनेवाला था, किंतु इलाहाबाद की यू० पी० युनिवर्सिटी विद्यार्थी कान्फ्रेंस में हमारी कालेज-यूनियन का प्रतिनिधित्व करने का कार्य मुझपर होने के कारण मुझे वहां जाना पड़ा। वहां चार दिन लग गए, इसलिए पत्र देने में देर हुई।

आपने उस कर्ज के विषय में मेरी राय पूछकर मुझे उलझन में डाल दिया। पिताजी का हाथ गत चार-पांच वर्षों से बहुत तंग है। दुर्दैव ने उनपर अगाध प्रहार किये, और मैं तो यही कहूंगा कि धन्य है पिताजी की शक्ति कि उन्होंने सबका सामना किया। उनकी जगह पर कोई दूसरा आदमी होता तो कदाचित ही टिकता। सब घरवाले, दोस्त, बिरादर उनको यही कहते थे कि मोतीलालजी दो या तीन खेत के टुकड़े बेच-बाचकर झगड़े से अलग क्यों नहीं होते। लेकिन कष्ट से प्राप्त हुई खेती आधे तथा चौथाई भावों में बेचते हुए उनको तकलीफ होने लगती है और यही सोचकर कि दो-तीन साल में अच्छी फसल हो गई तो बिना बेचे ही काम निकल जायगा, कुछ इधर से तो कुछ उधर से कर-कराकर काम चला लेते हैं। मुझे खूब याद है कि जब मैं उनसे पढ़ाई के लिए पैसे लेने से इन्कार करता हूं तो यह जानकर उनको कितना दुःख होता है। ऐसे संकट में होते हुए भी उन्होंने कुछ दिन पहले ही (जब उन्होंने पहली बार आपसे रुपयों का जिक्र किया था) बात-की-बात में २०० रुपये तथा पांच एकड़ जमीन कमा ली और यदि रुपयों की, जैसा वह चाहते थे, व्यवस्था हो जाती तो २००० रुपये उस

सौदे में बच जाते व जिसके पैसे देने थे उसे वापस कर दिये जाते। अस्तु। 'संतोषं परमं धनम।'

अब पिताजी को इस समय १०००रुपये के करीब देना है, जिसकी उनको रात-दिन चिंता लगी रहती है और जिसका परिणाम उनके तथा माताजी के शरीर पर बहुत हुआ है। मैंने उनसे कई बार कहा, "पिताजी, आपने मुझे पढ़ा-लिखाकर इतना बड़ा कर दिया है। अब मुझे विश्वास है कि मैं स्वयं कमाई करके आपकी भी सेवा कर सकूंगा तथा खुद का भी खर्चा चला सकूंगा। मुझे न तो आपकी खेती की ज़रूरत है, न धन की। किंतु आप अपने स्वास्थ्य को संभालिये।" किंतु काकाजी, उनका कैसा पितृ-हृदय है, यह आप स्वयं समझ सकते हैं।

उस १००० रुपये के अतिरिक्त २००० रु० उनको खेती के संभालने के लिए चाहिए, जिसके सुधरते ही खेती की कमाई दुगुनी से ज्यादा बढ़ जायगी, ऐसा उनका विश्वास है। फिर चि० बसंती का व मेरा विवाह, मकान की दुरुस्ती आदि काम के लिए १००० रु० की आवश्यकता है। यह सब व्यवस्था हो जाने पर उनकी स्थिति पूरी तरह सुधर जाने की आशा है। पांच साल पहले ३२ एकड़ के एक खेत से उन्हें ४२ खडी कपास मिली थी और उस समय १००-१२५ रुपये खंडी का भाव था। इस वर्ष २००-२५० रुपये लगने से खेत में फसल कुछ ज्यादा अच्छी आई है। इसीलिए उनका विचार है कि वह ब्याज तथा ५०० रुपये प्रति वर्ष देते रहेंगे, सो ठीक ही है, ऐसा मैं समझता हूं।

काकाजी, मैं एक बात स्पष्ट कर देना चाहता हूं। मुझे इस लेन-देन और खेती-बाड़ी की बातों का विशेष ज्ञान नहीं। मैं एक मूर्ख विद्यार्थी हूं, जिसमें खेलने-कूदने और पढ़ने के अतिरिक्त कोई भी विशेषता नहीं है। यह मेरे लिए कोई अभिमान की बात नहीं। किन्तु अपनी अज्ञानता को छिपाना मैं पाप समझता हूं। अतः प्रश्न यह है कि पिताजी प्रतिवर्ष ५०० रुपया दे सकेंगे या नहीं, इस बात को तो आप दोनों ही जान सकते हैं, किंतु नीयत या ईमानदारी की पूछते हैं तो मैं आपको विश्वास दिला सकता हूं कि उनकी

नीयत में रत्ती-भर भी फरक नहीं आ सकता। किसी वर्ष खेती ने धोखा दे दिया या कुछ और अनपेक्षित बाधा उपस्थित हो गई और देरी हो जाय तो बात दूसरी है। आप इनसब बातों को सोच लीजिएगा तथा उसके बाद जो उचित हो सो कीजिएगा। लिखने में कुछ ज्यादा-कम हो गया हो, तो क्षमा कीजियेगा। आपने मेरी राय पूछी तथा आप यह भी पसंद करते हैं कि सब बातें स्पष्टतया की जायं, इसीलिए मैंने यह पत्र आपको स्पष्ट भाषा में लिखा है।

मैं यहां आनंद में हूं। आपके आशीर्वाद तथा कृपा दृष्टि की आवश्यकता है। आशा है, आप अपने विचार लिखने की कृपा करेंगे।

सभीको मेरा यथायोग्य पहुंचे।

आपका,
रामेश्वर

: २ :

बर्लिन,
२४-७-३६

पूज्य काकाजी,

अंत में हम बर्लिन पहुंच ही गए। प्रवास बड़ा सुखकर तथा आनंददायक हुआ। कमलनयन तथा खेर, इन दोनों साथियों के सहवास के कारण दिन बीतते प्रतीत ही नहीं होते।

प्रवास का वर्णन कमलनयन ने अपने पत्र में दिया ही है। मुझे कुछ विशेष बातों का अनुभव हुआ है, वे आपके सम्मुख रख रहा हूं।

सर्वप्रथम तो इस सफर में दुनिया की अगाधता तथा उसके बीच में अपनी क्षुद्रता का अनुभव हुआ, किंतु साथ ही इस क्षुद्रता के लिए अपनी राजकीय परिस्थिति कितनी कारणीभूत है, यह भी स्पष्ट प्रतीत होता है। आज हम लोग ओलम्पिक खेल के लिए जो थियेटर्स आदि बांधे हुए हैं और जो अन्य व्यवस्था की गई है, उसे देखने गयें थे। खेलों के लिए एक स्टेडियम बनाया गया है, जहांपर एक साथ तीन लाख लोग

बैठकर खेल देख सकते हैं। उसको बनाने में तीन साल लगे हैं। यह २५० फुट ऊंचा है, जिसमें १२५ फुट जमीन के स्तर से नीचे यह बना हुआ है। देखने से तो यह मायावी लोगों का कार्य मालूम पड़ता है। इसके अतिरिक्त अन्य कई स्टेडियम हैं, किंतु उनमें जगह कम हैं। यहां पर विद्यार्थियों के लिए व्यायाम का अति उत्तम प्रबंध है। छह व्यायाम-संस्थाएं (Physical Culture Academics) हैं। उनकी व्यवस्था बहुत ही सुंदर है। व्यायाम को पढ़ाई से भी अधिक प्रधानता दी जाती है। यहां केवल एक विश्वविद्यालय है जिसमें १००० विद्यार्थी अध्ययन करते हैं। विद्यार्थियों की संख्या अब पहले से बहुत कम कर दी गई है। जितने विद्यार्थियों को सरकार काम में लगा सकती है उतनों को ही रखते हैं। इस विद्यालय के विद्यार्थी कैंप में वेटर का तथा अन्य दूसरे काम करते हैं। यों तो सारी व्यवस्था मिलिट्री के हाथ में है। ओलंपिक खेलों में हिस्सा लेनेवाले ४००० खिलाड़ियों के लिए एक 'ओलंपिक विलेज' बनाया गया है, जिसमें खिलाड़ियों के रहने के लिए पक्के मकान बनाये गए हैं। हमारा कैंप १२ मील की दूरी पर है। उनके लिए २१० बड़ी-बड़ी मोटर लारियां मिलिट्री ने दे रखी हैं। इन चार हजार खिलाड़ियों के अतिरिक्त १००० खिलाड़ी अपने-अपने खेल दिखाने आये हैं। वे सब भी इसी कैंप में हैं।

हम सब लोगों के लिए ट्राम, म्युनिसिपैलिटी की लारियां, लोकल ट्रेनें आदि सब मुफ्त हैं। जर्मन राष्ट्र ने लाखों रुपये खर्च किये हैं तथा लाखों लोगों से काम लिया है। एक स्वतंत्र राष्ट्र किस मस्ती से कार्य कर सकता है, यह जानना यहां कुछ कठिन नहीं है। जहां हिंदुस्तान से दो दर्जन आदमी बर्लिन भेजने हों, तो भीख मांगनी पड़ती है और वह भी नहीं मिलती, जहां हमारे शासक सहायता देना तो दूर, जानेवाले प्रतिनिधियों को पासपोर्ट न देकर उनका रास्ता रोकते हैं, वहां स्वतंत्र राष्ट्र के प्रतिनिधि सैकड़ों की संख्या में उनकी सरकार की ओर से भेजे जाते हैं। किसी नौजवान के दिल की तड़पन को कौन जान सकता है?

इस ओलंपिक के विषय में संक्षिप्त में कहा जाय तो इतना ही कहना

पर्याप्त होगा कि जर्मनों ने दुनिया के प्रतिनिधियों पर अपनी धाक जमाने में पूरी शक्ति लगा दी है। यों तो जितना लिखा जाय थोड़ा ही है।

मेरी तथा कमलनयन की तबीयत अच्छी है। सबको मेरा यथायोग्य।

आपका,
रामेश्वर

श्री डी. के. कर्वे की ओर से—

: ३ :

हिंदू विधवा आश्रम
हिंगणे, बद्रुक (पूना)
२३-४-२८

प्रिय महोदय,

मेरी ७१ वीं वर्षगांठ पर एकत्रित किये गए 'छात्रवृत्ति कोष' में आपने उदार सहायता दी, उसके लिए आपको धन्यवाद।[1]

आपका,
डी. के. कर्वे

---

१. अंग्रेजी से अनूदित।

श्री भागीरथ कानोड़िया की ओर से—

: ४ :

कलकत्ता

पूज्य भाईजी,

एक पत्र मैंने आपको परसों दिया था, पहुंचा होगा। हीरालालजी शास्त्री वनस्थली में जो कार्य कर रहे हैं, उससे तो आप अवगत हैं ही। उन्हें आजकल आर्थिक कष्ट वहुत है। आपके यहां से उन्हें हमेशा कुछ-न-कुछ सहायता मिलती रही है, परंतु इन दिनों आपने कुछ सहायता नहीं भेजी है। हीरालालजी की जीवन कुटीर को रुपये की जितनी आवश्यकता आज है, उतनी पहले शायद कभी नहीं थी। यदि आप उनके लिए कुछ करना उचित समझें और कर सकते हों तो आपकी निगह के लिए आपको मैंने लिख दिया है।

कान की तकलीफ का क्या हाल है? पूज्य जानकीवहन की चिट्ठी सीतारामजी के पास आई थी। उसमें तो लिखा था 'यहां रोज पार्टियां उड़ती हैं, अपनेको तो बीमारी नहीं लगती है।' पत्रोंवाले आपको बीमार बताते हैं। सही-सही क्या माजरा है? लिखने की कृपा करें।

विनीत,

भागीरथ कनोड़िया

श्री भागीरथ कानोड़िया के नाम—

: ५ :

बंबई,

३०-६-३८

प्रिय श्री भागीरथजी,

श्री हीरालालजी और श्री हरिभाऊजी से यहां राजस्थान वालिका

विद्यालय, जयपुर राज्य-प्रजामंडल और राजस्थान-संघ की आर्थिक व्यवस्था के संबंध में बातचीत करके यह तय हुआ कि विद्यालय की आर्थिक जिम्मेवारी श्री रतनवहन पर, प्रजामंडल की श्री हीरालालजी पर और राजस्थान-संघ की हरिभाऊजी पर रहे। आप और श्री सीतारामजी विद्यालय के सहायक और पोषक के रूप में रहकर उसकी आर्थिक व्यवस्था में श्री रतनजी का हाथ बटायें। मैं और श्री कपूरचंदजी पाटनी प्रजामंडल के काम के सीधे संपर्क में रहेंगे ही, तथा शास्त्रीजी की जिम्मेवारियों में हिस्सा लेंगे ही। राजस्थान के, खासकर ग्रामसेवा के कार्य में श्री हरिभाऊजी आवश्यकतानुसार चि० राधाकृष्ण का सहयोग लेते रहेंगे।

विद्यालय के लिए अभी महिला-सेवा-मंडल से ३००० रुपये की सहायता प्राप्त करना तय हुआ है, जिसमें १५०० रुपये पहले ही मंजूर हो चुके हैं व शेष की मंजूरी की आशा है। यह सहायता उसी दशा में चालू रह सकेगी जबकि कार्य संतोषजनक रीति से चलता रहे।

प्रजामंडल के लिए भाई घनश्यामदासजी का उत्साह मालूम पड़ता है, इसलिए उनसे अच्छी सहायता मिल जाने की आशा है। बालिका विद्यालय में आपका व सीतारामजी का शुरू से ही उत्साह रहा है। इसलिए उसकी जिम्मेवारी आप दोनों पर स्वाभाविक रूप से है और आ भी जाती है। आप लोग स्वयं ही सारा बोझ उठायें, यह जरूरी नहीं। कलकत्ते के मित्रों से भी सहायता लें।

प्रजामंडल या राजस्थान-संघ का बोझ आपपर डालने का हमारा इरादा नहीं है। विद्यालय को अभी ५००० रुपये चाहिए। इसके लिए श्री हीरालालजी चिंतित हैं। वह यह भी महसूस करते हैं कि इस वर्ष आप विद्यालय का काफी बोझ उठा चुके हैं। आपपर और बोझ नहीं पड़ना चाहिए, इसलिए मित्रों से सहायता प्राप्त करने में यदि श्री रतनजी के यहां आने की आवश्यकता हो तो वह यहां आ सकती हैं।

जमनालाल बजाज

श्री दामोदरदास खंडेलवाल की ओर से—

: ६ :

बनारस,
४-२-३४

प्रियवर श्रीमान सेठ जमनालालजी,

मैं आपसे पूर्ण रूप से सहमत हूं कि छोटी-छोटी उपजातियों को तोड़कर ही विवाह करना उचित है। अगर हम लोग ही ऐसा न करेंगे तो दूसरों से कैसे आशा रखेंगे। परंतु मुझे अपने में और अपनी स्त्री में इस वक्त इतना बल नहीं मालूम पड़ रहा है कि यह करने में पीछे जो दिक्कतें पड़ेंगी, उन्हें हम आनंदपूर्वक सह सकेंगे। मेरे छह लड़कियां हैं। अन्य उपजाति के लोग अधिक संख्या में तैयार नहीं दीख रहे हैं। इसलिए मैं कृष्णा के सम्मुख और अपने परिवार में लोगों के सम्मुख इस प्रश्न को जोर के साथ नहीं रख रहा हूं। परन्तु कृष्णा की मरजी उपजाति में विवाह करने की होगी तो मैं सहर्ष अपनी पूर्ण सम्मति दे दूंगा।

दो उपयुक्त खंडेलवाल कुंवारे नवयुवक हैं—एक दिल्ली का और दूसरा इलाहाबाद का। बिना मेरे उद्योग के ही, स्वेच्छा से मेरे घर आये और बिना मेरे जोर दिये अपनी स्वीकृति दी। अगर कृष्णा इन दोनों में से किसी एक को सहर्ष स्वीकार कर ले और विवाह-संस्कार-संबंधी कुल शर्त्त लड़के की ओर से स्वीकार हो जाय तो मेरा कर्तव्य है कि मैं अपनी पूर्ण स्वीकृति दूं। शर्तें यही हैं कि कोई रीति, रकम, दान-दहेज, लेन-देन आदि एकदम नहीं। केवल वैदिक संस्कार हों। मैं समझता हूं कि आप मुझसे सहमत होंगे ?

भवदीय,
दामोदरदास खंडेलवाल

: ७ :

वनारस,
१३-२-३४

प्रियवर श्रीमान सेठ जमनालालजी,

आपने लिखा कि विवाह के अवसर पर आप न आ सकेंगे। ठीक है। मैं जानता हूं कि आप देश के कार्य में लगे हैं और मैं यह नहीं चाहता कि देश के कार्य की हानि करके आप आने का कष्ट उठावें। इसमें भी संदेह नहीं कि आपका ऐसे विवाह में सम्मिलित होना भी देश का ही कार्य होगा, क्योंकि आपकी उपस्थिति के कारण अद्भुत सुधार होते हुए यह नमूने का विवाह होगा और हमारी जाति में इससे और अच्छा सुधार होने की आशा होगी। इस नाते हम जोर से प्रार्थना करते हैं कि आपको आने का विचार मन में रखना चाहिए। आपको यह भी सूचित करते हर्ष होता है कि मैंने लड़केवालों से यह शर्त लगा दी है और उन्होंने स्वीकार भी की है, कि भारतवर्ष में कहीं भी जहां हम कहेंगे, वहीं उन्हें विवाह करने आना होगा। वर्धा-आश्रम के नाम का तो विशेष रूप से उल्लेख कर दिया है। जिस दिन वे आवेंगे उसी दिन विवाह कार्य करके वापस चले जायंगे। अगर आप यहां नहीं आ सकेंगे तो शायद हम लोग वर्धा आ जायंगे, या जहां-कहीं उस वक्त सुविधा हो। सवसे भारी वात तो यह है कि मैं पूज्य महात्माजी की उपस्थति चाहता हूं। यह भी सिर्फ सुधार कराने की दृष्टि से। या तो फिर विवाह उन दिनों में होगा जवकि पूज्य महात्माजी यहां अपने दौरे में आवेंगे, या वर्धा में होंगे। अगर यह सव सुविधा न हो सकेगी तो जहां पूज्य महात्माजी रहेंगे उसी स्थान में उनसे आज्ञा लेकर दोनों पक्ष के लोग वहीं आवेंगे। ये सव वातें वर-पक्ष से स्वीकृत हो गई हैं।

भवदीय,
दामोदरदास खंडेलवाल

श्री दामोदरदास खंडेलवाल के नाम–

: ८ :

वर्धा,

३०-१०-३५

प्रिय भाई दामोदरदासजी,

चि० राधाकृष्ण का संवंध पूज्य श्रीकृष्णदासजी जाजू की कन्या चि० अनसूया के साथ निश्चित हो गया है। समारंभ कल शाम को पूज्य बापूजी की उपस्थिति में अपने यहां हुआ है। अग्रवाल-माहेश्वरी का संवंध करने की मेरी वहुत दिनों की इच्छा अब पूरी हुई है, जिससे समाधान हुआ।

जमनालाल वजाज का वंदेमातरम्

सर गंगाराम की ओर से––

: ९ :

नागपुर,

२८-१-२७

प्रिय सेठ जमनालालजी,

मुझे दुःख है कि मेरे नागपुर छोड़ने से पहले मुझसे मिलने के वादे को आप निभा नहीं पाये। आप आसानी से दोपहर की गाड़ी से आकर उसी शाम को वापस जा सकते थे। लेकिन आपपर तो महात्माजी का जादू छाया हुआ है। मैं उन्हें बहुत ही कड़ा पत्र लिखनेवाला हूं!

विधवा पुनर्विवाह के वारे में अपने भाषण में आपने जो शब्द कहे, आशा है, आप उन्हें नहीं भूलेंगे और उनका असर अवश्य होगा। मैं इस वारे में आपसे सविस्तर बात करना चाहता था, किंतु आप आ नहीं

पाये और मुझे इस संबंध में आपकी राय से वंचित होकर ही जाना पड़ रहा है।

मैंने अपने सेक्रेटरी को निर्देश दे दिया है कि वह इस पुनीत कार्य के लिए आपको 'लाहौर विधवा-विवाह सहायक संस्था' की ओर से एक हजार रुपया भेज दें। मुझे आशा है, इस संबंध में सब बातें विस्तार से आप तय कर लेंगे। इस कार्य के लिए चाहे आप बाहर से दान लें अथवा अपनी जेब से दें, मैं सबकुछ आपपर ही छोड़े देता हूं। जब आप यह सब प्रबंध पूरा कर लें, तो कृपया मुझे लिखें।'[1]

आपका,
गंगाराम

श्री केशवदेव गनेडीवाल के नाम—

: १० :

वर्धा,
३१-१२-४१

प्रिय भाई केशवदेव,

तुम्हारा २९-१२ का पत्र मिला। हां, श्री केशवदेवजी से मैं तुम्हारे बारे में पूछ ताछ करता रहता हूं। इस बार अधिक चौकसी की थी। मेरी यह इच्छा तो सदैव बनी रहती है कि तुम खूब सुख व संतोष से रहो। मेरे मन में तुम्हारे प्रति प्रेम रहते हुए भी दुर्भाग्य से कुछ ऐसी घटनाएं बीच-बीच में होती गईं कि जिससे मैं तुम्हें अपने नजदीक, जितना चाहिए उतना, नहीं कर सका। खैर, मैं तुममें शक्ति भी देख रहा हूं। तुम्हारी शक्ति का देश या धर्म की सेवा में उपयोग हो तो तुम्हें तो उससे ठीक सुख

---

१ अंग्रेजी से अनूदित।

व समाधान मिलेगा ही, मुझे भी सुख मिलेगा। क्या तुम सट्टा नहीं छोड़ सकते? अगर सट्टा छोड़ सको तो कितना अच्छा हो। मेरी समझ में खर्च-पुरता तो तुम किसी भी उद्योग की एजेंसी वगैरा के काम में भी पैदा कर सकोगे। पूज्य श्री रामगोपालजी साहब से एक बार मैंने यह कहा था, जब वह तुम्हारी बहुत चिंता किया करते थे और तुम बालक थे, कि आप भाई केशवदेव की चिंता क्यों करते हैं, उसे मैं छोटे भाई के समान प्रेम करता रहूंगा। शायद उन्हींके पत्र के जवाब में मैंने यह लिखा भी था। बाद में कुछ अदूरदर्शी (कम सोचनेवाले) मित्रों के प्रताप से मेरी वह इच्छा पूरी न हो सकी, याने उनके जीवन-काल में ही जो उच्च कुटुंबी संबंध था वह एक प्रकार से टूट गया, यह तो तुम जानते ही हो। मेरे सामाजिक व राजनैतिक विचारों के कारण ही आस-पास के लोगों ने वह स्थिति पैदा कर दी थी; तथापि मैंने जो बात उन्हें कही थी या लिखी थी, उसकी जब कभी याद आ जाती है तब मुझे लगता है कि मुझे तो मेरा कर्तव्य पालन करते रहना चाहिए। खैर, मेरी इच्छा तो जबसे मैंने 'गो-सेवा-संघ' का काम अपने हाथ में लिया है व व्यापार से अपनेको अलग हटा लिया है तबसे यह हो रही है कि क्या भाई केशवदेव का मैं इस काम में उपयोग नहीं कर सकता? मेरे मन में तो यह भी विचार आते रहते हैं कि तुम कुटुंब-सहित मेरे पास वर्धा ही रहो तो कितना अच्छा रहे। यही सब बातें मन खोलकर तुमसे करने की इच्छा होने के कारण, तुम्हारा आना हो सके तो, तुम्हें यहां बुलवाया था। पीछे मालूम हुआ था कि श्री मनोहरदासजी भूरामलवाले तुमसे बहुत प्रेम-मुहब्बत रखते हैं, तब मैंने अपनी भावना को स्थगित कर दिया था। अगर तुम्हारा कुछ दिनों के लिए यहां आना संभव हो, और कुछ सेवा करने की वृत्ति भी तुम्हारे अंदर जैसी मुझे दीखती है वैसी तुम्हें भी दिखती हो तो, एक बार मेरे पास रहकर खुलासेवार बातचीत कर लेना ज्यादा ठीक रहेगा। तुम्हारे भोजन वगैरा की व्यवस्था तुम्हारी इच्छा के मुजब स्वतंत्र कर दी जायगी; परंतु या तो तुम्हारा आना अभी जल्दी हो जाय तो ठीक रहेगा, नहीं तो फिर २० ता. के बाद, ठीक रहेगा,

क्योंकि ता. १० से २० तक मैं यहां गड़बड़ में रहूंगा। मेहमान भी बहुत ज्यादा रहेंगे। वर्किंग कमेटी वगैरा का काम भी रहेगा। जैसा तुम ठीक समझो, लिखना। आशा है, तुम व घर के सब राजी होंगे। मेरा स्वास्थ्य ठीक है।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

श्री श्रीनारायण गनेडीवाल के नाम —

: ११ :

वर्धा,
२-५-३५

प्रिय श्री श्रीनारायणजी,

चि० गोविंदप्रसाद आज मेरे पास आया है। इसके पहले भी एक दो पत्र मुझसे मिलने के बारे में आये थे, परंतु मैं नहीं मिल सका। मैंने तो आज इसे १०-१२ वर्ष बाद शायद देखा है। इसके पत्र से व बातचीत से मालूम होता है कि इसकी सगाई जहां आपने की है, वह इसे पसंद नहीं है। यह कहता है कि इसने लड़की को हाल ही में देखा है। लड़की इसे पसंद नहीं है। यह दूसरा संबंध करना चाहता है। मैंने इसे कहा है कि तुम्हारा धर्म है कि तुम अपने माता-पिता को अपने मन का हाल सच्चाई व साफतौर से कह दो। लड़की के घरवालों को भी झूठी शर्म से इन्कार न करके विवाह करने के बाद लड़की से प्रेमपूर्वक व्यवहार नहीं रखोगे तो बड़ा अधर्म करोगे। उससे तो तुम्हें जीवनभर ईमानदारी के साथ प्रेम पूर्वक व्यवहार रखना ही होगा। जहांतक मैं इसका हृदय समझ पाया हूं, इसकी यह तैयारी नहीं है। मेरा आपका बहुत पुराना प्रेम का संबंध है। मैं आपसे आग्रहपूर्वक कहना चाहता हूं कि वर्तमान दशा में संकोच व शर्म में डालकर, आप यह विवाह करा देंगे तो बाद में ये लोग भी सुखी नहीं

होवेंगे, आपको भी दुःख उठाना पड़ेगा। आज अपने समाज के तीन उदाहरण मेरे सामने मौजूद हैं। मैं समझ सकता हूं कि सगाई छोड़ने में लड़कीवाले को व आपको दुःख जरूर पहुंचेगा, परंतु हम देखते हैं कि हमारे शर्म, प्रतिष्ठा व दुःख के डर के मारे, एक निरपराध लड़की को जो नहीं चाहता है, उसके साथ विवाह कराकर उसे आजन्म दुःखी करना—यह तो हमारे लिए अधर्म होगा। मेरी तो साफ राय है कि आप यह पत्र पहुंचते ही लड़कीवालों को सूचना कर दें। मैंने भी इसकी एक नकल लड़कीवालों के पास भिजवाई है। ज्यादा मैं क्या लिखूं? आप प्रेमपूर्वक गोविंदप्रसाद का हृदय समझ लेवें व उसका उचित व न्यायपूर्वक मार्ग निकालें।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

श्री रामदास गांधी की ओर से—

: १२ :

मुरब्बी श्री जमनालालजी,

पूज्य बापू का जो पत्र आया है, उसकी नकल इसके साथ है। मैं समझता हूं कि मेरे इस नये उद्योग के लिए बापू का पूरा आशीर्वाद है और सब मिलाकर हमारी या आपकी योजना उन्होंने पसंद की है। अब रुपयों की सुविधा आपको करनी है। कल मुंशीजी के यहां हो आया। उन्होंने कहा कि वह सलाहकार के रूप में नहीं रह सकते। कारण यह कि उन्हें अपने व्यवसाय से ही फुरसत नहीं मिल पायगी। और केवल नाम के सलाहकार वह रहना नहीं चाहते। गुजराती टाइप फाउंड्री के श्री धीरूभाई शाह को श्री मुनीमजी ने बुलाया था। उन्होंने भी कहा कि वह हमें काम नहीं दे सकेंगे। यों प्रसंगोपात्त सलाह आदि की सहायता दी जा सकेगी, वह देते रहेंगे। मुंशीजी कहते थे कि आपको तो श्री केशवदेवजी के

जिम्मे यह काम करना चाहिए। यह भी कहते थे कि आपने उनको यह सूचना कर ही दी होगी। मुझे ऐसा लगता है कि आपको कोई खास आपत्ति न हो तो यह सलाहकारवाली वात स्थगित कर दी जाय। प्रसंगोपात्त जरूरी सलाह वह देते ही रहेंगे।

मैं समझता हूं कि हम लोगों के बीच में भागीदारी का शर्तनामा (Deed of Partnership) हो जाना चाहिए। हममें से किसी एक को अलग होना हो तो वह किन शर्तों पर हो सकता है? प्रेस या इश्तिहार आदि का काम चलाने में हम लोगों में नीति-संबंधी मतभेद हो जाय तो क्या हो? इसके अलावा और जो महत्व की बातें हों वे सब देखकर दोनों का हित जिसमें सधे और दोनों पर अंकुश रहे, इस प्रकार का शर्तनामा हो।

भाई स्वामी की सलाह थी कि नया प्रेस लेना चाहिए। इसके बजाय श्री पाटिल यह पसंद करते हैं कि वर्तमान दवाखाने में से ही मिल सके तो कुछ भाग किराये पर लेकर काम शुरू करना चाहिए। मेरी राय तो फिलहाल प्रेस पर ही मुख्य ध्यान देने की है। योजना के दूसरे भाग इश्तिहार का जहांतक संबंध है, अभी उधर ध्यान नहीं देना चाहता। इसमें सुविधा यह है कि काम बंट जाता है।

आपके कान को अब आराम होगा।[१]

लि.
रामदास के प्रणाम

---

१. गुजराती से अनूदित।

श्रीमती लक्ष्मीबहन गांधी की ओर से —

: १३ :

बंगलोर,
८-९-२८

पूज्य जमनालालजी को लक्ष्मी के सादर प्रणाम!

मैं और नरसिंहन पूज्य अण्णा[1] (श्री राजगोपालाचारी) के साथ यहां आये हैं। हम सब कुशलपूर्वक हैं। अण्णा की तबीयत अब पहले की अपेक्षा अच्छी है और वह रोज आठ मील घूमते हैं।

हम सब हिंदी का अभ्यास रोज करते हैं। मैं आशा करती हूं कि अण्णा कुछ महीनों में ही आपको खत लिखने लग जायंगे। वह अब तुलसीदासजी का 'रामचरितमानस' पढ़ते हैं और शंकरलालजी के साथ रोज एक घंटा हिंदी में बातचीत करते हैं।

आपकी तबीयत आजकल कैसी रहती है? मैं समझती हूं, इस चिट्ठी में बहुत गल्तियां होंगी। कृपया उनको क्षमा कर दें।

भवदीया,
लक्ष्मी

: १४ :

मद्रास,
२०-८-३०

पूज्य श्री जमनालालजी,

आपका ता० १०-८-३० का प्रिय पत्र पढ़कर बहुत आनंद हुआ। मैं प्रति मास आपको यहां की सब खबरें भेजा करूंगी।

यहां हम सब अच्छे हैं। पापा रोज थोड़ा हिंदी का अभ्यास करती है। उसको मैं ही पढ़ाती हूं। श्री वरदाचारियार रंगून में ही हैं। उनकी प्रैक्टिस उतनी अच्छी नहीं है। उत्तर भारत में उनको कोई नौकरी मिल

---

१. बड़ी बहन।

जाय तो वह बहुत खुश होंगे। हम लोगों ने उनको आपका संदेश भेज दिया है।

आजकल मीराबहन यहांपर आई हुई हैं । मैं उनसे नहीं मिली, पर उनके व्याख्यानों को अखबार में पढ़ती हूं । यहां भी अन्य प्रांतों की तरह काम चल रहा है। रोज सत्याग्रही लोग जेल जाते रहते हैं। हमारे आश्रम का काम भी ठीक चल रहा है।

हम सब अच्छे हैं। हमें किसी प्रकार का कष्ट नहीं है। मैं हमेशा की तरह अब भी हँसती रहती हूं। मुझे देश-सेवा करने की इच्छा तो बहुत है, मगर बाहर जाकर प्रचार करने के लिए किसी प्रकार की शक्ति मुझमें नहीं है। यह लिखते हुए मुझे बहुत लज्जा मालूम होती है।

पूज्य अण्णा को लिखते समय आपका संदेश उन्हें भेज दूंगी। कृष्ण-स्वामी और पापा आपको अपने प्रणाम भेजते हैं।

भाई सुरेंद्रजी क्या आपके साथ ही हैं? कृपा करके उनको प्रमाण-पत्र के लिए मेरा धन्यवाद कह दें।

लक्ष्मी के प्रणाम

श्री घनश्यामदास गुप्त की ओर से श्रीमती जानकीदेवी बजाज के नाम—

: १५ :

कोटा,

१३-१२-३३

श्रीमती मामीजी साहब को घनश्यामदास का प्रणाम मालम हो । यहां सब कुशल हैं, परमात्मा से आपकी कुशल सदैव चाहते हैं । पोस्टकार्ड आपका आया। उत्तर देने में कुछ देर हुई, क्षमा करें।

चि० कमलाबाई के संबंध के विषय में आपने श्री सेठ जमनालालजी साहब को लिखने को कहा, सो ठीक है। परंतु सेठसाहब आजकल इधर-उधर भ्रमण कर रहे हैं। मेरा पत्र उनके पास समय पर नहीं पहुंचेगा। इसलिए आप ही इस पत्र को कृपा करके उनके पास, जहां वह आजकल हों, भिजवा देवें। आशा है, श्री सेठसाहब अवश्य कृपा करके योग्य वर मिला देंगे।

मेरा गोत्र गोयल है। मेरी इच्छा है कि बीसे अग्रवाल का शिक्षित व अच्छी स्थिति के परिवार का शिक्षित सुशील लड़का मिले। कन्या की आयु १४ वर्ष की है। इसलिए लड़के की आयु १९ से २२ साल तक होनी चाहिए। स्वास्थ्य बहुत अच्छा होना आवश्यक है। विवाह जितनी सादगी व जिस तरह से वह चाहेंगे, हो सकेगा। इसमें कोई आपत्ति नहीं होगी। विदेशी कपड़े का कोई लेनदेन नहीं होगा। किसी प्रकार की कुरीति नहीं हो सकेगी। मैं स्वयं यहां वैश्य-सुधारक-मंडल का सभापति हूं। विवाह मैं आदर्श रीति से करना चाहता हूं, परंतु दूसरी पार्टी ऐसी भावनावाली हो जब काम चले। कन्या पांचवीं कक्षा पास है। गृह-कार्य सब कर सकती है। जाति-पांति तोड़ने के लिए मैं अभी तैयार नहीं हूं। फतेहपुर अग्रवाल महासभा के अवसर पर मैंने सेठसाहब के दर्शन किये थे। वह एक दफा कोटा भी पधारे थे, परंतु मैं दौरे में था। यदि उनकी निगाह में कोई अच्छे घराने का लड़का हो तो मैं उनसे जहां वह चाहेंगे रूबरू मिल लूंगा। वह कृपा करके मुझे लिख देने का कष्ट उठावें।

योग्य सेवा लिखती रहें।

आपका,
घनश्यामदास गुप्त

पुनश्च :

जन्म-पत्री मिलाने की मैं कोई आवश्यकता नहीं समझता। यदि वह चाहें तो मुझे आपत्ति भी नहीं। कन्या का फोटो वह चाहेंगे तो भेज दूंगा।

श्री घनश्यामसिंह गुप्त की ओर से—

: १६ :

दुर्ग,
३१-१-३४

मान्यवर,

सादर नमस्ते।

रायपुर में आपसे एक निजी कार्य के संबंध में मैंने निवेदन किया था। आशा है, आपको स्मरण होगा। मुझे व विशेषकर मेरी धर्मपत्नी को इसकी बड़ी ही चिंता है। मेरी लड़की, जो काशी विश्वविद्यालय में बी० एस-सी० पढ़ रही है, उसके लिए योग्य घर व वर की तलाश में हम बहुत ही चितातुर हैं। यदि आपके द्वारा हमारी यह चिंता दूर हो सके तो हम उपकृत होंगे। आशा है, आप हमारी (मेरी व मेरी धर्मपत्नी की) चिंता को कम-से-कम कुछ अंश में अपनी चिंता बनावेंगे।

आपको कदाचित मालूम होगा कि मैं दसा अग्रवाल वैश्य हूं। गोत्र गोयल है। परंतु योग्य घर और वर मिलने पर मुझे वैश्यों की किसी उप-जाति में देने में उज्र न होगा। वर-कन्या की सम्मति आवश्यक होगी।

यहां के खादी-निर्माण के विषय में भी आपसे निवेदन किया था। उस बात से पूरी जानकारी रखनेवाले सज्जन बाहर गये थे। उनके आने पर आपकी सेवा में विवरण भेजने का प्रयत्न करूंगा।

पत्रोत्तर देने की कृपा करें।

भवदीय,
घनश्यामसिंह गुप्त

: १७ :

बनारस,
१२-३-३४

परम मान्य जमनालालजी,

मैं उपकृत हूं कि आप मेरी चिंता को भूले नहीं हैं और यहांतक आकर

मेरी पुत्री से महिलाश्रम में मिलने का कष्ट आपने उठाया। परमात्मा की असीम कृपा से आपके द्वारा यह मेरी चिंता हल हो सके तो मैं अपनेको भाग्यवान समझूंगा।

मैं अनुमान करता हूं कि आप कुछ दिन बिहार की ओर रहनेवाले हैं। वहां भी वैश्यों के अच्छे-अच्छे परिवार हैं, ऐसा सुना है। यद्यपि यह बिहार के लिए महासंकट[1] का समय है और ऐसे समय में शादी-विवाह की बात वहां सोचना असंगत होगा, तथापि "आरत काह न करै कुकर्मू," "चिंतातुराणां न स्थानं न समयः" वाली बात मुझपर घटती है। इसलिए मैं आपसे यह प्रार्थना करने की धृष्टता करता हूं कि यदि ऐसा प्रसंग आवे तो आप ध्यान रखेंगे।

राजेंद्रबाबू तो दिन-रात व्यस्त हैं। तथापि यदि उनसे भी जिक्र करने का आपको मौका मिल सकता तो बड़ा अच्छा होता।

भवदीय,
घनश्यामसिंह गुप्त

: १८ :

दुर्ग,
३०-९-४१

मान्यवर भाई जमनालालजी,

सादर नमस्ते।

आपका पत्र चि० धर्मपाल के नाम प्राप्त हुआ। उसके बीमार होने से पत्रोत्तर में देरी हुई, क्षमा करें। आपका स्वास्थ्य नरम जानकर चिंता हुई। आशा है, अब आप पूर्ण स्वस्थ होंगे। मेरी बड़ी लड़की और उसकी माता की अस्वस्थता के कारण मुझे नागपुर से यहां भाग आना पड़ा। वे अब अच्छे हैं। मैं पहले से कुछ अच्छा हूं, परंतु कमजोरी बहुत है।

---

१. यह बिहार-भूकंप के समय की बात है।

परम पूज्य बापू के तथा आपके दर्शनों के लिए मुझे वर्धा आना ही है। परंतु कछ समय लगेगा। आप वर्धा कबतक रहेंगे, कृपया सूचित करें। यदि श्री ठाकुरदासजी किशनलालजी बंग का कहीं तय न हुआ हो, तो मैं आपसे प्रार्थना करूंगा कि कम-से-कम मेरे आने तक उनका कहीं पक्का न होवे। चि० सुशीला पहले से अब बहुत अच्छी है। मुझे विश्वास होता है—और उसे तो निश्चय है—कि वह शीघ्र पूर्ण स्वस्थ हो जायगी। चिकित्सा-क्रम का अक्षरशः पालन कर रही है। हमें (दोनों को) पूरा विश्वास है कि हमारी इन चिंताओं की आपको फिक्र है। इससे हमें संतोष मिलता है। इन चिंताओं ने हमें कुछ आतुर कर दिया है, यह तो आप जानते ही हैं। जितनी जल्दी हो मैं योग्य रीति से मुक्त होना चाहता हूं।

शेष ईश्वर की कृपा से सब कुशल है। शकुन्तला की माता व बच्चे—(शकुन्तला, सुशीला, धर्मपाल आदि) आपको सादर नमस्ते कहते हैं। पूज्य बापू को मेरा साष्टांग प्रणाम कहें, जब कभी आप उनसे मिलें। उनका आदेश है कि मैं अपने स्वास्थ्य के बारे में उनको सूचित करता रहा करूं, इसलिए समय-समय पर पत्र लिखकर उनका समय लेने का साहस करता हूं। मैं तो सदा चाहता हूं कि उनका कम-से-कम समय लिया जाय।

भवदीय,
घनश्यामसिंह गुप्त

श्री परमेश्वरीप्रसाद गुप्त की ओर से—

: १९ :

गाजियाबाद
गोपाष्टमी १९९८
(२७-१०-४१)

पूज्य भाईजी,

प्रणाम !

अभी तक मैं गो-सेवा-संघ का एक भी सदस्य नहीं वना सका हूं। जिसको कहता हूं वह यह कहता है कि भाई हमें तो भैंस का भी दूध-घी नहीं मिलता, गाय का तो दूर रहा। यद्यपि यही कारण है जिसकी वजह से उन्हें सदस्य वनना चाहिए, परन्तु उनकी समझ में नहीं आता। आज गोपाष्टमी भी है, इसके लिए प्रयत्न कर रहा हूं।

मेरी रुचि इस ओर वढ़ती जा रही है। तवीयत यह करती है कि कमर कसकर गो-सेवा के कार्य में लग जाऊं। अभी कौटुम्बिक झंझटें ज्यों-की-त्यों हैं। पिताजी की तवीयत दीवाली से पहले कुछ खराव हो गई थी, इसलिए काम आगे नहीं बढ़ा। अभी तक उनसे तथा अन्य लोगों से अपनी इच्छा भी मैंने प्रकट नहीं की है, क्योंकि मैं भी पूरी तरह कुछ निश्चय नहीं कर पाया था। अवकी मैं इस कार्य में लगने के वाद फिर वापस नहीं हटना चाहता। इस संवंध में मेरी आपसे एक प्रार्थना है कि आप पूज्य बापूजी से मेरी सव स्थिति कह दीजिए और आपके जो प्रस्ताव हैं वे भी उन्हें वता दीजिए ताकि उनकी राय क्या है यह मालूम हो जाय। इससे मुझे बड़ी मदद मिलेगी।

भाई सरयूप्रसादजी से भी आगरा-जेल में मिल आया हूं। वह बड़े उत्सुक हैं कि श्री ठाकुरलालजी से उनकी भतीजी का सम्वन्ध हो। लड़की और लड़के के संवंध में उनसे खूव वातें हुईं। लड़का उनको पसन्द है।

लड़की के विषय में उनका कहना है कि लड़की जैसी श्री ठाकुरलालजी चाहते हैं वैसी ही है। लड़की बहुत खूबसूरत नहीं है। वैसे शक्ल-सूरत से बिलकुल ठीक है, चुस्त, शील-स्वभाव, संयमी तथा सेवा-कार्य में रुचि रखनेवाली है। उन्हें लड़की को वर्धा भेजने में कोई अड़चन नहीं है। सिर्फ उनके बड़े भाईसाहब ज़रा हिचक रहे हैं। मैंने उनको भी समझाया है कि श्री ठाकुरलालजी की रुचि लड़की के गुणों, स्वभाव तथा उनके सेवा-कार्य में मदद की ओर विशेष रूप से है और उनका विश्वास पूज्य जमनालालजी में इतना है कि इस संबंध की सब बात उन्होंने उनके ऊपर ही छोड़ दी है। इसलिए जमनालालजी जबतक लड़की से खुद बातचीत न कर लें तबतक किसी प्रकार कोई बात निश्चय करें। सरयूप्रसादजी के भाईसाहब का यह ख्याल था कि आजकल के नौजवानों का ख्याल विशेषकर खूबसूरती की ओर ही होता है और इसलिए सम्बन्ध पक्का करने के पहले लड़की को देखना चाहते हैं। इसके लिये वर्धा भेजने की क्या आवश्यकता है? श्री ठाकुरलालजी यहां आकर लड़की को देख सकते हैं। अब सरयूप्रसादजी उनको लिख रहे हैं कि लड़की को वर्धा भेजने में कोई अड़चन नहीं होनी चाहिए। उनका जवाब आते ही आपको लिखूंगा।

आपका सेवक,
परमेश्वरी

श्री परमेश्वरीप्रसाद गुप्त के नाम—

: २० :

१-११-४१

प्रिय परमेश्वरी,

तुम्हारा गोपाष्टमी का पत्र मिला। तुमने लिखा, तुम्हारी रुचि गो-सेवा के कार्य की ओर बढ़ती जा रही है, 'तबीयत यह करती है कि कमर कस-कर गो-सेवा के कार्य में लग जाऊं,' आदि पढ़कर मुझे खुशी हुई। पूज्य बापूजी को भी कल तुम्हारा पत्र पढ़ाया था। उनकी साफतौर से इच्छा व एक प्रकार से आशा भी है कि तुम्हें पूरी शक्ति, तन-मन से मेरे साथ गो-सेवा के काम में लग जाना चाहिए। उनकी यह भी राय है कि मेरे साथ तुम्हारा ठीक जम सकेगा, क्योंकि मेरा प्रेम तो तुम्हारे प्रति है ही। बापू-जी भली प्रकार जानते ही हैं। वह यह भी समझते हैं कि तुम्हारे स्वभाव में जो थोड़ी-बहुत जिद या अव्यावहारिकता दिखाई देती है, वह भी मेरे साथ काम करने से निकल जायगी। इतनी सब बातें कल खुलकर उनसे नहीं हुई हैं, परंतु समय-समय पर तुम्हारे बारे में बातें होती रहीं, उसका यह सारांश है। वह (बापूजी) तुम्हें इस काम के लिए उपयोगी तो समझते ही हैं। अब तुम अपने बारे में जल्दी निश्चय कर सको तो शुरू से ही कार्य जमाने में सुभीता रहेगा। व्रत का नियम भी ढीला कर दिया है। विधान में भी मित्रों की सूचना के अनुसार थोड़ा फरक किया है। तैयार होने पर तुम्हें भेज दिया जायगा।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

श्री गौरीशंकर गोयनका के नाम—

: २१ :

वर्धा,
मार्ग० कृ० ६।८५
(दिसंबर १९२८)

प्रिय भाई गौरीशंकरजी,

मेरे एवं मुरलीधरजी के तार के बदले में आपने मेरे नाम से जो तार दिया सो मिला। श्री मुरलीधरजी चोखानी मुझे गुरुवार व शुक्रवार को मिले थे। उन्होंने कहा था कि श्री तुलारामजी साहब की इच्छा १,३४,०००) श्री गुलाबरायजी गोविन्दराम, अकोलावालों को अकोला के कारखानों पर देने का विचार है। आपका विचार, यदि मेरे भी जंच जावे तो, ट्रस्ट फंड के लिए कारखाने मोल मिल सकें तो ले लेने का है। उसपर मैंने विचार किया। श्री श्रीरामजी गोयनका को भी श्री मुरलीधरजी ने तार देकर यहां बुलवा लिया था। उनसे भी सारी परिस्थिति समझी। उसपर से मेरी और श्री मुरलीधरजी की राय यह हुई कि ट्रस्ट फंड के लिए कारखाने खरीदने की अपेक्षा निम्नलिखित कारणों से मार्ट-गेज रखना ज्यादा ठीक रहेगा।

१. ट्रस्ट की ओर से खरीदने में कारखाने चलाने, खरीदी आदि करने तथा अन्य व्यवस्था करने में मुझे अधिक लाभ दिखाई नहीं देता।

२. आपकी समझ है कि कारखानों में प्रति साल ५० हजार रुपये का फायदा होगा। मेरी राय है कि इतना लाभ होना संभव नहीं है और हम लोग कारखाने चलावेंगे तो लाभ की संभावना और भी कम होगी।

ट्रस्ट की ओर से कारखाने मार्टगेज पर रखे जाने पर इस प्रकार लाभ दिखाई देते हैं—

१. कारखानों की आज की कीमत से हम आधी कीमत में गहन रखते हैं।

२. ब्याज ।।।) बारह आना हमेशा आ सकेगा।

३. मार्टगेज में कारखानों के सिवाय उनकी अन्य जायदाद व स्टेट पर भी ट्रस्ट का अधिकार रहेगा।

४. जायदाद ज्यादा होने के कारण रुपया वसूल करने के लिए कोर्ट में जाने की जरूरत शायद कम पड़े, क्योंकि लिखा-पढ़ी बरावर कायदे के अनुसार कराई जाय तो कोर्ट में जाने से श्री गुलावरायजी गोविन्दराम वालों को ही सब प्रकार से हानि उठानी पड़ेगी। ट्रस्ट की अधिक नुकसानी होने का डर नहीं दीखता। लिखा-पढ़ी में पंचों के मार्फत निकाल होकर डिग्री मिल जावे, ऐसी शर्त भी डाली जा सकेगी।

५. यदि मान लिया जाय कि कोर्ट में भी जाना पड़े तो भी जहांतक परिस्थिति देखी जाती है अधिक हानि श्री गुलाबराय गोविन्दराम को ही होगी। ट्रस्ट की रकम व ब्याज न मिलने का डर नहीं दीखता। यह बात हो सकती है कि रकम आगे-पीछे देरी से मिले।

उपरोक्त सब कारणों से कारखाने खरीदने की अपेक्षा मार्टगेज पर रखना ही मुझे ठीक मालूम होता है। आशा है, आप इसपर विचार करेंगे और जैसा ठीक समझें वैसा श्री मुरलीधरजी को लिख देंगे।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

श्री गौरीशंकर गोयनका की ओर से----

: २२ :

ज्ञानवापी-काशी,
माघ कृष्ण ४।१९८७
(दिसंबर १९३०)

प्रिय भाई जमनालाल,

सप्रेम जय श्रीकृष्ण। श्री साहजी वृद्धिचन्दजी द्वारा आपके पत्र की नकल मिली, बड़ा हर्ष हुआ।

भाई ! आपने मुझे बहुत ऊंचे शब्दों में सम्बोधित किया है, किन्तु जैसा आपका चरित्र, त्याग सहिष्णुता है इसको विचारकर जब अपनी ओर देखता हूं तो लज्जा से सिर नीचा हो जाता है। भाई ! मेरा जन्म तो वृथा ही जा रहा है। देखिये, अबतक मेरे मन से वासना नहीं निकली, कर्तव्य का बोझ नहीं हटा। सांसारिक सुविधाएं देखते-देखते ही इतनी आयु चली गई।

'रमा विलास राम अनुरागी, तजत वमन इव नर बड़ भागी।' भाई ! क्या कोई पथिक मार्ग में वमनकर फिर उस वमन के सदुपयोग के निमित्त श्वान-काकादि को भी बुलाता है ? वह तो नाक सिकोड़कर चल देता है। पर मैं तो इसी वमन के सदुपयोग में लगा हूं। तब राम-अनुराग कहां। भाई ! सत्य समझिये, जैसे स्नेह से छल छोड़कर सांसारिक विषय और विषयी पुरुषों से सम्बन्ध रहता है, क्या कभी वैसी प्रीति भगवज्जनों में भी हुई है ? फिर राम-अनुराग कैसे हो ? भाई ! मैंने तो यदि कभी भगवन्स्मरण किया है, तो देह, इन्द्रिय, मन और इनके सम्बन्धी जन और पदार्थों की तृप्ति-पूर्ति के लिए ही। कभी भगवच्चरणारविंद में इन सबको अर्पण नहीं किया, तब राम-अनुराग कहां ? जिस परमपद की प्राप्ति के लिए राज्यादि विपुल ऐश्वर्य को तिलांजलि दे, बड़भागी महापुरुष महात्माओं की शरण ले अपने ध्येय को प्राप्त करते हैं, यदि मुझमें कुछ भी शक्ति होती तो, हाय ! इस तुच्छ स्वराज्य के लिए आप सदृश सद्गुण-संपन्न धीर, वीर, बालमित्र को जेल-यातना भोगने देता, या ऐसी स्थिति भी उत्पन्न होने देता कि मैं आपके साथ बैठकर भोजन तक न कर सकूं ! भाई ! मैं क्या लिखूं। जब भगवत्कृपा की तरफ विचार करता हूं कि ऐसे गुरु मिले, ऐसी माता से जन्म लिया, घर के लोग ऐसे मिले, आप सरीखे मित्र ऐसे मिले, तब बड़ी आशा होती है, किन्तु मेरी यह दशा कि चमड़ी-दमड़ी में ही रत हूं, जब अपनी ओर देखता हूं तो धैर्य नहीं होता है। अन्त में निराश हो इस भगवान की मोक्षपुरी में आया हूं जहां ऊंच-नीच का विचार नहीं, सबको एक सरीखा सदाव्रत मिलता है, अब भिक्षुक बनने

के अतिरिक्त और कोई गति नहीं है, इसपर भी वाहर जाने का प्रसंग छूटता नहीं है। क्या लिखा जाय, गीता में पढ़ा है—

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढ़ानि मायया॥

यह भाव भी ठीक जंचते नहीं। अपनी बुद्धि से कुछ-न-कुछ कल्पना होती ही रहती है, मैं तो आपके दयायुक्त संकल्प का पात्र हूं। अच्छा! अव लिखिये कि आपका स्वास्थ्य, मन, कैसा रहता है? पुस्तकें पढ़ने को मिलती हैं क्या? भोजन एक समय है अथवा दोनों समय? वस्त्रादि तो अपने घर के ही होंगे। एकांत में आत्म-स्थिति का अभ्यास अथवा नाम जपादि का अवसर अच्छा मिलता होगा? चित्त कष्ट अनुभव करता है अथवा आनन्द मानता है? समयानुसार पत्र देना।

भवदीय,
गौरीशंकर गोयनका

: २३ :

प्रिय भाई जमनालालजी,

जय श्रीकृष्ण। उपयुक्त निर्णय मैं भी सुनना चाहता हूं, कृपया एक कापी मुझे भी उक्त पते पर भेजियेगा। साथ ही, यह भी लिखना चाहता हूं कि जिस समय यह पत्र पूज्यपाद श्री १०८ श्री महाराजजी ने लिखाया था, उस समय यह भी कहा था कि यदि काशी विश्वनाथजी के मंदिर में अछूत प्रवेश कर सकें तो मैं श्री विश्वनाथजी के मंदिर में नहीं जाऊंगा। श्री महाराजजी आगामी मंगलवार को नौका पर कर्णवास के समीप जानेवाले हैं। मेरा विचार अभी यहां रहने का है। मेरा शरीर यहां अच्छा है। आशा है, आप प्रसन्न होंगे। बच्चे सब प्रसन्न होंगे।

भवदीय,
गौरीशंकर गोयनका

श्री रतनलाल गोयनका की ओर से—

: २४ :

घोसरी,
१२-२-३५

श्रद्धेय भाईसाहब,

सादर प्रणाम ! भाईजी रंगलालजी के पत्र की नकल पढ़कर मेरा मन स्वच्छ हो गया। मेरी आपत्ति यही थी कि फैसले के समय जापान कंपनी के रहन की बात छिपाई गई थी। जापानवालों से अभी तक नहीं निपटा और विना निपटे बेनामा हो नहीं सकता, तब किसका दोष है। जापान-वालों को कुछ देकर रहन हटाने की बात है, वह रुपया वास्तव में उन्हें देना चाहिए। भाईजी श्री रंगलालजी स्वीकार भी करते हैं, तब विशेष झगड़े की बात तो कोई है नहीं। आपकी तबीयत ठीक होने पर कष्ट करके, मुझे क्या करना है, आज्ञा दीजिये, जिससे अदालत में बिना गये बेनामा हो जाय तथा शेष जायदाद का दखल मिल जाय।

आपके कष्ट करने पर उभय पक्ष संतुष्ट होंगे, ऐसा मेरा विश्वास है तथा कार्य भी हो जायगा।

मुझे पूरी आशा है कि आप इन झगड़ों को बहुत सुगमता से निपटा सकेंगे।

रतनलाल

: २५ :

घोसरी,
२८-१२-३८

श्रद्धेय भाईसाहब,

सादर प्रणाम ! आज एक कष्ट दे रहा हूं। शुकदेवदासजी रामप्रसाद के फर्म का जो मिल के साथ झगड़ा था, आपने तथा श्री जाजूजी ने कई बार श्रमपूर्वक निपटाया, उसका एकमात्र यही प्रयोजन हुआ कि हम लोग व्यर्थ ही अदालत में जाकर समय तथा द्रव्य नष्ट करने से बच गए। आपके

निपटाये झगड़े में से थोड़ा-सा निपटना शेष रह गया है। वह शायद जल्दी निपट जाय, ऐसी आशा है। अब उसी फर्म के साथ ऐसी समस्या उपस्थित हो गई है कि अदालत में जाना अनिवार्य प्रतीत होता है। यदि आपने इस ओर ध्यान नहीं दिया तो हारकर अदालत में जाना पड़ेगा और पहले का भी सब किया-कराया मिट्टी में मिल जायगा। जगत में हँसी होगी और आपको भी बुरा लगेगा। अतः यदि आप उचित समझें तो मेरी प्रार्थना है कि आप इस ओर अवश्य ध्यान दें और दोनों को अदालत देखने से बचायें।

रतनलाल

श्री रंगलाल जाजोदिया की ओर से—

: २६ :

कलकत्ता,
१०-११-२३

प्रियवर भाई जमनालालजी,
सप्रेम वन्देमातरम्।

आपका कृपापत्र २३-१०-२३ का समय पर मिला, पर मैं उसी दिन अपनी पत्नी से, जो कि आजकल वैद्यनाथजी वायुपरिवर्तन करने गई हुई हैं, मिलने को वहां चला गया था। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपको कोई रोग नहीं है। थोड़ा विश्राम करने से कमजोरी स्वयं दूर हो जायगी।

हाथरस का सम्मेलन बड़ी सफलता से समाप्त हो गया है, यह बात आपको समाचारपत्रों से मालूम हो गई होगी। जैसा आपने समाचारपत्रों में पढ़ा होगा महासभा का अधिवेशन कानपुर में आमंत्रित हुआ है। इस काम में श्रीमान सेठ कमलापतिजी सिंहानिया विशेष उत्साह से कार्य कर रहे हैं। इनको महासभा से प्रेम हुआ है। इसमें मुख्य हाथ श्री रामकुमार नेवटिया का है। अभी जैसा उत्साह उनमें है यदि उसी तरह का उत्साह रहा तो यह अधिवेशन बहुत अच्छा रहेगा। विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है

कि उन लोगों ने प्राय: २०००० रुपये का चंदा लिखवा लिया है। स्वागत-कारिणी सभा का संगठन भी हो गया है। सभापति श्री कमलापतिजी सिंहानिया और मंत्री बावू रामकुमारजी नेवटिया हुए हैं। चुनाव वहुत ही उपयुक्त हुआ है।

कानपुरवालों की इच्छा है कि इस वार वहुत ही योग्य व्यक्ति सभापति वनाये जायं। उनका इशारा श्री हरीरामजी गोयनका, रामनारायणजी रुइय्या, आनन्दीलालजी पोद्दार, सीतारामजी की ओर विशेष है। हरीरामजी के वारे में मैं इधर चेष्टा करूंगा। आप उधर श्री रुइय्याजी और श्री पोद्दारजी से अनुरोध कीजियेगा अथवा और किसीको आप उपयुक्त समझें, उसके लिए चेष्टा करें। पिछले समय इस कार्य के लिए प्राय: ऐन समय पर ही प्रयत्न किया गया था, इसलिए चुनाव योग्य हुआ, इसमें बहुतों को संदेह है। अत: यदि हम अभी से प्रयत्न करें तो कार्य संतोषजनक होगा।

कानपुर में संगठन के लिए एक-दो महीने पहले जाने की आवश्यकता वतलाई सो ठीक है। समय पर प्रयत्न किया जायगा।

महासभा के उपदेशकों के वारे में पूरा हाल भाई तुलसीराम आपको लिखेंगे। उनसे इस वारे में कह दिया गया है।

वाई अन्नपूर्णा गत आश्विन मास में १२ वर्ष की हो गई थी। अब उनको १३ वां वर्ष चल रहा है। बंवई में मैंने जो ५१०० रुपये देने का वचन दिया था, वे मैं बहुत पहले ही एक साथ पं० किशोरीलालजी को १९-४-२३ को एक चैक मरकंटाइल बैंक का नं० ई०६०९२६४ का आपके नाम का दिया था। शायद १०००) देने के संवंध में आपने भ्रम से लिखा है। कृपाकर इसकी जांच करके निश्चय कर लीजियेगा। मुझे भी इसकी सूचना दीजियेगा। मैं आपकी सूचना की राह व्यग्रता से देख रहा हूं।

यहां सब मित्र प्रसन्नता से हैं। समय-समय पर पत्र देकर कृतार्थ करें। क्या आपकी कुछ दिनों में अथवा वाद में इधर आने की संभावना है?

आपका प्रिय,

रंगलाल जाजोदिया

: २७ :

कलकत्ता,
२०-८-२८

श्रीमान भाई जमनालालजी,

सप्रेम वन्दे! परसों एक पत्र आपको लिखा था, वह मिला होगा। उसमें साधुरामजी तुलसीरामजी और हमारे झमेले को निपटाने के लिए दोनों की तरफ से आपको पंच मान लेने की बात लिखी थी। अब आप यथा-शीघ्र यहां आने का प्रबंध कर लें।

एक बात और है, जिसके लिए आपका आना बहुत जरूरी हो गया है। हमारे घर में भी अब कलह होने की बड़ी संभावना हो गई है। हम लोग पृथक् तो होंगे ही, पर हमारे में से दो-एक के मन बहुत खराब हो रहे हैं। अतः यदि आप-जैसा कोई सज्जन बीच-बचाव नहीं करेगा तो सारा मामला अदालत तक चला जाय तो कोई आश्चर्य नहीं। ऐसी स्थिति में आपका यहां आना अत्यंत आवश्यक है। आपपर सबकी श्रद्धा है, इसलिए आपकी बातों को सब मान लेंगे, मेरा ऐसा विश्वास है। जहांतक मैं समझ सका हूं, हमारे परिवार में कोई झगड़ने-जैसी बात नहीं है। परंतु समय और कम समझ की वजह से झगड़ा होना संभव है। तुलारामजी और हमारी लिखा-पढ़ी तैयार हो गई है। परसों सही होकर आपको भेज दी जायगी।

पत्रोत्तर में कृपाकर आप ही आ जाइये।

आपका स्नेही,
रंगलाल जाजोदिया

जाजोदिया कॉटन मिल्स, कलकत्ता के आर्बिट्रेशन के बारे में—

: २८ :

स्थान—श्री राधाकृष्ण कॉटन मिल नंबर १
तारीख—२०-९-२८, गुरुवार।
समय—शाम को पांच बजे।
उपस्थित :

श्रीयुत तुलारामजी गोयनका
" गौरीशंकरजी "
" मन्नालालजी "
" रतनलालजी "
" रंगललजी जजोदिया
" माणकलालजी "
" वलदेवदासजी झुंझुनवाला, लिक्विडेटर
" अमरचंदजी पुंगलिया भी उपस्थित थे।

पूर्वसूचित किये अनुसार पंचायत-फैसला, उपस्थित सभी पार्टियों को, आर्बिट्रेटर ने पढ़कर सुनाया और कोर्ट में न जाकर वाहर ही अपने झगड़ों का आपस में ही निपटारा करने में क्या-क्या लाभ हैं, उनपर विवेचन करते हुए एवं इस पंचायतों की कार्यवाही में यदि किसी पार्टी के प्रति कुछ कटु शब्दों का प्रयोग किया गया हो तो क्षमा प्रार्थना करते हुए आर्विट्रेटर ने पंचायती का यह कार्य सफलतापूर्वक संपन्न किया। उत्तर में सभी पार्टियों ने धन्यवाद प्रकट किया और यह कार्यवाही समाप्त हुई।

जमनालाल वजाज
२०-९-२८

श्री रंगलाल जाजोदिया के नाम—

: २९ :

बनारस,
१२-८-२९

प्रिय भाई रंगलालजी,

पत्र आपका मुझे यहांपर मिला। अबकी बार भी रुपये भिजवाने में हुई देरी का कारण आपने लिखा, सो मालूम हुआ। इस बारे में मैं अब क्या लिखूं। मेरी समझ से तो आप अधिक कड़ाई से काम लेंगे तो ही मेरा खाता साफ होना संभव है, नहीं तो इस प्रकार की स्थिति देखते हुए यह मामला जल्दी निपटे, इसका मुझे विश्वास नहीं होता। थोड़ी-थोड़ी रकम भी यदि मासिक दर से भिजवाई होती तो आज बहुत-सा खाता कम हो जाता। आपका यह मामला तथा और थोड़े मामलों के अनुभव से यह निश्चय करना पड़ेगा कि जहां मित्रता व प्रेम का संबंध हो वहां लेन-देन नहीं करना चाहिए। मैं बंबई जा रहा हूं। श्री केशवदेवजी से गहने बेच देने की कोशिश करने को कह दूंगा। भाई श्री गौरीशंकरजी गोयनका से बात हुई थी। संभव है, आप लोगों का मामला आपस में पंच द्वारा निपट जाय।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

श्री फतेहचंद झुंझुनवाला के नाम—

: ३० :

वर्धा,
२५-६-३७

प्रिय फतेहचंद,

तुम्हारा २२-६-३७ का पत्र मिला। तुम्हारे पत्र से थोड़ी चिंता तो अवश्य कम होती है, पर मैं चाहता हूं कि तुम अधिक हिम्मत से काम लो तथा

श्री पालीरामजी को पूरी तरह से धैर्य और हिम्मत दिया करो। संसार में कठिनाइयां इसीलिए आती हैं कि मनुष्य उनका धैर्यपूर्वक सामना करे, खासकर उन बातों पर जिनपर उसका वश नहीं चल सकता। ऐसी परिस्थिति में संतोष धारण करने के अतिरिक्त और क्या कर सकते हैं? मनुष्य चाहे तो इस प्रकार की घटनाओं से काफी लाभ उठा सकता है, अपने जीवन में खूब परिवर्तन कर सकता है। 'एक रोज मरना जरूर है, अन्याय करने से सदा डरो', यह सिद्धान्त पूर्णतः मन में बिठाने का प्रयत्न कर सकता है। जिस मनुष्य की मृत्यु हो जाती है, विचार कर देखने से वह तो संसार के मिथ्या संकट से मुक्त हो जाता है, पीछे रहनेवाले अपने स्वार्थ के लिए उसकी याद करके व्यर्थ का दुःख किया करते हैं, जिससे किसी प्रकार का कोई लाभ नहीं होता। आशा है, इस प्रकार तुम अपना कर्तव्य अब समझ गये होगे। तुम्हें हिम्मत से घर में ऐसा वातावरण पैदा करना चाहिए और पारमार्थिक कार्य करने में लग जाना चाहिए। श्री पालीरामजी को मेरा वंदेमातरम् कहना।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

श्री रामकृष्ण डालमिया के नाम—

: ३१ :

नवम्बर, १९३६

प्रिय भाई रामकृष्णजी,

आपका पत्र ता० १५-११-३६ का मुझे वर्धा मिल गया था। पूज्य राजेन्द्रबाबू से भी बात हो गई थी। राजेन्द्रबाबू को जो पत्र आपने लिखा था, उसका जवाब उन्होंने वर्धा से ता० १७-११-३६ को आपको भेज दिया है। आपका पत्र पढ़कर आश्चर्य होना तो स्वाभाविक ही था। आपने खुद आगे

होकर यह आफर किया था। इसकी चर्चा आपके और मेरे बीच में ही नहीं रही, बल्कि सरदार, भूलाभाई व बापूजी से भी इसकी चर्चा हो गई थी। हम सबका यही विचार था कि जिस प्रकार कई मित्रों ने इस चुनाव के कार्य में बिना शर्त उदारतापूर्वक मदद दी है, उसी मुताबिक आप भी देंगे। खैर, कोई बात नहीं है। आपको संतोष नहीं हो तो मैं भी कुछ विशेष नहीं कहना चाहता; परंतु मेरी समझ से आप उचित नहीं कर रहे हैं। मैं अब इसीलिए लाहौर नहीं जाना चाहता। आप विचार कर ठीक समझें तो सरदार वल्लभभाई के पास चुनाव-कार्य के लिए जो भिजवाना चाहें बिना शर्त के भिजवा दें, अन्यथा इसकी चर्चा छोड़ दें। कांग्रेस चुनाव तो लड़ेगी ही। अन्य मित्रों से कोशिश की जायगी। पत्रोत्तर आप वर्धा ही दें।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

श्री रामकृष्ण डालमिया की ओर से—

: ३२ :

बिहार
५-४-३८

प्रिय भाई जमनालालजी,

सादर वन्दे! आज के 'इंडियन नेशन' की दो कतरनें आपके पास भेज रहा हूं। जिसके लिए मैंने आपसे कहा था वही बुद्धनराय वर्मा लोगों के पास जा-जाकर दस्तखत कराकर हम लोगों के विरुद्ध प्रचार करता है। इसमें से एक में लिखा है कि यहां फैक्टरी होने से डेयरी को कोई लाभ नहीं हुआ और बैलगाड़ियों के आवागमन से यहां की आब-हवा खराब हो गई है। एक ओर तो यह कांग्रेस की ओर से असेंबली के सदस्य हैं, दूसरी ओर बैलगाड़ियों का चलना-फिरना पसंद नहीं करते। बुद्धनराय यह सब व्यक्तिगत भावों के कारण कर रहा है। बिहार में अनेक मिलें हैं, जिनके मुख्य कार्यालय

दूसरे प्रांतों में हैं। उन लोगों का कांग्रेस से कोई संबंध नहीं है। इससे उन लोगों के प्रति इनमें द्वेष नहीं है। मेरा कांग्रेस से कुछ संबंध है और मैं कुछ थोड़ी-बहुत सेवा भी किया करता हूं, जिसके फलस्वरूप ये लोग इस बुरी तरह प्रचार कर रहे हैं।

आपका,
रामकृष्ण

श्री रामकृष्ण डालमिया के नाम—

: ३३ :

बंबई,
१३-४-३८

प्रिय भाई रामकृष्णजी,

आपका ता० ५-४-३८ का पत्र वर्धा होकर मिला। आपने जो फाइल मेरे साथ दी थी उसे मैंने इस बार कलकत्ते में वर्किंग कमेटी के सदस्यों के सामने रखा था। चर्चा भी हुई थी। श्री राजेन्द्रबाबू इस संबंध में जांच करनेवाले हैं। एक बात का ख्याल तो हम लोगों को भी रखना चाहिए। अपनी ओर से जो प्रचार हुआ है, उस बारे में अतिशयोक्ति का दोष तो हम पर भी आता है। अतः आशा है, भविष्य में आप इस बात का भी ख्याल रखेंगे। इस तरह के प्रचार से लोगों में विरुद्ध भाव या द्वेष-भाव बढ़ने की शंका रहती है। अपनी ओर से जो प्रचार हो, उसमें व्यक्तिगत प्रशंसा या अतिशयोक्ति नहीं रहनी चाहिए।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: ३४ :

वर्धा,
२-११-३८

प्रिय भाई रामकृष्णजी,

आपका ता० २९-१० का व शांतिप्रसाद के ३० व ३१ के पत्र मिले। आशा है, हड़ताल का फैसला संतोषजनक हो जायगा। श्री शंकरराव देव का भी पत्र आज आया है। वह भी वहां आ रहे हैं। सर पुरुषोत्तमदास से जो बातें हुईं थीं, वे मैंने शांतिप्रसाद से कह दी थीं। समय निकलने पर, संभव है, गैर-समझ दूर हो जाय। श्री ए. डी. श्राफ को तो चाहिए कि वह खुद ही सर पुरुषोत्तमदास व सर मोदी से मिलकर स्पष्ट खुलासा कर दें तो ज्यादा ठीक रहेगा। ए. आर. दलाल से व डा० महमूद तथा शांतिप्रसाद से जो बातें हुईं, वे मालूम हुईं। ए. आर. दलाल तो अभी डायरेक्टर हुए हैं, इसीलिए उन्हें सब स्थिति समझने में कुछ देर लगेगी।

सर मोदी का पत्र आया है। मैंने फिर उन्हें लिखा है। जब कभी शांतिप्रसाद इधर आयेंगे तभी समक्ष में बातें हो सकेंगी। वहांतक आपको शायद ए. आर. दलाल की ओर से भी उनकी मंशा मालूम हो जाय।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम

श्री रामकृष्ण डालमिया की ओर से—

: ३५ :

कलकत्ता,
२८-१२-३९

पूज्य भाई जमनालालजी,

पत्र आपका मिला। आपका वजन ३६।३७ पौंड घट गया, यह जानकर दिल को विचार हुआ। मनुष्यमात्र की सेवा के निमित्त अपनी इच्छा से

इतना वजन कम कर लेना आप जैसे महान् व्यक्तियों का ही कार्य है। मुझे आशा है कि आपका स्वास्थ्य शनैः-शनैः ठीक होता जायगा। आप अपने स्वास्थ्य के बारे में मुझे बराबर समाचार देते रहने की कृपा करें।

मुझे जब भी आपके हृदय की विशालता का भान होता है, तो एक गर्व-सा होता है और ईश्वर की अनुकंपा का विचार होता है कि ऐसे महान् व्यक्ति होकर भी आप मुझे भाई समान मानते तथा व्यवहार करते हैं।

मजदूरों का झगड़ा आजकल लगभग सभी जगह चल रहा है।

मेरा स्वास्थ्य अब पहले से ठीक है।

आपका,
रामकृष्ण डालमिया

: ३६ :

बंबई,
१०-६-४१

पूज्य भाई जमनालालजी,

सादर वन्दे। कल शांतिप्रसाद व रमा यहां पहुंच गये हैं। रमा और शांतिप्रसाद आपसे मिलना चाहते थे, उन्होंने मुझसे अनमति मांगी थी। आपके पास जाकर सलाह करने में हमारे सारे कुटुंब का हित है। आप सदैव से हमारे कुटुंब का हित सोचते आये हैं। आपने अपना जीवन ही मनुष्य मात्र के हित के लिए बना लिया है। आपकी मेरे प्रति सहानुभूति सदैव से रही है। आप उन लोगों में से हैं, जो मेरे किसी भी कार्य को अनुचित समझें, तो मुझसे कहने में नहीं हिचकिचाते और ऐसा कहने का साहस भी रखते हैं। आपकी बातों का मेरे मन पर प्रभाव भी पड़ता है, चाहे पीछे मैं उसे मानूं या न मानूं।

मेरा आपसे मिलने का विचार था, क्योंकि ऐसे संकट के समय में मुझे आप ही याद आये थे। पर तब आप जेल में थे। एक दिन केशवदेव नेवटिया से आपसे मिलने के विषय में बात भी की थी, कि ३-४ घंटे आपसे जेल में मिलने के लिए जेलर से स्वीकृति ली जाय। परमात्मा की कृपा

से आप जेल से छूट आये। तब आपसे मिलने के विचार को यह कह-कर छोड़ दिया कि कहीं उसका दूसरा अर्थ न समझा जाय। वैसे तो आपकी सहानुभूति व कृपा बिना मांगे ही मिलती रही है।

मैं यह अच्छी तरह जानता हूं कि किसी भी कार्य में आप निर्णय जल्दी ही नहीं कर लेते; बात को बहुत अच्छी तरह सोच-समझकर ही करते हैं। सत्य के भाव को तो समझनेवाले आप-जैसे थोड़े ही हैं और ऐसा साहस भी थोड़े ही मनुष्य कर सकते हैं; पर जगत तो बुरे अर्थ को पहले लगाता है। आपमें जितना त्याग और साहस है वह बापूजी के संग से हुआ है, यह मैं ही नहीं, सभी जानते हैं। यह भी नहीं कि आपमें दोष नहीं; दोष-रहित तो एक भगवान ही है। हां, उन दोषों को जिस प्रकार आप मुझमें बताने में नहीं हिचकिचाते इसी प्रकार मेरा-जैसा व्यक्ति, जो आपसे प्रेम रखता है, बता सकता है, दूसरे नहीं। अन्य विशेष बातें तो आपसे कभी बंबई आने पर ही करूंगा।

आपका,
रामकृष्ण डालमिया

श्री रामकृष्ण डालमिया के नाम—

: ३७ :

वर्धा,
१३-६-४१

प्रिय भाई रामकृष्णजी,

मेरा स्वास्थ्य ठीक होता जा रहा है, धीरे-धीरे ताकत आती जा रही है। किसी भी प्रकार की चिंता की जरूरत नहीं है। आपका मेरा जो प्रेम-संबंध

है, वह तो है ही। उसके आधार पर ही मैं कुछ कह-सुन सकता हूं व उसी आधार पर आपको भी कहने-सुनने का अधिकार है। मित्र-धर्म का कर्तव्य हो जाता है, जो उचित मालूम हो विना संकोच कहना ही चाहिए।

जमनालाल वजाज का वंदेमातरम्

: ३८ :

वर्धा,
१६-७-४१

प्रिय भाई रामकृष्ण,

तुम्हारा १२-७ का पत्र मिला। अब तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक है, जानकर चिंता कम हुई। तुम्हें कुछ समय तक शांत वातावरण में रहना चाहिए, जिससे तुम्हें मानसिक शांति मिले। उसकी ठीक आवश्यकता तुम्हारे स्वास्थ्य की दृष्टि से इस समय विदित होती है। तुम्हें वर्धा आने में या यहां आकर रहने में रत्ती-भर भी संकोच नहीं होना चाहिए। पूज्य बापूजी के पास हम लोगों की अच्छी व बुरी, सच्ची व झूठी सब बातें जाते रहने में हर्ज क्या है? वह हमारे हित की जो बात दिखेगी, वह कहेंगे। उनकी ही अगर कहीं गैरसमझी हुई तो वह हम दूर कर सकेंगे, हमारे व्यवहार से, व खुलासा करके। मेरे वारे में तो कई प्रकार की झूठी-सच्ची बातें आजतक उनके पास जाती रही हैं, उससे चिंतित होने की क्या वात है। हमसे अगर कोई भूल हो गई है, तो हम उसे सुधारने का प्रयत्न करेंगे। अगर हम ठीक समझते हैं तो उन्हें समझाने का प्रयत्न करते रहेंगे। तुम तो यह जानते ही हो कि मेरी तो यही इच्छा है कि अगर तुम उनके निकट आ सको, तो तुम्हें शांति मिलेगी व हमेशा मिलते-जुलते रहने से गैर-समझ भी दूर होगी।

जमनालाल वजाज का वंदेमातरम्

: ३९ :

वर्धा,
३१-१०-४१

प्रिय भाई रामकृष्ण.,

मैंने भाई जयदयाल को पत्र लिखा है। अगर उसका गो-सेवा-संघ के कार्य में उत्साह है, ऐसा जबाव आ जायगा तब तो उसका नाम सदस्यों में व खजांची में रखने का विचार है, अन्यथा अगर तुम्हें आपत्ति न हो तो तुम्हारा नाम केवल सदस्य-संचालक-मंडल में रख लिया जायगा। कार्य तो गो-सेवा का तुमसे लेना ही है, चाहे सदस्य तुम और किसी कारण से न भी रहो। तुम्हारी सूचना के अनुसार विधान में सुधार हो गया है। तुम्हारा उत्साह क्षणिक होता है, स्थायी टिकता नहीं, यह ठीक नहीं है। तुम्हें अपनी पूरी शक्ति व बुद्धि लगाकर गो-सेवा का कार्य तो शुरू कर ही देना चाहिए। अगर इसमें तुम पूर्णतः सफल हो गये तो तुम्हारी सेवा भी स्थायी रह जायगी और सेवा के साथ नाम भी।

तुम्हारा पत्र कल बापूजी को पढ़ा दिया था। आज मेरा जन्मदिन है। तुम व दुर्गा बहन परमात्मा से प्रार्थना करना कि मुझे सद्बुद्धि प्रदान करते रहें। मुझे सच्चाई के साथ सेवा करते-करते इस शरीर को छोड़ने की इच्छा के सिवाय आज तो कोई इच्छा नहीं होती।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

श्री तान युन-शान की ओर से—

: ४० :

शांतिनिकेतन,
१८-१०-४०

प्रिय महोदय,

आशा है, बिना किसी पूर्व-परिचय के पत्र लिखने के लिए, आप मुझे क्षमा करेंगे। शांतिनिकेतन में स्थित 'चीना-भवन' से आप शायद कुछ

परिचित होंगे ही। पिछले कुछ वर्षों से भारत-चीन-सांस्कृतिक समिति के माध्यम से भारत और चीन की पुरातन सांस्कृतिक मैत्री को पुनर्स्थापित करने और उनके संबंधों को घनिष्ठ करने का हम प्रय न कर रहे हैं। यह समिति कुछ अन्य मित्रों के सहयोग से की गई मेरी तुच्छ सेवा का परिणाम है। चुंकिंग और शांतिनिकेतन में इस समिति के केंद्र हैं और मैं चीना-भवन का डाइरेक्टर हूं। पारस्परिक सहयोग से कार्य करने में हमारा विश्वास है और उसीके अनुसार हमारा प्रयत्न रहा है कि इन दो देशों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान, भावनाओं की समझ तथा व्यवहार में सहयोग वढ़े। मैं कह सकता हूं कि भारत व चीन दोनों देशों के कई राजनैतिक नेताओं, कवियों, लेखकों और प्रमुख व्यक्तियों का ध्यान इस ओर आकर्षित करने में हम सफल हुए हैं। भविष्य में अपने स्वप्नों व आदर्शों की प्राप्ति में हमें पूरी आशा है।

यद्यपि जबसे मैं भारत आया, आपसे भेंट करने का सौभाग्य मुझे नहीं मिला, तथापि आपके महान व्यक्तित्व ने प्रारम्भ से ही मुझे आकर्षित किया है। भारत के प्रति मेरे प्रेम के कारण मुझे उसकी पुरानी सभ्य संस्कृति व वर्तमान राष्ट्रीय आंदोलन में गहरी दिलचस्पी है। और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में जिसकी दिलचस्पी हो, वह आपके व्यक्तित्व से अनभिज्ञ रह ही नहीं सकता।

मुझे यह लिखते हुए हर्ष है कि श्री ताई ची-ताओ, इस महीने के अंत में भारत-यात्रा पर आ रहे हैं। श्री ताओ चीनी राष्ट्रीय सरकार के पांच सर्वोच्च अंगों में से एक अंग —'एक्जामिनेशन युआन' के अध्यक्ष और चीन के सर्वप्रमुख राष्ट्रीय नेताओं में से एक हैं। वह भारत-चीन सांस्कृतिक समिति के अध्यक्ष भी हैं। उनकी इस यात्रा का उद्देश्य भारत को चीन की सद्भावना पहुंचाना, बौद्ध तीर्थों की यात्रा करना और समय व स्थिति के अनुसार इस देश के सब प्रमुख व्यक्तियों से भेंट करना है। उन्हें निश्चय ही आपसे मिलकर और हमारे कार्य के लिए आपकी मैत्री व सहयोग प्राप्त कर बहुत खुशी होगी।

कृपया लिखें कि हमारी व आपकी भेंट कब और कहां हो सकती है, ताकि आपकी सुविधा के अनुसार हम अपना कार्यक्रम बनावें। उनके आगमन के पूर्व मैं उनकी शुभकामनाएं आपके पास पहुंचाता हूं।

पत्रोत्तर की अपेक्षा में,[1]

आपका,
तान युन-शान

प्रो० तान युन-शान के नाम—

: ४१ :

वर्धा,
२२-१०-४०

प्रो० तान युन-शान,
शांतिनिकेतन (बंगाल)

प्रिय महोदय,

आपका १८ ता० का पत्र मिला। आपने जो भी लिखा है, उसे पढ़कर खुशी हुई।

आप इतने समय से भारत में हैं तब भी आपसे भेंट नहीं हुई, यह दुःख की ही बात है। किंतु फिर भी इन दो महान देशों को निकट लाने का जो सद्प्रयत्न आपकी समिति कर रही है, उससे मैं अनभिज्ञ नहीं हूं।

श्री ताई ची-ताओ के भारत आगमन पर मेरी ओर से हार्दिक स्वागत का संदेश कृपया उनतक पहुंचा दें। श्री ताओ व आपसे मिलकर मुझे बहुत ही प्रसन्नता होगी।

---

१. अंग्रेजी से अनूदित।

मैं ता० २४ के लगभग बंबई से जयपुर के लिए रवाना हो रहा हूं। लगभग एक महीना जयपुर-राज्य का दौरा करूंगा। नवम्बर के तीसरे सप्ताह में वर्धा पहुंचने का विचार है। राजनैतिक स्थिति में तीव्र परिवर्तन होते रहने के कारण मेरा आगामी कार्यक्रम अबतक निश्चित नहीं हो पाया है।

जयपुर व वर्धा में आपसे मिलने के लिए उचित समय निकाल सकूंगा, ऐसी संभावना है।

अपने आने की सूचना मुझे एक सप्ताह पूर्व देने की कृपा करें।

आपका,
जमनालाल बजाज

श्री दुर्गाप्रसाद की ओर से—

: ४२ :

अनूपशहर,
२१-७-४०

श्रद्धेय सेठजी,

वंदेमातरम्। गत अप्रैल में आपको ओम्प्रकाश के एम० एस० पास करने की सूचना दी थी, जिसके उत्तर में बधाई प्राप्त कर वह अत्यंत उत्साहित हुआ था। आजकल वह प्रयाग में पी० सी० एस० (डिप्टी कलेक्टरी) की परीक्षा की तैयारी कर रहा है। १२ अगस्त से परीक्षा आरंभ होगी, जिसे समाप्त करके अगस्त के अंतिम सप्ताह में वह घर आ जायगा।

इसके संबंध के विषय में कई जगह से बातचीत चल रही है। उसके विचारों के अनुकूल कन्या की तलाश हो रही है। आज एक पत्र सी० पी० विधान सभा के अध्यक्ष तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री घनश्यामसिंहजी गुप्त की बड़ी पुत्री श्री शकुंतला देवी का जबलपुर से आया है। उन्होंने अपने पिताजी के हवाले से लिखा है कि उनकी दो बहनें विवाह-योग्य हैं, जिसमें से बड़ी बी० ए० में पढ़ रही है।

क्योंकि आप ओम् की सात्विक वृत्ति से परिचित ही हैं और संभवतः श्री घनश्यामसिंहजी की उक्त कन्या को भी अवश्य जानते होंगे, अतः मैं जानना चाहता हूं कि उसकी मनोवृत्ति ओम्प्रकाश के अनुकूल रहेगी या नहीं। आप को यह जानकर हर्ष होगा कि ओम्प्रकाश ने प्रयाग विश्व-विद्यालय में अपने सदाचार, सद्व्यवहार, समाज-सेवा-भाव एवं ग्राम-सुधार कार्य के लिए विशेष नाम प्राप्त किया है। उसका विचार है कि एक ऐसे ही विचारों वाली अर्थात् त्याग तथा सेवा-भाव रखनेवाली एवं सादा और कठिन जीवन व्यतीत कर सकनेवाली कन्या के साथ उसका संबंध किया जाय। आपके आशीर्वाद से कन्याओं को तो सुयोग्य घर और वर मिल गये हैं। बस, अब यही अभिलाषा है कि ओम्प्रकाश की सहधर्मिणी उसकी सरीखी मिल जाय, जिससे वह उसके जीवनोद्देश्यों की सफलता में सहायक होकर उसकी खुशी और उन्नति का हेतु होकर गृहस्थी के उत्तरदायित्व को समझ सके और मुझे निवृत्त करे। आपको यह याद होगा कि ओम्प्रकाश की माता का देहावसान हुए आज लगभग सात साल हो गये। तबसे परमात्मा ने यह समय निकाल ही दिया। एक छोटा बच्चा, जिसे वह तीन वर्ष का छोड़ गई थी, अब १० वर्ष का है। मेरी हार्दिक इच्छा है कि ओम् की धर्मपत्नी ऐसी सुशील एवं प्रेमपूर्ण प्रकृति की हो कि वह ओम् के दोनों छोटे भाइयों को प्रिय सहोदर समझे। बिचले ने, जो लगभग १८ वर्ष का है, इसी वर्ष एफ० ए० किया है और प्रयाग में बी० ए० कर रहा है। मैं इसका इच्छुक हूं कि कन्या की आयु इससे कुछ अधिक हो, अर्थात् १९-२० वर्ष के लगभग हो, ताकि वह गंभीर हो और अपने उत्तरदायित्व को भली-भांति समझ सके।

आशा है, आप इस विषय पर पूर्ण प्रकाश डालने की कृपा करेंगे और कष्ट के लिए क्षमा प्रदान करेंगे। पत्रोत्तर की शीघ्र कृपा करें, क्योंकि अन्यत्र बातचीत बहुत बढ़ चुकी है।

कृपाकांक्षी,
दुर्गाप्रसाद

श्री दुर्गाप्रसाद के नाम–

: ४३ :

पूना,
२६-७-४०

प्रिय श्री दुर्गाप्रसादजी,

२१-७-४० का पत्र मिला। श्री घनश्यामसिंहजी सात्विक प्रकृति के आदमी हैं, वड़े सज्जन हैं। उनकी पुत्रियों को जहांतक मैं जानता हूं, संस्कारवाली और सुशील मालूम होती हैं। ओम्प्रकाश की दृष्टि से मुझे यह स्थान अनुकूल प्रतीत होता है। यों श्री घनश्यामसिंहजी पुराने अग्रवाल माने जाते हैं। कुछ लोग उन्हें दसा अग्रवाल भी कहते हैं, परंतु इन भेद-भावों को अब महत्व नहीं देना चाहिए। हां, विवाह के पूर्व लड़के-लड़की परस्पर एक दूसरे से भली प्रकार परिचित हो जायं और एक दूसरे के विचारों को जान लें—यह आवश्यक है। इस दृष्टि से, आशा है, आप ओम्प्रकाश को लड़कियों का परिचय करा देंगे, जिससे उन्हें भी देखने-समझने का मौका मिल जाय।

जमनालाल वजाज का वन्देमातरम्

लेडी डेविड देवदास की ओर से—

४४ :

मद्रास,
१-११-४१

प्रिय जमनालालजी,

मेरे दामाद भारतन् और पुत्री सीतादेवी की ओर से मैं आपको एक कष्ट देने के लिए लिख रही हूं। सर डेविड और मेरी इच्छा उन दोनों

को क्रिसमस के उपहार-स्वरूप एक रेडियो सेट देने की है। अतः हमें बहुत खुशी होगी, यदि आप वर्धा में वे जिस कुटिया में रहते हैं, वहां बिजली लगवा देने का प्रबन्ध करवा दें। मुझे मालूम है कि आप उनके लिए बिजलीवाला पक्का मकान बनवाना चाहते थे, लेकिन उन्होंने उस कुटिया में ही रहना पसंद किया। चूंकि सीता काफी रात तक पढ़ती है, उस दृष्टि से भी बिजली लग जाने से उसे बहुत सुविधा होगी। अतः मैंने उचित समझा कि इस बारे में आपको लिखकर प्रार्थना करूं। यदि आप क्रिसमस के पहले ही ऐसा प्रबन्ध करवा सकें, तो हमें बहुत ही खुशी होगी, क्योंकि सीता क्रिसमस के दिन रेडियो का उपयोग कर सकेगी।

यदि आप मेरे इस सुझाव को सीता व भारतन् से गुप्त रखें तो अच्छा होगा, क्योंकि हम चाहते हैं वह उनके लिए "क्रिसमस की अनपेक्षित भेंट" हो। वे शायद आपसे कहें कि उन्हें बिजली की जरूरत नहीं। ऐसी स्थिति में क्या यह अच्छा नहीं होगा कि आप उनसे कहें कि यह बिजली आपकी ओर से उन्हें क्रिसमस की भेंट है? आपको यह कष्ट देने का मुझे दुःख है, लेकिन विश्वास है आप बुरा न मानेंगे। आशा है, आप व आपके परिवार के सदस्य स्वस्थ व आनंद से होंगे। आप सबको मेरी व सर डेविड की ओर से अनेक शुभ कामनाएं।[1]

आपकी,

लेडी डेविड देवदास

---

१. अंग्रेजी से अनूदित।

श्री एम० ई० नायडू की ओर से—

: ४५ :

कोट्टार, ट्रावनकोर,
२८-८-२८

आदरणीय महोदय,

अछूत कहे जानेवाले लोगों के प्रति आपकी सहानुभूति के कारण हिन्दुओं का एक बड़ा हिस्सा आपको श्रद्धा से देखता है।

लेकिन हिंदू-धर्म का सबसे बड़ा कलंक ट्रावनकोर में देखा जा सकता है। ट्रावनकोर एक प्रमुख हिंदू रियासत के नाम से लोकप्रिय है, लेकिन वस्तुस्थिति यह है कि यह राज्य हिंदू-धर्म का प्रमुख शत्रु है। यहां हिंदू 'अछूतों' को कोई मान्यता प्राप्त नहीं। यही नहीं, बल्कि उन्हें मंदिरों की ओर जानेवाली सड़कों पर से भी खदेड़ दिया जाता है।

क्या आप स्वयं अपनी आंखों से इस अमानवीयता को देखने यहां नहीं पधार सकते? यदि आप ट्रावनकोर में इस क्रूरता को देखेंगे तो निश्चय ही इस हिंदूवाद के प्रति आपका हृदय ग्लानि से भर जायगा और शायद आप कोई ऐसा मार्ग खोज पायें, जिससे उस मानवता को, जिसे इतना घृणास्पद बना दिया गया है, कम-से-कम एक आदर का स्थान तो प्राप्त हो पायेगा।[1]

आपका,
एम० ई० नायडू

१. अंग्रेजी से अनूदित।
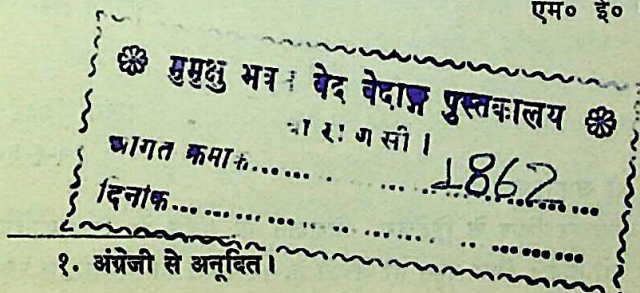
श्री केशवदेव नेवटिया की ओर से—

: ४६ :

बम्बई,
८-६-२६

प्रिय श्री जमनालालजी

आज नन्दलाल का पत्र आया है। मालवे की एक रियासत, जिसकी वार्षिक आमदनी १० लाख रुपये है, २० लाख का कर्ज चाहती है। उस रियासत पर लोगों का जो कर्ज है, वह एक आदमी से लेकर चुका देना चाहते हैं और उसे दर वर्ष ४ लाख के हिसाव से वापस देकर ६-७ वर्ष में कुल रुपया ब्याज-सहित वापस देने को कहते हैं। व्याज ७-८ रु० टका देंगे। कर्जा पोलिटिकल एजेंट की सम्मति से लिया जाता है। उसके सामने रजिस्टर हो सकता है। नया दीवान भी अंग्रेजी राज्य ने नियत कराया है और पोलिटिकल एजेंट के वनाये वजट के अनुसार कार्य होगा। मैंने समाचार मंगाया है कि कर्ज के रुपये वापस दिला देने की गारंटी ब्रिटिश सरकार भी देती है क्या? अगर गारंटी हो तो रुपये देनेवाले को किसी प्रकार की जोखिम ही नहीं रहे। श्री रामनारायणजी या इंडिया बैंक द्वारा, इस तरह का कोई बिना जोखिम का काम हो तो, कर सकने की उम्मीद है क्या? उचित समझें तो पूछ देखना। अगर सरकारी गारंटी हो, तो कोशिश करने का विचार है।

आपका,
केशवदेव नेवटिया

: ४७ :

माटूंगा (बंवई)
१५-१-३०

प्रिय श्री जमनालालजी,

शोलापुर मिल के डिबेंचर बिकवाने के संबंध में आप कोशिश करेंगे, सो ठीक। मिल बहुत ही अच्छी है, पर एजेंट का विश्वास न रहने

से इस काम में कठिनाई हो रही है। जोहारमलजी रूंगटा के १२ लाख लेने हैं। ८ तो मिल में डिपोजिट और ४ मैनेजिंग एजेंसी की सेक्यूरिटी पर। उन्हें कपड़ा वेचने की एजेंसी मिली हुई है, जिसमें ग्रास २ लाख रुपया और नेट १।। लाख साल का फायदा है। वंबई और शोलापुर में कपड़ा उधार देना पड़ता है; बाकी दूसरी जगह जो जाता है उसकी बिल्टी के साथ वैंक की मार्फत रुपये वसूल होते हैं। वंबई. शोलापुर में भी डूबत आने का वहुत कम भय है। ये लोग चाहते थे कि मैनेजिंग एजेंसी में ।।) भाग डिवेंचर होल्डरों को मिले तो आधे याने पच्चीस-तीस लाख तक के डिवें-चर तो वे स्वयं ले लें (१२ उनके हैं वे, और बाकी दूसरे लगा दें), आधे के लिए आपके द्वारा श्री रामनारायणजी या दूसरों के यहां तलाश कराना चाहते थे। श्री नारायणलालजी तो इस प्रकार के काम में शायद ही पड़ें। उनसे साधारण वात हुई थी। कहते थे, इतने बड़े काम में मैं नहीं पड़ूंगा।

मगर अव यह सुना है कि श्री शांतिकुमार डिवेंचर लेनेवालों की मैनेजिंग एजेंसी में भाग नहीं देना चाहता। दीनशा से बात चलती है। ७० लाख के डिवेंचर निकालकर उन ७० लाख की सेक्यूरिटी पर ५० लाख वह देने को कहता है। ये सव वातें भगवानदासजी कारीवाला से ज्ञात हुई हैं। वह आजकल यहीं हैं। जोहारमलजी के जत्थे का काम करते हैं। रूई खरीद करने और उसे अपने गोदाम में रखकर जरूरत हो वैसे डिलीवरी देने का प्रवंध अमरसी दामोदर के साथ ३ वर्ष के लिए है। उन्होंने ३० लाख तक रोकना कबूल किया है। उसे कितना कमीशन-मुकादमी मिलती है, यह पता नहीं। मिल चलाने में कपड़ा और रूई पर रुपये लगें, वे इस प्रकार एजेंट्स रखने से मिल सकते हैं। सिर्फ स्टोर और चालू खर्च के लिए १०-१५ लाख हाथ में हों, तो कठिनाई नहीं रहे। पर मिल पर रुपया जमा करानेवालों का तकाजा है। उन्हें डिवेंचर निकालकर दे देने से एक बार कठिनाई नहीं रहेगी। बाकी श्री शांति-कुमार व उनके परिवार के बहुत भले आदमी हैं। ये ज्यादा मेहनती नहीं हैं।

दूसरे लोग काम करनेवाले अच्छे भी हैं, खराब भी। इस मिल की मैनेजिंग एजेंसी में आधा भाग रतनसीभाई का है और यहां मोरारजी गोकुलदास मिल में, जो रतनसीभाई चलाते हैं, शांतिकुमार का मैनेजिंग एजेंसी में आधा भाग है। मोरारजी गोकुलदास मिल की हालत भी इस समय डांवाडोल हो रही है। कपड़े की एजेंसी इस वर्ष रामकुमार शिवचंदराय ने ली है। ५ लाख डिपोजिट और २ लाख तक कपड़े पर रखकर गनेशदास ओंकारमल के रुपये लगते हैं। रूई का प्रवंध इंडियन काटन कं० को मुकादमी और दलाली देकर रखा है, फिर भी गड़वड़ ही है। यह मिल भी वहुत अच्छी है। यदि कोई अच्छा वंदोवस्त ये लोग नहीं कर पावेंगे तो ये दोनों ही किसी अंग्रेजी कंपनी के हाथों या लिक्वीडेशन में जाकर किसी अंग्रेज कंपनी के हाथों में ही चली जाने की संभावना है। ये सव वातें आप जानते होंगे। मैंने जो सुनी है, वह लिख दी है।

शोलापुर मिल के, आपके द्वारा, अव २० लाख के डिवेंचर भराना चाहते हैं, वे किस शर्त के हैं? ३० लाख के कौन ले रहा है? यह आप जानते होंगे या पूछ ही लेंगे। मार्च १९२९ तक खतम होनेवाले वर्ष की रिपोर्ट पर से आपने हिसाव उतरवाकर भेजा, सो यहां उसकी छपी हुई कापी मंगा ली है। उसके वाद के ६ महीनों की रिपोर्ट छपी नहीं है। वर्ष में एक ही रिपोर्ट छापते हैं। भगवानदासजी कहते थे कि जोहारमलजी का आदमी शोलापुर जाकर तैयार किया हुआ हिसाव देखकर आया है। ४४,००० रु० मासिक नेट प्रोफिट कर रही है। वाकी यह तो सव आप देख ही लेंगे।

कर्जा विलकुल न रहे उतने, याने डिवेंचर सिर्फ ६-७ टके का व्याज खानेवाले लोग ले लें तो ही यह मिल शांतिकुमार चला सकेगा। वैसा होने से चलाने के लिए कपड़ा वेचनेवाले एजेंट से डिपोजिट मिल जाना संभव है। जोहरमलजी तो डिवेंचर निकालने के वाद इतनी डिपोजिट रखकर शायद एजेंट रहना पसंद नहीं करेंगे, पर वे नहीं तो दूसरा मिल जायगा तो भी भविष्य में वर्तमान स्थिति से भी मिल उद्योग की स्थिति

कुछ खराब हो और मिल १-२ वर्ष बिलकुल नफा नहीं करे तो उस समय यह मिल दूसरे के हाथ में देनी पड़ेगी। पर इस समय यदि डिवेंचरों का प्रवन्ध हो सकता हो तो अच्छा ही है। चालू स्थिति में या सुधरी हुई स्थिति में कोई हर्ज नहीं होगा और उन्हें मिल रख सकने का चांस मिल जायगा।

वच्छराज कंपनी के नाम से डिवेंचरों का प्रयत्न करने में यदि सफलता की आशा हो तो कोई हर्ज नहीं है। दलाली कुछ मिल सकती हो तो अच्छा है। वाकी कंपनी को दूसरा लाभ भी मिल सकता है। कपड़ा या रूई काकमीशन रुपये रोकने से मिल सकता है, पर इतने रुपये किसी बैंक से लेने पड़ेंगे। इंपीरियल वैंक ने आजकल लिमिटेड कंपनियों के एजेंटों की परसनल गारंटी मांगी थी, इंडिया वैंक या डायरेक्टरों में से किसीसे प्रवन्ध होना संभव है। वाकी डिवेंचर २० लाख के कौन लेंगे यह देखना है। जोहारमलजी ३० लाख के लेते थे, और भी अपने साथ के लोग हैं, वे ५-७ टका व्याज पर संतोष करनेवाले नहीं हैं।

दीनशाह के हाथ में ग्वालियर स्टेट के रुपये हैं। कोई स्टेट के रुपये मिले तो ही आसानी हो। विड़ला भी विना दूसरे अच्छे लाभ के डिवेंचर नहीं लेंगे। यदि आपको कुछ लोग ऐसे दिखाई देते हों तो प्रयत्न करिये। डिवेंचर लेनेवालों को यदि शर्त अच्छी हो तो जोखिम नहीं है। अंग्रेज कंपनी मिल की एजेंसी मांगती थी। अंग्रेजी कंपनी या दूसरे सही आदमी के हाथ में यह मिल जाय तो इसके शेयरों के भाव बढ़ सकते हैं। डिवेंचर होल्डरों के रुपये तो लिक्वीडेशन में जाने पर भी पूरे मिल जाना इस स्थिति में तो संभव है। ५०-६० लाख में यह मिल खरीदनेवाले आज की स्थिति में भी मिल जाने चाहिए। सो आप उचित समझें वैसा करियेगा। यदि अपना किसी प्रकार का सम्बन्ध होना संभव हो और बोर्ड में अपना एक आदमी हो तो ज्यादा अच्छा होगा । उचित और संभव मालूम हो, वैसा करियेगा। डिबेंचर में अपनी कंपनी की वर्तमान पूंजी में से ज्यादा रोकना

ठीक नहीं। दूसरा लाभ मिलना हो तो १–२ लाख तक रोके जा सकते हैं।

आपका,
केशवदेव

: ४८ :

बबई,
२-११-३०

प्रिय श्री जमनालालजी,

श्री पालरामजी कहते थे कि रबड़ में विलायत में भी अधिक नुकसान उठाया है। इस बार ३ लाख लिया था, उसमें से १ लाख वापस आ गया। बाकी २ लाख भी वे वापस देना चाहते थे, मगर मैंने बीच में ले लेना ठीक नहीं समझा। कुछ दिन वाद आ ही जायंगे। बाकी श्री परमेश्वरदासजी कंपनी को अपनी ही समझते हैं। इस बार ३ लाख लिया था। उस कंपनी को भी व्याज मिल जाय, यह दृष्टि भी थी। उनकी राय तो थी कि इस मौसिम में भी रकम पर ब्याज तो उपजा ही लेना चाहिए। हेसिन के बदले में ५-६ टके का ब्याज आता था। उन्होंने कम्पनी खाते बंद कर लेने की राय दी थी, मगर श्री पालीरामजी व नारायणलालजी की राय वैसी नहीं होने से, उनको ही रुपये दिये थे। बिड़ला ब्रदर्स के साथ लेन-देन रहने में कंपनी को भी दिक्कत नहीं मालूम होती। इनको नुकसान लगा है तो पूंजी की तंगी आ पड़ी होगी। बैंकों या बाजार से यह रकम नहीं लेते, आगे संभवतः सट्टा भी कम करेंगे। अपनी कंपनी के साथ इनका इतना सम्बन्ध भी है, इन सब बातों को देखते अपनी कम्पनी को इनकी कोई रिस्क आने की संभावना बहुत ही कम है। चालू खाते में बैंक वगैरा बंद होने के दिन इनके यहां से भी कभी-कभी सीजन में रुपये १-२ दिन के लिए मंगाये जा सकते हैं। यह भी कभी मंगा सकते हैं, आपकी क्या राय है? चालू खाता

रखने में मैं तो रिस्क नहीं समझता और जबतक कम्पनी के साथ इनका सम्बन्ध है तबतक कभी यह चालू खाते रुपये मंगा लें और न देना यह मुझे तो अनुचित-सा मालूम होता है।

आपकी सजा रद्द या कम कराने के सम्बन्ध में श्री नारायणलालजी से मालूम हुआ था कि वार एसोसिएशन वाले विचार करते थे। मगर कहीं आप बीच में यह न लिख दें कि कुछ नहीं किया जाय, इससे उन्होंने पक्का निश्चय नहीं किया। श्री नारायणलालजी कहते थे कि मेरी इच्छा उन लोगों को कहकर कराने की है, मगर आप बाहर आ भी जायंगे तो इस समय जो स्थिति है उसमें ज्यादा बाहर रह नहीं सकेंगे, यह सोचकर मैं भी चुप रह गया था। अब शायद नारायणलालजी फिर अपने बार एसो-सिएशन वाले मित्रों से विचार करेंगे। आज यू० पी० में भी एक आदमी ने दूसरे लोगों की सजा के बारे में विचार कराने की अर्जी दी है, ऐसा अखबार में छपा है। कोई कुछ करे तो कोर्ट में सजा रद्द होना सम्भव तो है।

आशा है, आपका स्वास्थ्य अच्छा है।

आपका,
केशवदेव नेवटिया

: ४९ :

बम्बई,
३०-१२-३०

प्रिय श्री जमनालालजी,

चि० श्रीगोपाल के पत्र में पुलगांव मिल के बारे में समाचार है। उसे पढ़कर लिखें कि आपकी इस मिल के सम्बन्ध में क्या राय है? क्या आप चि० श्रीगोपाल आदि या कंपनी का इस सम्बन्ध में जाना ठीक समझते हैं? कोई भी काम किया जायगा तो पहले किसी जानकार को मिल बता ली जायगी और जो-जो खातिरी करनी चाहिए, वह कर ली जायगी। बाकी आपकी सम्मति जाने बिना ज्यादा बातचीत करना ठीक नहीं मालूम हुआ।

यदि आपकी सम्मति इस काम में जाने के विरुद्ध न हो तो लिखें कि चि० श्रीगोपाल आदि अकेलों का या अकेली कंम्पनी का या दोनों का मिलकर काम करना, इन तीनों में कौन-सा ठीक समझते हैं। यदि दोनों के मिलकर करने के विरुद्ध आपकी राय न हो तो उनका व कंपनी का हिस्सा किस प्रकार रहना चाहिए व किस प्रकार का सम्बन्ध रहना चाहिए। अपनी राय खुलासा लिखें। कम्पनी की पूंजी का उपयोग अभी तक सीजन के बाद बराबर नहीं होता, जिससे ब्याज में कसर ही पड़ती है। सीजन में दूसरा प्रबंध करना ही पड़ता ही है, सो कुछ रुपये इस प्रकार के काम में लगाये जायं तो ठीक मालूम होता है। मिल में नई मशीन के वगैर हमें तो अपने रुपये लगाने की जरूरत नहीं है। ३-३।। लाख रिजर्व में हैं, सरकारी कागज। मिल चलाने के लिए अपने रुपये (यदि नई मशीनरी में लगा दिये जायं तो) लगाने पड़ें तो लगाये जा सकते हैं। अपनी देख-रेख में इस प्रकार पैसा लगाने में हर्ज नहीं मालूम होता। वर्तमान स्थिति में मैनेजिंग एजेंसी से १२ से २० हजार, कपड़ों आदि की एजेंसी भी ली जाय तो १० हजार ज्यादा, व नई मशीन बढ़ा लेने पर २० से ३५ हजार तक, एवं कपड़े व सूत की एजेंसी साथ रखने से उसके १५ हजार ज्यादा, इस प्रकार समझना चाहिए।

बाकी कंपनी की कुछ रकम सीजन के सिवाय भी लगी रहे, उसका ब्याज बराबर मिल जाय तो लाभ कंपनी का हो सकता है। श्री रामेश्वरदासजी तो कहते थे कि बातचीत पक्की कर लो, फिर ठीक मालूम होगा उस तरह चि० श्रीगोपाल व कंपनी के सीर में रख लेंगे। बाकी आपकी राय जान लेने के बाद ही चि० श्रीगोपाल आदि का या कंपनी का इस काम में पड़ना ठीक मालूम होता है। श्री बूटी शेयर दे देगा ऐसी श्री नागरमलजी की धारणा है। मगर उसका निश्चय तभी होगा जब वह उससे ठीक सौदा करेंगे।

आपका,
केशवदेव

श्री केशवदेव नवेटिया के नाम—

: ५० :

धूलिया-जेल,
६-५-३२

प्रिय केशवदेवजी,

श्री पीतांवर मोहनलाल आपके पास यह नोट लेकर आवेंगे। श्री पुरुषोत्तमदासजी त्रिकमदासजी बैरिस्टर, जो मेरे साथ में जेल में हैं, के ऊपर डिग्री हुई है। इनका वंबई में ग्रांट रोड पर एलफिस्टन थियेटर मालकी का है। परंतु वह मार्टगेज है। थियेटर का भाड़ा ठीक आता है। इमारत भी ठीक वताते हैं। जमीन फ्री होल्ड करीव ११०० या ११५० गज है। इनकी इच्छा इसको वेचकर जो इनकी डिग्री हुई है उनका फैसला कर डालने की है। यह अगर जेल के वाहर होते तो खुद प्रयत्न करते। परंतु अंव यह तो प्रयत्न कर नहीं सकते। इसलिए वाहर जो हैं, उन्हें ही प्रयत्न करना पड़ेगा। इस थियेटर की पूरी विगत पीतांवरभाई आपको दे देंगे। या त्रीकमदास द्वारकादास सालीसिटर पूरी तौर से वाकिफ हैं, वह दे सकेंगे। अगर श्री नारायणलालजी पित्ती या चि० रामनिवास कोई खाते में या व्याज उपजाने के लिए सव प्रकार से खातिरी करने पर थियेटर ले सकेंगे तो उन्हें ठीक व्याज उपजे, ऐसी इमारत मिल जायगी और श्री पुरुषोत्तमदासभाई कर्ज से मुक्त हो जायंगे और उनकी चिंता कम हो जाने से ठीक रहेगा। वर्तमान में भाड़ा आदि देखकर इमारत इंजीनियर से तपासकर वाजव कीमत आ सके तो आपसे वने उतना उद्योग करना। रामनारायण धर्मार्थ ट्रस्ट के लायक समझी जाय, तो उसका भी विचार करने को कहना। अगर चि० रामनिवास मसूरी चला गया हो, तो आप स्वयं कोशिश कर देखना। जो परिणाम आवे वह भाई पीतांवर को या त्रीकमदास सालीसिटर को कहला देना। अभी अगर वेचने का न हो सके और गिरवी की व्यवस्था ठीक तौर से हो सके तो उसका प्रयत्न करना भी ठीक रहेगा।

जमनालाल वजाज का वन्देमातरम्

: ५१ :

धूलिया-जेल,
जुलाई, १९३२

प्रिय केशवदेवजी,

श्री जयंत दलाल के पिता शिवलाल भाईलाल दलाल आपसे मिलेंगे। इन्हें नौकरी की आवश्यकता है। अगर कोशिश करके पूना मिल या फिनिक्स मिल या अपने किसी काम में अथवा दूसरी जगह जरूरत हो वहां व्यवस्था हो जाय तो बहुत ठीक रहेगा। श्री जयंत एक होनहार नवयुवक हैं। आर्थिक अड़चन के कारण उन्हें अगर नौकरी मिल जाय तो इनकी चिंता दूर हो जायगी। अगर नौकरी की व्यवस्था नहीं हो सके, तो भी उसके पिता से पूरा परिचय कर लीजिएगा। श्री शिवलालभाई को पूरा समय काम न मिल सके और कुछ थोड़ा समय भी काम दिया जा सके, तो भी प्रयत्न कर देखें।

अगर और कोई भी व्यवस्था न हो सकती हो तो जहांतक जयंत जेल में है, इन्हें रुपये ३०) मासिक सहायता मिल सके, ऐसी व्यवस्था कर दीजियेगा।

जमनालाल

श्री केशवदेव नेवटिया की ओर से—

: ५२ :

गोला गोकर्णनाथ
२३-१०-३२

प्रिय श्री जमनालालजी,

मिल का काम वैसे तो पूरा होने में आया है। एक एंजिन कूलिंग टैंक स्प्रे कलकत्ता से आनेवाला है। वह ८-१० रोज में आ जायगा। आने पर बैठ जायगा। बाकी कुछ पाइप उसीके आने के बाकी हैं। आर्डर कलकत्ते की बर्न एण्ड कंपनी को दिया हुआ है। उसने समय मांगा था। वे आते ही सब पूरा हो जायगा। मिल कार्तिक सुदी १३ के आसपास चालू करने का विचार आया था। उस समय तक गन्ना पेरने लायक हो जायगा।

अगर सलफर के लायसेंस[1] के व उपरोक्त कारण से कुछ देर हो सकती है। चि० रामेश्वर लायसेन्स के संबंध में मसूरी गया हुआ है। वहां से वह कल दिल्ली पहुंचेगा। मैं भी अभी दिल्ली जा रहा हूं। वहांपर श्री घनश्यामदासजी से सलाह करके उच्च अधिकारियों को उसके लिए लिखेंगे। दूसरी मिलों से कोई अंडरटेकिंग नहीं मांगी है। अतएव व्यापार की

---

१. जमनालालजी की कंपनी (बच्छराज कंपनी) ने उत्तर प्रदेश में गोला गोकर्णनाथ में शक्कर की मिल खोली थी। मिल में शक्कर को साफ करने के लिए सलफर—गंधक की जरूरत होती है। गंधक विस्फोटक पदार्थ बनाने में काम में लाया जाता है। उन दिनों उत्तर प्रदेश में क्रांतिकारियों की हलचलें तीव्र थीं। तत्कालीन उत्तर प्रदेश की सरकार द्वारा जमनालालजी की कंपनी की मिल से, जमनालालजी के राजनैतिक विचारों के कारण, सलफर का लायसेंस देने के लिए अंडरटेकिंग मांगी गई थी। इस संबंध में जमनालालजी ने जेल से अपने जो विचार भेजे थे, वे निम्न प्रकार हैं:

मिल बंद तो न की जाय। हरेक तरह से इसका लायसेंस लेने की कोशिश की जाय। होम-मेंबर, श्री सी० वाई० चितामणि, श्री एन० एम० मेहता आदि से मिल पर पूरी कोशिश की जाय। श्री केशवदेवजी इस विषय में श्री घनश्यामदास बिड़ला से मिलकर व और किसी दूसरे की मदद लेने की जरूरत समझें तो उनकी मदद लेकर इसकी कोशिश करें। ऊपर के अधिकारियों से मिलकर सब तरह की कोशिश की जाय। वहां के अफसरों से मिलकर व वहां के किसी वजनदार वकील, व्यापारी आदि से मिलकर वहां के आफिसरों के ऊपर वजन पड़े, ऐसा उपाय किया जाय। मुझे तो पूर्ण विश्वास है कि अगर कोशिश की जाय तो यह अड़चन दूर हो सकती है। श्री केशवदेवजी श्री घनश्यामदास बिड़ला से मिलकर पंडित मदनमोहन मालवीय की मदद लेकर भारत सरकार से भी कोशिश करें। श्री रामेश्वरदास बिड़ला श्री घनश्यामदासजी के नाम पत्र लिखकर दें

दृष्टि से भी देना ठीक नहीं मालूम होता। एक केमिकल का, जिसके द्वारा अच्छी चीनी (सलफर जितनी ही या उससे भी अच्छी) बनने की केमिस्ट की खातिरी है, विलायत को आर्डर दिया है। उसका नमूना तो १५-२० दिन बाद आ जायगा, मगर आर्डर का माल १।-१॥ महीने तक पहुंचने की धारणा है। वह आने पर तो सलफर के बिना भी काम चलाया जा सकेगा।

और फिर श्री केशवदेवजी श्री घनश्यामदासजी से मिलकर यू० पी० में किसी जान-पहचानवाले की मदद लेकर पहले तो नीचे के अफसरों से ही कोशिश करें। श्री लालजी मेहरोत्रा व उनके पिताजी की मदद की अगर जरूरत हो तो ली जा सकती है। अगर नीचेवालों से काम न बने तो फिर ऊपर के आफिसरों के पास कोशिश की जाय। अगर इस काम में श्री घनश्यामदासजी की मदद ली जाय तो मुझे पूरी खातरी है कि कोशिश करने से काम जरूर हो जायगा। जब दूसरे मिलवालों से ऐसी अंडरटेकिंग नहीं लेते हैं तो फिर केवल अपने से ही क्यों ली जाती है? वहां के अफसरों को कुछ ऐसी जंच गई दीखती है व उन लोगों को जिद हो गई। सो कोशिश करने से वह अड़चन दूर हो जायगी।

कोशिश करने में जितना समय लगे, तबतक दूसरी चीजों से काम चलाया जाय। इसमें अगर ५-१० हजार का नुकसान भी हो तो मिल को सहन करना चाहिए। श्री केशवदेवजी श्री घनश्यामदासजी से मिलकर उनकी राय लें कि यदि कोशिश करने पर भी काम न बने तो लिख कर दे दिया जाय? इस विषय में उनकी खास राय ली जाय।

मेरी राय में तो अगर कोशिश करने से भी काम नहीं हो तो सब तरह से प्रोटेस्ट करना चाहिए। अगर दूसरी चीजों से, कुछ नुकसान होकर भी काम चल जाय तो, उनका उपयोग किया जाय। इसमें कुछ नुकसान हो तो भी सहन किया जाय। अगर व्यापार की दृष्टि से भी देखा जाय कि दूसरे व्यापारियों से अंडरटेकिंग न लेकर किसी एक व्यापारी से ही ले तो

इस कंपनी से आपका सम्बन्ध है, अतएव लोगों में इस कंपनी के बारे में अच्छे या बुरे विचार हो सकते हैं। बाकी वैसे देखा जाय तो कंपनी के कामों का राजनीति से संबंध नहीं है। काम करनेवालों में भी

उसे अपनी इज्जत के लिए सबकुछ सहन करना चाहिए। इस प्रकार डरकर व लोभ में आकर अंडरटेकिंग देना उचित नहीं। इसके लिए सब तरह से लड़ना चाहिए। अगर आप इसमें डरेंगे तो अधिकारी लोग छोटी-छोटी बात पर हैरान करेंगे। मैं तो किसी दूसरे को भी इस प्रकार लिखकर देने की सलाह नहीं दूंगा। मुझे तो पूरा विश्वास है कि अगर कोशिश की जाय तो फिर यह अड़चन नहीं रहेगी।

अगर मेरे नाम के कारण कोई अड़चन आती हो तो मेरा नाम निकाल दिया जा सकता है। इस प्रकार नाम निकालना उचित तो नहीं है, लेकिन अगर बोर्ड उचित समझे और ऐसा करने से अगर शेयर होल्डरों का हित होता हो तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

मुझे तो इसमें भी कोई आपत्ति नहीं है कि अगर कोशिश करने पर काम नहीं हो तो कंपनी १२ महीने के लिए मिल चलाने के लिए किसी दूसरे को भाड़े पर दे देवे।

अगर मौका आ जाय व बोर्ड उचित समझे तो मुझे इसमें भी कोई आपत्ति नहीं है कि मेसर्स बच्छराज एण्ड कंपनी लि० मिल का अपना राइट किसीको बेच दे। कंपनी ने जो मेहनत की है उसकी व राइट बेचे, उसकी उचित रकम लेनेवाले से कंपनी ले ले। कंपनी के जो शेयर्स हैं उनको भी जिसे अपना राइट बेचे, उसे ही दे देवे। ये सब बातें तो अगर कोशिश करने पर भी काम न होता हो तो करने की हैं।

मेरी इच्छा यह नहीं है कि चीनी के काम में अकेला मैं ही कमाऊं। अगर अपने में से कोई भी पैसा कमावे तो मुझे संतोष है।

धुलिया-जेल —जमनालाल बजाज

१८-१०-३२

कोई ऐसा आदमी नहीं दिखाई देता, जो राजनीति में भाग लेता हो। संभव है कि किसीकी चुगली या गलत रिपोर्ट पर अंडरटेकिंग मांगी गई है। देखें क्या होता है? या तो उच्च अधिकारी लायसेंस देंगे, नहीं तो विना सलफर के चला लेना ही मैं तो ठीक समझता हूं। बाकी दिल्ली जाने पर निश्चय होगा।

यहां सब प्रसन्न हैं। चि० सुशील, कमला राजी-खुशी हैं। आशा है, आपका स्वास्थ्य व वजन ठीक होगा। कान की तकलीफ में कुछ लाभ हुआ होगा। आपने कंपनी के कुछ शेयर, डिबेंचर देने के लिए कहलाया था। मगर यह सलफर की दिक्कत दूर होने से वे लोग लेना चाहेंगे, तो देखा जायगा। क्योंकि इस समय देना ठीक नहीं रहेगा। आपके नाम के शेयरों में से तो नहीं दिये जा सकते। दूसरे या मेरे शेयरों में से दे दूंगा। फिर जो आपके हैं, उनमें से रह जायंगे।

आपका,
केशवदेव नेवटिया

श्री केशवदेव नेवटिया के नाम----

: ५३ :

अलमोड़ा,
३०-४-३३

प्रिय केशवदेवजी,

चि० श्रीगोपाल व हरीकृष्णजी के आये हुए तार भेजता हूं। हरीकृष्णजी का तार मुझे पसंद नहीं आया। उनका यह लिखना कि मैनेजर ने बेईमानी से २० हजार रुपये कम जमा किये, एक प्रकार से अपमानकारक है। या तो उन्हें यह बात प्रमाण आदि से साबित करनी चाहिए

या इस प्रकार लिखने के लिए विना शर्त माफी मांगनी चाहिए। अगर हमारे आदमियों की गलती है, तो उन्हें उचित सजा मिलनी जरूरी है। मैं मैनेजर की अप्रामाणिकता आदि की वातें सुनना नहीं चाहता। आप इस संबंध में पूरी तलाशी कर उचित न्याय कर दीजिएगा। हमारे आदमी की गलती हो तो उनसे लिखित स्वीकार कराना और अगर श्री हरीकृष्णजी की गलती हो तो उनसे लिखित माफी मंगवाना उचित समझता हूं। इस तरह के आरोप लगाने की हिम्मत विना पूरे सावूत के भविष्य में कोई भी न करने पाये, इसका पूरा ख्याल रखना होगा। मैंने श्री हरीकृष्णजी के नाम पत्र भेजा है। उसे पढ़कर अगर आप उचित समझें तो उन्हें दे देना व पत्र की नकल आप अपने पास रख लेना। भविष्य में इनके साथ किसी भी प्रकार का काम न करवाने की आज्ञा फिलहाल तो चि. रामेश्वर व नर्मदाप्रसादजी को दे देना। अपनी कंपनी का अगर कोई मुख्य उद्देश्य है या हो सकता है तो वह सच्चाई व आदर्श का व्यवहार करते हुए कम्पनी का व्यापार करने का है। अगर आप उचित समझें तो यह वात भी जवावदार कार्यकर्ताओं को भली प्रकार समझा दें। व यह वात साफ तौर से कह दें कि कंपनी का कोई भी कार्यकर्ता तौल, माप व अन्य प्रकार से झूठ या वेईमानी वगैरा करेगा तो कंपनी को उसे वाध्य होकर हटाना पड़ेगा, क्योंकि एक तो हमारे उद्देश्य के ही यह बात विपरीत है, दूसरे जो मनुष्य हमारे (कंपनी के) नीच स्वार्थ के लिए किसानों से या ठेकेदार मजदूरों से वेइमानी कर सकते हैं, वे मौका पड़ने पर अपना स्वार्थ साधने के लिए अवश्य कंपनी से भी वेइमानी किये विना नहीं रह सकते। इसीलिए मेरा तो यह साफ कहना है कि असत्य आचरण करनेवाले को कंपनी में जगह नहीं होनी चाहिए।

जमनालाल बजाज के वन्देमातरम्

श्री केशवदेव नेवटिया की ओर से----

: ५४ :

वम्बई,
२८-१२-३३

प्रिय श्री जमनालालजी,

श्री तिवारी के साथ पत्र मिले। जेवर की जांच कराके विका दिया जायगा। आपके आने की खास जरूरत नहीं मालम होती। श्री किशोर-लालजी मश्रुवाला का स्वास्थ्य वैसे ही है। श्री नीलकंठभाई को आपको खबर भेजते रहने को कह दिया है। इलाहाबाद से पत्र तो अभी नहीं आया है।

श्री लक्ष्मीनिवासजी की वीमा कंपनी के वारे में उनके यहां से पत्र आने से अन्य डायरेक्टरों से बात करके लिखूंगा। कलकत्ते में आपने बात की है, उसके अनुसार ५५०००) के विना बिके हुए व ७०,०००) के विड़ला ब्रदर्स के लिये हुए शेयरों में से इस प्रकार १। लाख के शेयरों की जवाब-दारी लेने की बात की है न? ऐसा हो तो ५५,००० में से नहीं विके उतने तथा ७०,०००) के दूसरे इतने शेयर अपनेको लेना हो, १०,०००) के आपने पहले लिये हैं वे अलग, सो २ लाख में से ये १,३५,०००) हो जाते हैं। इन शेयरों पर ५ वर्ष तक डिवीडेंड मिलने की आशा नहीं की जा सकती, सो इस कंपनी के डायरेक्टर इसे पसंद करें, ऐसी आशा नहीं होती। बाकी बात करके लिखूंगा। उन कागजों की नकल भी कराके कल भेजूंगा।

श्री आबिद अली की योजना के बारे में कल समाचार लिखे ही हैं। यदि कुछ जोखिम उठाने के लिए तैयार हों, तो इस प्रकार की कमी करके देखा जा सकता है। वाकी उस योजना पर तो विश्वास नहीं होता।

शुगर मिल में क्रशिंग वढ़ाने और किस्म अच्छी करने के लिए गोला को लिखा तो जा रहा है। बाकी श्री देसाई किसीको अपने से अधिक जानकार नहीं समझता। यह बड़ी अड़चन है। यदि वह ठीक नहीं कर सका, तो आगे इसका उपाय करना पड़ेगा। जावा के एक विशेषज्ञ को सलाहकार नियुक्त किया, मगर देसाई उससे शुरू में ही लड़ लिया। शुगर मिल के

विस्तार के बारे में भी अंतिम निर्णय करना है। यहां इसके डायरेक्टरों से बात करता हूं. फिर आपको लिखूंगा। चीनी के भाव गत वर्ष से अब १)-१।) मन मंदा हो गये हैं, तो भी फायदा कम नहीं है। अब तो ज्यादा कम होगा भी नहीं। चीनी मंदी होगी तो गन्ने का भाव और भी मन्दा हो सकता है।

आपका,
केशवदेव

श्री केशवदेव नेवटिया के नाम––

: ५५ :

वर्धा,
११-२-३४

प्रिय श्री केशवदेवजी,

आपका पत्र मिला। श्री गोविन्ददासजी से आपकी बातचीत हुई, वह मालूम हुई। मेरे ख्याल से बोर्ड के सामने स्थिति रख देनी चाहिए। अगर बोर्ड के ध्यान में न बैठे तो गोविंददासजी का काम श्री पालीरामजी या दूसरा कोई तैयार हो उनकी मार्फत करा देना चाहिए। श्री रामेश्वर-दासजी का पत्र मेरे पास भी आया है। उसे इसके साथ भेजता हूं।

आपकी तबीयत ठीक है, यह जानकर संतोष हुआ। श्री जानकीदेवी की तथा मेरी तबीयत भी कुछ नरम हो गई है। बुखार, खांसी, जुकाम हो गया था। चिंता की जरूरत नहीं है।

चि. रामेश्वर को बुलाया है, सो ठीक है। कब आयगा? शक्कर मिल के बारे में मेरे विचार तो आपको पूर्णतया मालूम हो ही गये हैं। श्री कापड़िया से आप मिले, यह ठीक किया। उन्हींकी सलाह से शेयर निकालना ठीक रहेगा, ऐसा मालूम देता है। मैं अब इसका विचार न करके सब भार आप व बोर्ड पर छोड़ देना ही ठीक समझता हूं। जो कुछ करना हो

वहुत जल्दी कर लेना चाहिए। अगर कार्य वढ़ाना ही है, तो मौसम हाथ में आनी ही चाहिए।

जमनालाल का वन्देमातरम

श्री केशवदेव नेवटिया की ओर से--

: ५६ :

वम्वई,
१०-७-४१

प्रिय श्री जमनालालजी,

श्री जाजूजी को एक पत्र दिया है, उसकी नकल भेजता हूं। इस समय चर्खा-संघ के सिवाय सावरमती-आश्रम के खाते में ३० हजार से ज्यादा रकम जमा है। ५३ हजार अंदाज़ है। कंपनी ने चालू खाते पर ३ टका व्याज देना चालू रखा है। मगर जव इसकी तरफ रकम लगने का सुभीता नहीं रहता तव जिन खातों में ३० हजार से ज्यादा जमा होता है, उनको ज्यादा रकम पर ।। टका जो वैंकों से मिल सकता है, दिया जाता है।

वैसे तो मैं चाहता हूं कि सार्वजनिक कोषों की रकम कंपनी में जमा न रखी जाय, बाकी चालू खातों में से तो किसीकी भी ज्यादा रकम जमा रखना ठीक नहीं लगता। अच्छे व्याज के लिए व सुरक्षा के लिए कंपनी में रकम जमा रखी जाती है। बाकी दूसरी तरफ भी अच्छा व्याज मिल सकता हो, तो प्रयत्न करना चाहिए। आप ठीक समझें तो पूज्य महात्माजी से इस वारे में चर्चा करना। खाते चालू रखना हो तो जिन रकमों को अधिक समय तक रखना हो उन्हें फिक्स करा लेना चाहिए। फिक्स में रखने से समय-समय पर जिन लोगों को इन कोषों का प्रवंध देखना है, उन्हें कुछ विचार करने का मौका मिलता रहेगा।

आपका,
केशवदेव

: ५७ :

बम्बई,
११-७-४१

प्रिय श्री जमनालालजी,

नासिक में आपसे आल इंडिया स्टेट्स पीपल कांफरेंस के बारे में बात हुई थी। ता० ७ जून को इमरजेंसी कमेटी की मीटिंग हुई थी, उसमें श्री ठक्कर बापा भी थे। श्री मेनन ने बताया था कि पंडित जवाहरलालजी नेहरू ने लिखा है कि अखबार बंद नहीं होना चाहिए। श्री वज़े को संपादक का कार्य देने के बारे में उन्होंने पूज्य बापूजी की भी राय बताई थी। श्री वज़े ने जून में होनेवाली उनकी सोसायटी की मीटिंग तक संपादन में मदद करना और आगे सरवेंट आफ इंडिया सोसायटी की मीटिंग स्वीकार करें तो चालू रखना स्वीकार किया था। अतएव इमरजेंसी मीटिंग ने यह निश्चय किया कि श्री वज़े को लिखा जाय कि वह संपादन के काम में मदद करना चालू रखें और संभव हो तो पूरी जवाबदारी ले लेवें। श्री ठक्कर बापा या श्री मेनन ने यह भी बताया था कि श्री वज़े को "ओनरे-रियम" दिया जाय तो वे मासिक रुपया १००) से कम लेना पसंद नहीं करते। अतएव यह भी निश्चित किया गया कि वह अपना नाम एडिटर इन-चार्ज, मुख्य संपादक, की तौर पर पत्र पर देना स्वीकार कर लें, उस तारीख से उन्हें १००) मासिक "ओनरेरियम" दिया जाय।

सौराष्ट्र ट्रस्ट वालों ने आगे सहायता देना बंद कर दिया है। उनके यहां उनके ही दिये हुए २००० रुपये फिक्स जमा हैं। वे लेकर पेपर चलाने में लगाना और किसी कारण से वे न देवें तो दूसरे रुपये इकट्ठे करने का यत्न करने का निश्चय किया था। अब श्री वज़े ने तो जवाबदारी लेना स्वीकार कर लिया है और सौराष्ट्र ट्रस्ट वालों ने वे २००० रुपये मुद्दत से पहले देने से इंकार कर दिया है।

इस समय खर्चा ५०० रुपये मासिक तक इस प्रकार है :—

२००)	पेपर का	श्री वज्रे को	छपाई	फुटकर	
		१००)	८०)	२०)	
३००)	श्री मेनन	श्री काचरू	क्लर्क	प्यून	फुटकर
	७५)	७५)	५५)	२०)	७५)

———

५००)

ता० ३१-१२-४१ तक के लिए १ वर्ष तक २००-२५०) मासिक देने के लिए आपने कहा था। इनमें १०००) श्री जगजीवन को और २०००) हमको इकट्ठा करना था। श्री जगजीवन ने ५००) व हमने १०००) अभी तक दिये हैं। बाकी उतना ही और देना है तथा २००) मासिक की पत्र की जवाबदारी बढ़ गई है।

इस बारे में आपकी क्या राय है? पत्र और आफिस खर्च चालू रखना आवश्यक है या नहीं। इमरजेंसी कमेटी की मीटिंग फिर बुलाकर इसपर विचार करने के पहले आपकी और संभव हो तो पूज्य महात्माजी की राय मालूम हो जाय तो ठीक है।

जो १०००) दिये हैं वे एक वार तो कंपनी में से ही दिलाये हैं। दूसरे भी इसी प्रकार देने होंगे। आप जानते हैं कि मैं दूसरों से किसी भी काम के लिए सहायता प्राप्त नहीं कर सकता। इस काम के लिए मैं बिलकुल अयोग्य हूं।

आपका,

केशवदेव नेवटिया

: ५८ :

बम्बई,

५-८-४१

प्रिय श्री जमनालालजी,

हम नासिक से कल यहां आ गये थे। आपसे रविवार रात को फोन पर बात की थी। मुकुन्द का लाहौर का कारखाना १२ लाख तक, यदि

उसमें से इन्कम टैक्स एक्सेस प्रोफिट टैक्स न कटे तो, वेचने की राय हुई थी सो बताया ही था। आज सुवह चि० रामेश्वर का कानपुर से फोन आया। उससे पता चला कि डालमियाजी ने १० के वदले ११ लाख देना कवूल किया और आपकी व श्री रामेश्वरदासजी की राय दे देने की थी, मगर टैक्स रद्द करने के वारे में संदेह रह जाने के कारण सौदा नहीं किया। आज यहांपर मि० दलाल से पूछा। उनकी राय में दोनों जगह के कारखाने वेच दिये जायं, तो टैक्स नहीं लगे। मगर एक जगह का ही बेचने से टैक्स मांग सकते हैं और वह लगे या नहीं, यह कोर्ट की राय पर निर्भर है। इस वारे में और भी पूछताछ कर रहे हैं। टैक्स न कटे तब तो विचार करने जैसा प्रस्ताव है। टैक्स लगने का खतरा मालम हो तो विचार नहीं किया जा सकता।

आपका,
केशवदेव

श्री रामेश्वरप्रसाद नेवटिया के नाम—

: ५९ :

बम्बई,
१२-६-२८

प्रिय चि० रामेश्वर,

मैं रेवाड़ी, मेवाड़, विजोलिया, साबरमती, होकर आज यहां पहुंचा। तुम्हारा सविस्तर पत्र कल मुझे साबरमती में मिला। यहां आने पर दूसरा पत्र मिला। पढ़कर संतोष हुआ। तुमसे मैंने जिस प्रकार की आशा रखी है, उसी प्रकार का तुम्हारा निःसंकोच व सरल व्यवहार देखकर सुख होता है। तुम्हारा संकोच कम करने में, तुमने लिखा कि मेरा हाथ है, सो मैं तो इसे आगे के लिए भी स्वीकार करने को तैयार हूं। तुम्हें अथवा जिसे मैंने अपना मान लिया और जिसके साथ मेरा प्रेम संबंध है, मेरी

हमेशा यह इच्छा रही है और रहेगी कि वह हमेशा मेरे हृदय के नज़दीक रहे। और यह उसी समय हो सकता है जब बिना संकोच सत्य का आदर्श सामने रखते हुए परस्पर व्यवहार की आदत रहे। मेरी राय में तो किसी-से भी संकोच रखना एक प्रकार का उसके साथ असत्य व्यवहार करना है। परंतु उनके साथ, जिनके प्रति संकोच निकालना हो तो, विनय व प्रेम का अभ्यास भी खूब बढ़ाना चाहिए, जिससे नये लोगों से व्यवहार करने में गलतफहमी व रूखापन न आने पावे।

चि० कमला तथा उसकी माता यहां से एक-दो रोज में साबरमती चली जायंगी। वहां से भरोसे के आदमी के साथ सीकर भेज दी जायंगी। वहां १-२ रोज रहकर फतेहपुर पहुंच जायंगी।

तुम्हें अभी तो कलकत्ता ही भेजने का विचार है। परमात्मा ने किया तो भविष्य उज्ज्वल ही होगा। तुम ईश्वर पर खूब श्रद्धा रखते हुए सिद्धांतों पर अटल रहने का अभ्यास रखो। विकट परिस्थिति से ही मनुष्य खुद अपनेको सुधार सकता है, ऐसा मेरा अनुभव है। तुम्हारा पत्र कमला व उसकी माता को दिखाया है।

जमनालाल का वन्देमातरम्

: ६० :

चि० रामेश्वर,

थोड़ा-थोड़ा शेयर लेने-बेचने का काम भी किया करना, जिससे सीखने को भी पूरी तरह से मिले व शेयरों की तेजी-मंदी का जो ध्यान तुमने दिलाया, वह बराबर है इसका भी तुम्हें विश्वास होता रहे।

श्री घनश्यामदासजी से मैं बात कर लूंगा। परंतु मैं समझता हूं कि जैसा श्री केशवदेवजी ने लिखा है, तुम्हारा बंबई में ही निश्चित रूप से काम करना ठीक रहेगा। शेयर बाजार का काम सीख जाने से, आशा है, वहां का काम धीरे-धीरे आगे बढ़ेगा। श्री बद्रीनारायणजी की यात्रा के बारे में तुम व श्री केशवदेवजी पूरी तरह से विचार करने के बाद घर

के लोगों को पूछना। परंतु ठीक समझो तो ही पूछना, अन्यथा नहीं। कमला के बारे में भी विना संकोच उसकी व तुम लोगों की जो स्वतंत्र इच्छा हो, उसके अनुसार ही निर्णय करना व मुझे तार से खबर करना। उसकी अधिक इच्छा या आग्रह हो तो उसे भेजना ठीक रहेगा, अन्यथा नहीं। तुम तो खर्च वगैरा वहुत ही कम करते हो। चि० कमला अभी बालक है। मैंने उसे समझाया तो है। तुम भी बरावर समझाते रहना कि खर्च बहुत कम करने की आदत हरेक में होनी चाहिए। इसकी ज्यादा जवाबदारी तुम्हारे ऊपर है। कई मित्रों का कहना है कि छोटे बालक को बद्रीनारायण ले जाने से तकलीफ रहेगी। कलकत्ता में और तलाश करना और तकलीफ मालूम पड़ी तो छोटे बालकों को ले जाना ठीक न होगा।

श्री किशोरलालभाई मश्रूवाला व श्री गोमतीवहन का स्वास्थ्य कैसा है? क्या वह शांताक्रूज में अपने बंगले में ही रहते हैं? तुम बीच-बीच में उनसे मिल लिया करना और उनकी मुझे सूचना देते रहना। श्री घीसूलालजी (ब्यावरवालों) को दिये नोटिस का जवाव न आवे तो नालिश कर देने को कहना।

जमनालाल का आशीर्वाद

श्री रामेश्वरप्रसाद नेवटिया की ओर से—

: ६१ :

कलकत्ता,
५-११-२९

पूज्यवर,

सप्रेम प्रणाम। आपको एक पत्र आज मेल से दिया है।

आज शेयर बाजार में जोर की अफवाह है कि श्री नरोत्तम मोरारजी ने आत्मघात कर लिया। आत्मघात करने का कारण शोलापुर मिल में

फिक्सड डिपोजिट में लोगों की रकम जमा है वह मुद्दत पकने पर न लौटा सके, ऐसा बतलाते हैं। आत्मघात की बात सच्ची है या नहीं सो पता नहीं लगा है। सिंधिया के शेयरों का भाव १।। रुपया घट गया। यदि खबर पक्की होने की सूचना मिली तो आपको तार कर दूंगा। रूई के बाजार में भी अफवाह है कि नरोत्तम मोरारजी के आत्मघात के कारण उनकीं जो गांठें पोते थीं वे बेची गई हैं। जो गांठें बेची गई हैं, वे आत्मघात के कारण बेची गई हैं या ऐसे ही, इसकी पक्की खबर न मिलने से आपको तार नहीं किया जा सका।

५०,००० रुपये गांधी सेवा संघ खाते इंडिया बैंक में ५ टका से जमा करा दिये हैं। गुजरात प्रांतिक समिति का पत्र लेकर मैं ग्रेग के पास गया था। उसने खूब राजनैतिक तथा इधर-उधर की बातें हँसकर कीं उसने कहा कि जो रकम एक बार फिक्सड डिपाजिट में ४।। टके से जमा कर दी गई उसको मुद्दत जबतक पूरी न हो जाय तबतक बीच में उनके व्याज की दर कैसे घटाई बढ़ाई जा सकती है। उसने कहा कि ४।। टका से फिक्सड डिपाजिट है, यदि बैंक ४। कहे तो कबूल करोगे? मैंने कहा कि यह तो कैसे कबूल किया जा सकता है। उसने कहा कि फिक्सड डिपाजिट एक कंट्राक्ट है। कंट्राक्ट में जो शर्तें हो गईं सो हो गईं, उनमें हेर-फेर नहीं किया जा सकता। मैंने कहा खैर पीछे जो हो गया सो हो गया; बाकी आगे के लिए श्री महात्माजी और श्री जमनालालजी का जिन संस्थाओं से संबंध है, उन सबको ५ प्रतिशत आप दे सकेंगे या नहीं। इसपर उसने कहा कि ऐसी गारंटी मैं नहीं दे सकता। मैंने कहा कि इंडिया बैंक में सार्वजनिक संस्थाओं का करीब दस लाख से अधिक पैसा आप जमा कराते हैं। इसका मतलब यह है, कि इंडिया बैंक में सार्वजनिक संस्थाएं अधिक विश्वास करती हैं। यह इंडिया बैंक के लिए प्रतिष्ठा बढ़ाने लायक बात है। रकम इतनी जमा कराई जाती है यह देखते हुए बैंक को भी व्याज की कुछ-न-कुछ अधिक सुविधा सार्वजनिक संस्थाओं को देनी चाहिए। उसने हँसकर कहा कि 'आप हिंदुस्तानी लोग' फिर कहा कि 'आप अल्ट्रा-

इंडियन्स' लोग बैंक से सब तरह की सहूलियत चाहते हैं, लेकिन मौका पड़ने पर बैंक की मदद को कोई नहीं आयेगा।" मैंने कहा, यह कैसे हो सकता है? स्वर्गीय रामनारायणजी रुइया ने कितनी मदद बैंक की की है। श्री जमनालालजी भी उनके मित्र ही हैं। इसपर उसने कहा कि श्री जमनालाल-जी तो मेरे मित्र भी हैं। अंत में उसने कहा कि तुम मुझे एक चिट्ठी लिखकर भेज देना, जिसमें कि गुजरात प्रांतिक समिति की रसीद हो तथा उसके नंबर और विवरण हो, सो चिट्ठी पहुंचने पर मैं अहमदाबाद ब्रांच के मैनेजर को लिख दूंगा कि रिन्यू करते समय पांच टका ब्याज दे दें।

श्री रणछोड़दासजी गांधी मुझसे मिले नहीं हैं। श्री नीलकंठजी से पूछ लूंगा कि आयंगे या नहीं आयंगे। आयंगे तो आपके लिखे अनुसार काम जिम्मे कर दिया जायगा।

मन्दिर व अन्य ट्रस्टों के बारे में दिवेकर से कल मैं मिला था। मन्दिर के संबंध में उसने कल जाजूजी को पत्र दिया है. सो आपने आज देखा होगा। मंदिर की मीटिंग की कार्यवाही पढ़कर समझाने के लिए उसने बुलाया है, सो पडवेकरजी को भेज दूंगा, वह समझा आयंगे। तबतक श्री जाजूजी से पक्का जवाब भी आ जायगा।

फ्रंटियर कांग्रेस कमेटी को पत्र भेजा है। ५०० रुपये की पहुंच ता० २२ अक्तूबर को लिख दी गई थी।

आपका,
रामेश्वर

: ६२ :

कानपुर,
२०-४-३२

पूज्य श्री बच्छराजजी जमनालाल,

आपका एक तार परसों आया था। मुझे हरदोई भेजकर कमलनयन की भूख हड़ताल छुड़ाने के लिए लिखा, सो मैं कल हरदोई गया था। वहां

श्री छेदीलालजी गुप्त, श्री शम्भूनाथजी आदि अन्य कांग्रेसवालों से दरियाफ्त करने से मालूम हुआ कि कमलनयन ने भूख हड़ताल छोड़ दी है। जेल के सुपरिंटेंडेंट से भी मिला। उसने भी कहा कि अब कमलनयन हड़ताल पर नहीं है। सुपरिंटेंडेंट ने सोमवार को बंबई तार भी दिया है। बंबईवालों ने यह बात आपको लिख दी होगी।

भूख हड़ताल का कारण यह था कि यू० पी० गवर्नमेंट ने ५० राजनैतिक कैदी इलाहाबाद, कानपुर आदि की तरफ के, जो जेल के नियमों को नहीं मानते थे, छांटकर हरदोई-जेल भेजे हैं, क्योंकि हरदोई-जेल सख्त मानी जाती है। सुपरिंटेंडेंट खुद यह बात कहता था कि गवर्नमेंट हरदोई के जेलर को अच्छा समझती है, क्योंकि वह सख्त है। उन पचास में से एक कैदी को, जो परेड आदि के नियमों को नहीं मानता था, जेल-वालों ने बेंतों से पीटा। इस कारण उन पचास में से पांच-सात ने हड़ताल की थी। कमलनयन ने भी उनके साथ भूख हड़ताल की। तीन दिन तक यह हड़ताल रही। कोई नतीजा नहीं निकला, इससे सबने छोड़ दी। सुपरिंटेंडेंट आदि ने कमलनयन को समझाया कि सबने भूख हड़ताल छोड़ दी है, तब उसने भी छोड़ दी।

सुपरिंटेंडेंट अच्छा आदमी है। हिंदुस्तानी डाक्टर है। जेलर वैसे बदमाश है। लेकिन कमलनयन के साथ व्यवहार अच्छा सुनने में आता है। मुलाकात के विषय में मैंने सुपरिंटेंडेंट से पूछा। उसने कहा कि मिल सकते हो, लेकिन बाद में फिर तीन माह बाद ही मुलाकात हो सकेगी। तीन महीने बाद मुलाकात होती इससे मैं अभी नहीं मिला।

दो दिन हुए हरदोई-जेल से एक लड़का छूटकर आया है। उससे हरदोई के कांग्रेसवालों को मालूम हुआ है कि कमलनयन की तबियत साधारणतया ठीक न होने की वजह से उसे अस्पताल में रखा था। अब अस्पताल से वापस जेल की कोठरी में ले आये हैं। थोड़ा दूध और चावल भी देते हैं।

सुपरिंटेंडेंट कहता था कि उसे खाना पीना बराबर पचता नहीं है

और वजन घट गया है। हरदोई के कांग्रेसवाले उसे बी० क्लास में कराने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन अभी तक कुछ नहीं हो सका है।

कमलनयन ने भूख हड़ताल खूब सख्त की थी। श्री छेदीलालजी गुप्त कहते थे कि दूसरे लोगों ने पानी पीना तो चालू रखा था, लेकिन उसने पानी भी नहीं पिया।

उसे जेल में आजकल कोई काम नहीं दिया जाता है। पहले सफाई का काम दिया गया था, लेकिन श्री छेदीलालजी कहते हैं कि अब दूसरे कैदियों पर निगरानी रखने का काम सौंपा गया है। सुपरिंटेंडेंट आदि का व्यवहार उसके साथ अच्छा है, इससे चिंता की बात नहीं है। बाकी खाना-पीना माफिक नहीं आता, इससे कमजोरी रहेगी।

अबकी बार उससे कब मुलाकात की जाय तथा कौन-कौन मिलेगा, यह समाचार गोला लिखियेगा।

आपका,
रामेश्वर

श्री रामेश्वरप्रसाद नेवटिया के नाम—

: ६३ :

वर्धा,
२२-७-३५

प्रिय रामेश्वर,

इस पत्र के साथ श्री फुलाभाई का पत्र है। गुजरात कालेज से इन्होंने बी० एस-सी० फर्स्ट क्लास में पास किया है। इनका खास विषय केमिस्ट्री रहा है। इनके पत्र से सब हाल मालूम होंगे। श्री वल्लभभाई व श्री मोरारजीभाई आदि ने इनकी प्रशंसा की है। आदमी

मेहनती व लगन के हैं। इनको अपने वहां काम सिखाना है। छात्रवृत्ति तो देनी ही होगी। दूसरा पत्र है, अलख निरंजन प्रसाद का। श्री राजेन्द्रबाबू तथा अन्य लोगों ने इनकी सिफारिश की है। इनको नौकरी चाहिए। मुझे पता नहीं इनके लिए तुम्हारे यहां कोई स्थान रिक्त है या नहीं? अगर तुम इनका उपयोग कर सको, तो इनको तथा मुझे लिखना।

दूसरे दो छात्र हैं—(१) सुचेतादेवी (बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी की प्रोफेसर) के भाई हैं। उसने इस वर्ष बनारस यूनिवर्सिटी से बी० एस-सी० पास किया। केमिस्ट्री ही इनका भी विषय था। इनको भी काम सीखने के लिए रखने की व्यवस्था करनी है। अपने यहां मिल से जो छात्रवृत्ति दी जाती है, उसमें से इनको दी जायगी।

(२) श्री दादा धर्माधिकारी (नागपुरवाले) आजकल यहां सार्वजनिक कार्य में लगे हैं। उनके छोटे भाई ने भी इस वर्ष एम० एस-सी०, इंडस्ट्रियल केमिस्ट्री के साथ, पास किया है। इनको भी मौका देना है। इनसे दादा को बहुत आशा है। इनको भी छात्रवृत्ति देनी है।

फुलाभाई, जिनका जिक्र ऊपर किया है, आगे चलकर गुजरात में काम करने का इरादा रखते हैं। परन्तु धर्माधिकारी तो मेरे ख्याल से आगे अपने यहां उपयोगी साबित हो सकते हैं।

उपरोक्त तीनों छात्रों में से किन-किनको तुम छात्रवृत्ति दे दोगे, यह लिखना, जिससे जिनको तुम छात्रवृत्ति न दे सको उनके लिए अलग प्रबंध किया जाय

श्री सुंदरलालजी कह रहे थे कि उनके भाई के विषय में उन्होंने तुम्हारे साथ कुछ बातें की हैं। उन्होंने भी इस साल बी० एस सी० प्रथम वर्ष पास किया है। उनको भी काम सीखने का मौका देना होगा। परंतु उनके लिए छात्रवृत्ति की जरूरत नहीं है: वह स्वयं अपना खर्च निभा लेंगे।

अपने यहां छात्रवृत्ति २५ रुपया मासिक दी जाती है न?

जमनालाल का आशीर्वाद

: ६४ :

वर्धा,
३१-७-३५

प्रिय रामेश्वर,

तुम्हारा २८-७ का पत्र मिला। श्री देसाई के लौटने पर अंतिम निर्णय करने को लिखा सो तुम्हारा कहना तो ठीक है, परंतु श्री देसाई को सेंसिटव तो नहीं होना चाहिए। देसाई से पूछ लेना ठीक है। बाकी यह योजना तो इसी ढंग से बनाई गई है कि जो लड़के इस प्रकार ध्यान में आयें उनको प्रशिक्षण दिया जा सके। देसाई का आग्रह मैं मान सकता हूं कि जो उनका अनुशासन नहीं माने वह उसकी जिम्मेदारी नहीं ले सकते। विद्यार्थी के निर्णय का अधिकार तो अपने हाथ में ही होना चाहिए। नौकरी में लेने की वात दूसरी है। अगर देसाई के हाथ से तैयार होकर दस-वीस लड़के हिंदुस्तान के चारों ओर कार्य करने लग जायं तो इसमें मिल तथा देसाई दोनों की ही प्रतिष्ठा है। अबकी बार जिन्हें भेजने का विचार किया गया है, वे तो अनुशासन का पालन करेंगे ही। गनी का तो अपवादरूप केस था।

दोनों मिलों में एक डाक्टर रखने की वात मैंने नहीं लिखी थी। या तो मेरे लिखने में भूल हुई या तुम्हारे पढ़ने में। मतलब तो यह था कि एक में योग्य महिला डाक्टर हो व एक में योग्य पुरुष डाक्टर हो। दोनों मिलकर इस प्रकार योजना कर सकें तो अच्छा है। परन्तु इस बारे में मेरा कोई आग्रह नहीं है।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

: ६५ :

वर्धा,
२०-१२-३५

चि० रामेश्वर,

मेरा पत्र मिला होगा। श्री केशवदेवजी के पत्र से मालूम हुआ कि मिल तो ठीक चल रही है, परन्तु गन्ने में से रस का परसेंटेज कम बैठ रहा है। आशा है कि परसेंटेज बढ़ा होगा। हरगांव और गोला में परसेंटेज का इतना फरक रहने से आश्चर्य मालूम होता है। पीलीभीत व आस-पास की शक्कर मिलों में परसेंटेज की तपास तो रखते ही होगे। मुझे भी लिखा करो। क्या केवल गोले के आस-पास का ही गन्ना खराब हुआ या और भी आस-पास का ?

चि० गनी आज यहां से रवाना होकर गोला आ रहा है। उसको मैं जितना समझा सका उतना समझाने की कोशिश की है। वाकी तुम तो ख्याल रखोगे ही। श्री देसाई को कहना कि उसको काम करने लायक बनाने की पूरी कोशिश करें और उसका बालक स्वभाव समझकर उसकी कभी भूल हो तो उसका अधिक ख्याल न करें। उसे प्रेम से समझाते रहें। जब तक गनी जवाबदारी का काम करने लायक नहीं बन जाता, तबतक पूज्य बापूजी की, खांसाहब की व मेरी चिंता कम नहीं हो सकती, यह तो तुम पूरी तरह जानते ही हो। जब तुम बरेली जाओ तब गनी के साथ खान-साहब से मिलने का ख्याल जरूर रखना और उनको जेल में फल वगैरा मिलते रहें, उसका ध्यान रखना। मैं संतरे यहां से भेजता रहूंगा।

श्री फुलाभाई तथा धर्माधिकारी अपना काम ठीक रस लेकर करते होंगे ?

जमनालाल का आशीर्वाद

श्री रामेश्वरप्रसाद नेवटिया की ओर से—

: ६६ :

गोला,
२६-१२-३५

पूज्यवर,

सप्रेम प्रणाम !

इन दिनों आपके तीन-चार पत्र मिले। इन १०-१२ दिनों में यहां काम ज्यादा रहा। इससे उत्तर देने में देरी हो गई, क्षमा करें।

आपका ता० २०-१२-३५ का पत्र जिस रोज मुझे मिला, उसी रोज श्री गनी यहां पहुंचे। उन्होंने पहुंचने का पहले कोई तार नहीं दिया था। उनके रहने, खाने-पीने आदि की अच्छी तरह व्यवस्था हो गई है। श्री गनी के वारे में श्री देसाई से मैंने बातचीत की है।

श्री फुलाभाई व श्री धर्माधिकारी से कभी-कभी मिलना हो जाता है। उनके कार्य के वारे में श्री देसाई की राय उनसे जानकारी लेकर लिखूंगा।

ता० ५ दिसम्वर को इस तरफ की मिलों की मीटिंग हुई थी, लेकिन उसमें श्री गणेशशंकरजी विद्यार्थी के स्मारक के संवंध में बातचीत करने का मौका नहीं मिला। ५-१० दिन में एक बार पीलीभीत बरेली जाकर मिल-मालिकों से मिलकर अवश्य कोशिश करूंगा।

आपने एक गुमनाम पत्र भेजा, सो मिला। स्टाफ की सुविधाओं का ख्याल जहांतक हो सकता है, रखता हूं। आस-पास की मिलों की अपेक्षा इस मिल में करीव दूने क्वार्टर हैं। छुट्टियों आदि की सुविधा भी ज्यादा है। वेतन भी नीचे के स्टाफ का औरों के मुकावले में उनसे ज्यादा है। हरगांव में कुली को ७) मासिक देते हैं यहां ८॥) मासिक। पिछली साल कई कारणों से मिल में आदमियों की संख्या ज्यादा हो गई थी, वह इस साल घटा दी गई है। पर वह भी इस तरह घटाई गई है कि रिट्रेंचमेंट किया गया है, ऐसा मालूम नहीं होता। हरएक डिपार्टमेंट के पूरे सहयोग से खर्चा कम

किया गया है। काम करनेवालों का वेतन प्राय: कम नहीं किया गया है। आदमियों की संख्या में ही कमी की गई है। हरएक को खुश रखना तो मुश्किल है। पर जिस शख्स ने यह पत्र लिखा है. उसका नाम मुझे मालूम हो जाय तो उसकी भी वाज़िव शिकायत दूर करने का प्रयत्न किया जायगा।

दूसरी कई मिलों की अपेक्षा, जो कि इस मिल के जितनी या इससे ज्यादा सुव्यवस्थित चल रही हैं, अपनी इस मिल में अव भी खर्चा ज्यादा है। उसे कम करने का मुझे पूरा ध्यान है। जैसे-जैसे स्थानीय आदमी हर डिपार्ट-मेंट में ट्रेन्ड होते जायंगे वैसे-वैसे खर्चा कम होता जायगा।

परसेंटेज के बारे में आपने लिखा, सो गन्ने की किस्म खराव नहीं है। नववंर के महीने में केमिस्ट डिपार्टमेंट का काम ठीक नहीं हुआ, इससे पर-सेंटेज कम रहा। दिसंवर के शुरू से परसेंटेज ठीक आ रहा है। आस-पास की दूसरी मिलों में जो परसेंटेज आता है, उसका मैं पूरा ध्यान रखता हूं।

पूज्य बापूजी का स्वास्थ्य अव पहले से ठीक होगा, श्री कमला नेहरू का स्वास्थ्य चिंताजनक होने की अखवारों में खवर है। आज के अखवार में, कुछ सुधार है, ऐसा लिखा है। उनके भाई श्री कौल (सीतापुर बैंक के एजेण्ट) यहां आये थे।

रामेश्वर का प्रणाम

: ६७ :

गोला,

२४-२-३७

पूज्यवर,

सप्रेम प्रणाम !

आपका पत्र मिला। आपने लिखा कि आप अप्रैल में यहां आने की कोशिश करेंगे, जानकर खुशी हुई।

आपने लिखा कि काफी परिवर्तन करना होगा, अथवा बच्छराज कम्पनी को चाहिए कि मिल का मैनेजमेंट दूसरों को सौंप दे, सो परिवर्तन करना आवश्यक है, लेकिन अच्छे मैनेजमेंट की दृष्टि से दूसरों के हाथ में मैनेजमेंट देना आवश्यक है इसे मैं नहीं मानता। सिधौलिया शुगर मिल में, जिसका मैनेजमेंट श्री ब्रजमोहनजी बिड़ला के हाथ में है, तीन साल तक काफी नुकसान रहा। कई केमिस्ट और इंजीनियर बदले गये। एक केमिस्ट, जो बहुत होशियार और देसाई आदि का गुरु माना जाता है, उसे वहां रक्खा गया। लेकिन फिर भी काम बहुत खराब रहा। पिछले साल से वह मिल बहुत अच्छी चल रही है । श्री डालमियाजी की रोहतास शुगर मिल का काम भी तीन साल तक खराब रहा। लेकिन मैनेजमेंट बदलने का विचार उनके मन में नहीं आया। इस साल तो मिल भी ठीक चल रही है। पीलीभीत वालों की एक मिल बरेली में है। श्री प्रधान, केमिस्ट, जो शुरू में बंबई में आपसे मिले थे और जिनके कहने से सी०पी०में शुगर मिल के प्रासपेक्ट्स के बारे में जांच की गई थी, वह बरेली में चार साल तक चीफ केमिस्ट रहे। शुगर लाइन में उनका काफी नाम है। लेकिन जबतक वह बरेली फैक्टरी में रहे फैक्टरी का काम बहुत खराब रहा। पीलीभीत फैक्टरी का बहुत अच्छा रहता था। अब पिछली साल उन्होंने श्री प्रधान को छोड़ दिया और एक साधारण केमिस्ट रखा है और काम ठीक चल रहा है।

मैंने ये बातें आपको इसलिए नहीं लिखीं कि यहां के काम की मैं तरफदारी करना चाहता हूं। गत वर्ष यहां का काम जैसा रहा है उसके लिए यहां के मैनेजमेंट को शर्म मालूम होनी चाहिए । लेकिन पिछले साल काफी परिवर्तन क्यों नहीं किया गया, इसका कारण आपसे मिलना होगा तब मैं आपको बतलाऊंगा। मैनेजमेंट की जो कसौटी आपकी है उस हिसाब से तो हिंदुस्तान में आठ-सात शुगर मिलों के सिवाय बाकी सबको मैनेजमेंट छोड़ देना चाहिए, क्योंकि ऐसी बहुत कम मिलें हैं, जिनका कार्य इस मिल के जितना या इससे ज्यादा खराब, किसी-न-किसी साल, न रहा हो। इंजीनियर, केमिस्ट आदि बदलते-बदलते अब अधिकांश मिलों में ठीक लोग

जंच गये हैं। इस तरह का प्रयोग करने की मेरी हिम्मत पिछले साल क्यों नहीं हुई, सो मिलने पर मैं आपको बतलाऊंगा।

आपका पत्र पढ़कर मुझे काफी दुःख हुआ है। इसलिए मैंने इस तरह का पत्र लिखा है। आशा है, आप इसका विचार न करेंगे।

रामेश्वर का प्रणाम

श्री रामेश्वरप्रसाद नेवटिया के नाम----

: ६८ :

सीकर,
२६-९-३९

प्रिय रामेश्वर,

तुम्हारा नोट श्री केशवदेवजी के पत्र के नीचे लिखा हुआ देखा।

इधर अकाल बहुत भयंकर है। ऐसी हालत में कुछ लोगों को यहां राजस्थान से बाहर भेजना जरूरी मालूम होता है। तुम गोला में कितने व किस प्रकार के लोगों को काम दे सकते हो? मामूली नौकरी करनेवाले लोग अधिक मात्रा में मिल सकते हैं। मुझे जयपुर के पते से तार से जवाब देना। मैं कल सुबह यहां से चौमू जाऊंगा। ता० २८ को जयपुर पहुंचूंगा। ता० २ जून तक वहीं रहूंगा। बाद में वर्धा जाने का विचार है। श्री केशवदेवजी के पत्र का जवाब पीछे से भेजूंगा। अभी हाल में जुहू का मकान खाली न करवाना।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

श्री रामेश्वरप्रसाद नेवटिया की ओर से––

: ६९ :

वंबई,
२४-७-४१

पूज्यवर,

परसों पूज्य श्री चाचाजी, भाई कमलनयन और मैं विड़ला हाउस गये थे। श्री रामेश्वरदासजी और श्री घनश्यामदासजी उसी रोज बंबई आये थे। श्री रामेश्वरदासजी और श्री व्रजमोहनजी से वातचीत हुई। उनकी यही राय है कि शुगर मिल तथा मुकुंद आयरन या दोनों में से कोई भी वेचने की वात अभी नहीं करनी चाहिए। आपका पत्र मैंने उनको पढ़कर बतला दिया था। मुकुंद आयरन में अवतक जो एक लाख के करीव शेयर बेचे, उनके बारे में भी श्री रामेश्वरदासजी ने कहा कि बेचने में गलती हुई है। उनकी राय से अव शेयर बेचना बंद कर दिया है।

श्री व्रजमोहनजी ने कहा कि मुकुंद को बड़ी 'ओपेन हर्थ फरनेस' लगा लेना चाहिए। इसके लिए पहले भी विचार हुआ था। गवर्नमेंट उस समय तीन साल में 'ओपेन हर्थ फरनेस' की कीमत निकलवा देने के लिए तैयार थी। लेकिन मुकुंद आयरन के पास पैसा नहीं होने से विचार छोड़ दिया गया। श्री रामेश्वरदासजी ने कहा है कि दो-तीन महीने के बाद लाभ की स्थिति मालूम होने पर इस बारे में फिर विचार करेंगे, जिससे लड़ाई के वाद भी यह कारखाना सफलतापूर्वक चल सके।

श्री रामेश्वरदासजी से मिलने के पहले पूज्य श्री चाचाजी और मैं श्री जीवनलालजी से मिले थे। आपका पत्र उन्हें भी दिखाया। उनकी इच्छा थी कि काफी आकर्षक शर्तों पर ही मैनेजिंग एजेंसी-सहित मुकुंद के शेयर बेचने का विचार किया जाय। इस समय जीवन लिमिटेड के पास मुकुंद के करीव ७ लाख के फेस वैल्यू के शेयर हैं। करीव २०) फी शेयर मिले तो मैनेजिंग एजेंसी-सहित शेयर बेचे जा सकते हैं, यह उनका ख्याल

था। लेकिन यह कीमत मिलना अभी संभव नहीं है। लाहौर के कारखाने पर ९ लाख रुपये ब्याज पर लगे हैं, जिसमें १॥) लाख 'गुवविल' के शामिल हैं। यदि इनकी कीमत ९ लाख के ऊपर अर्थात् १० लाख के करीब आ जाय तो लाहौर का कारखाना निकालने का श्री जीवनलालजी का विचार है। मेरी निजी राय है कि लाहौर का कारखाना इस कीमत के अंदाज निकल जाय तो जीवन लिमिटेड तथा मुकुंद आयरन दोनों के लिए अच्छा है। लेकिन श्री रामेश्वरदासजी का कहना है कि पहली लड़ाई और इस लड़ाई की स्थिति में फरक है। उस लड़ाई के बाद जितनी अधिक मंदी आई थी उतनी इस लड़ाई के बाद होना कम संभव है।

रामेश्वरप्रसाद

श्री श्रीगोपाल नेवटिया की ओर से—

: ७० :

कार्ड आपका मिला। मैं भी आज यहीं हूं। वापस हरगांव १५ दिन के लिए जा रहा हूं। साइकल आपके पास पहुंच गई, सो ठीक। मेरे नये काम की चीज साइकल मैंने आपको भेंट दे दी, आप अपने नये काम की एक दस सेर दूध देनी गाय मुझे दे दीजिएगा। बराबर हो जायंगे। यह बात श्री रामेश्वरदासजी की सलाह मुजब ही लिखी है। उन्होंने यह और कहा है कि गाय दूध देनी ही नहीं, जवान भी हो—बूढ़ी न हो।

श्रीगोपाल का प्रणाम

श्री शि० ग० पटवर्धन की ओर से—

: ७१ :

अमरावती,
२-६-३६

माननीय महोदय,

विदित हो कि बर्लिन में ओलम्पिक खेल होनेवाले हैं, जिसमें भिन्न-भिन्न देशों के खिलाड़ियों का लगभग १०-१५ हजार का समुदाय उपस्थित रहेगा। साथ ही, मनुष्य जाति के होनेवाले शारीरिक ह्रास को रोकनेवाले कैसे व्यायाम व खेल अधिक उपयोगी हो सकते हैं, इसका अन्वेषण करनेवाली एक बृहत् कांफ्रेंस भी वहां होनेवाली है। उक्त खेलों और कांफ्रेंस में भाग लेने के लिए हमारी 'हनुमान व्यायामशाला' को वहां से आमंत्रण मिला है। यहां से २५-३० खिलाड़ी भेजने का निश्चय किया गया है। ९ जुलाई, १९३६ को उन्हें रवाना होना है। १३ जून, १९३६ को जहाज तय करना है। इस कार्य के खर्च के लिए हमें अबतक १० हजार रुपये देने के अभिवचन प्राप्त हो चुके हैं। किन्तु उसमें ३५-४० हजार रुपये तक खर्च होने की सम्भावना है।

अभी तक 'व्यायाम मंडल' के कार्य में आपसे सहायता की याचना इसलिए नहीं की थी कि आप देश के बड़े-बड़े कामों में संलग्न हैं तथा हमारी संस्था अभी अखिल भारतीय स्तर की नहीं हो पाई थी। अब वह समय आ गया है कि सारे भारत की ओर से इस संस्था के खिलाड़ी जर्मनी में पहुंच-कर दुनिया-भर के खास-खास व्यायाम विशेषज्ञों के सामने अपने भारतीय व्यायाम व खेलों का प्रदर्शन करेंगे तथा कांफ्रेंस में भाषणों द्वारा उसकी उपयोगिता और महत्व प्रतिपादित करके अपने देश को गौरवान्वित करेंगे।

शारीरिक व्यायाम व खेलों का महत्व कितना है, यह पूज्य महात्माजी तथा आप स्वयं जानते हैं। ऐसे महत्वपूर्ण कार्य के लिए हमें आपकी सहायता की जरूरत आ पड़ी है। आपसे निवेदन करते हुए हम आपसे आशा करते हैं कि आप भारत के प्रसिद्ध दानी और उदार श्रीमान बिड़लाजी आदि

तथा अन्यान्य बड़े-बड़े श्रीमानों से, जो देश का यश फैलानेवाले बड़े-बड़े कार्यों में आर्थिक सहायता भिजवाने की कोशिश करते रहते हैं, हमें आर्थिक सहायता दिलवाने की कोशिश करेंगे, ताकि नियत समय पर यहां से खिलाड़ी भेजे जा सकें।

श्रीमान बिड़लाजी भारत का मुख उज्ज्वल करनेवाले बड़े-बड़े कार्यों में उदार हृदय और मुक्त हस्त से आर्थिक सहायता करते रहते हैं। अभी तक हमने उनसे आर्थिक सहायता की याचना इसलिए नहीं की कि उनके उदार दान के अनुकूल कार्य हमसे जब होने लगेगा, तब मांग लेंगे। अब ऐसा समय आया है। समय थोड़ा होने से हमें दूसरों से और सहायता मिलने की आशा नहीं है। इसलिए यदि वे अपनी परंपरा के अनुसार इसमें उदारतापूर्वक सहायता करेंगे तो हमारे देश का दुनिया में बड़ा यश फैलेगा।

आपको अधिक क्या लिखें? आपपर ही हमारे इस कार्य का आधार है। यही अंतिम नम्र निवेदन है।

हमें लिखते हुए हर्ष होता है कि हमारे साथ में जो खिलाड़ी वहां जायेंगे, वे महाराष्ट्र, मध्य प्रान्त, खानदेश, गुजरात, यू० पी० आदि प्रान्तों से चुने गये हैं। उनमें एक-दो हरिजन भी रहेंगे।

कृपाकांक्षी,
शि. ग. पटवर्धन

श्री माधव नारायण पड़वेकर के नाम—

: ७२ :

नागपुर,
१६-६-२३

श्रीयुत पड़वेकर,

सत्याग्रह-संग्राम[1] सन्तोषजनक चल रहा है। सरकार भी अब कड़ी

---

१. नागपुर झंडा-सत्याग्रह।

दमन नीति का सहारा ले रही है। जोरों की अफवाह है कि हम लोग भी शीघ्र, सम्भवतः १८ तारीख के पहले, गिरफ्तार कर लिये जायंगे।

वर्किंग कमेटी के प्रस्ताव के अनुसार मेरी गैरहाजिरी में श्रीयुत् मगनलाल-भाई गांधी खादी-विभाग में कार्य करेंगे। सो अबतक जितनी रकम मंजूर हुई है उतनी रकम तो मथुरादासभाई की सलाह मुताबिक अलग-अलग प्रांतों को कर्ज दी जाय। मगनलालभाई को सूचित करके उनकी जो राय हो उस मुताबिक कार्य करना चाहिए। सभी तरह से 'टेक्निकल' प्रश्नों पर अथवा संशयजनक प्रश्नों पर पूरा संतोष होने पर ही कार्य करना ठीक होगा। विशेष कार्यों के लिए निश्चित की गई रकम, मगनलालभाई तथा मथुरा-दासभाई दोनों की एक राय से लगाने में मेरी ओर से कोई हर्ज नहीं है, तथापि 'टेक्निकल' बात हो तो दाताओं या वर्किंग कमेटी से खुलासा कर लिया जाय। आगे कोई भी बात ऐसी नहीं होनी चाहिए जिससे कोई आपत्ति कर सके।

श्री मथुरादासभाई और मगनलालभाई दोनों के नाम दो पत्र इसी चिट्ठी के साथ तुम्हारे पास भेजे हैं। उनकी नकल करके तुम अपने पास रख लेना। पत्र उनको ठीक से पहुंचा देना।

यहां की नगर कांग्रेस कमेटी तथा सत्याग्रह आफिस के लिए एक होशियार और प्रामाणिक अकाउंटेंट की जरूरत है, सो तुम वहां बन्दोबस्त करके यहां भेज देना, या सोपारीवाले से कहकर भिजवा देना। अकाउंटेंट अगर मराठी जाननेवाला हो तो ठीक रहेगा। पगार तुम व सोपारीवाला जो उचित समझो सो ठहरा लेना, मगर आदमी राष्ट्रीय विचारवाला, होशियार और प्रामा-णिक होना चाहिए।

तिलक स्वराज्य फंड का हिसाब पुराना तथा नया दोनों पत्रों में नहीं छपा है, सो छप जाना चाहिए। हिसाब की रिपोर्ट तमाम प्रान्तों को व प्रांतिक कमेटी के मार्फत चंदा देनेवालों को पहुंचनी चाहिए। कांग्रेस कमेटी को, जिन्होंने सीधा चंदा दिया है, उनको किताब सीधी जानी चाहिए। रिपोर्ट की दस प्रतियां श्री रंगलालजी जाजोदिया को कलकत्ता भेज देना,

ताकि चन्दे में बड़ी रकम देनेवालों को वह वहां दे देंगे। जो प्रतियां बचें वे जनरल सेक्रेटरी से पूछकर उनके आफिस में या खचांजी को भेज देना। स्वराज्य फंड के जो जेवर वगैरा अपने पास हों, वह भी खजांची को देकर उनसे रसीद ले लेना।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

श्री रामस्वरूप पाण्डेय की ओर से--

: ७३ :

लखनऊ,
१-४-३६

पूज्यवर काकाजी,

मेरे अनुभव से चंद्रकला की आपके साथ बड़ी आत्मीयता बढ़ गई है। जब भी कोई सलाह लेनी होती है तो आपकी पुत्री की ही भांति पहले आपसे सलाह लेकर तब वह मुझे सूचित करती है। वह आपमें अपने भविष्य निर्माण की शक्ति तथा सामर्थ्य देखती हैं।

परंतु मुझे ऐसा अनुभव हुआ है कि आपको ऐसी शंका बनी रहती है कि आपके पथ-प्रदर्शन के मार्ग में कहीं मैं या मेरे माता-पिता अथवा भाई बाधा न डालें। ऐसी दशा में चंद्रकला का बड़ा नुकसान हो जाया करता है। उसने एक पत्र द्वारा मुझसे प्रार्थना की है कि मैं अपनी तमाम जिम्मेदारियों को आपके सुपुर्द कर दूं। अतः मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप कृपाकर उसका सारा भार अपने ऊपर लेकर जैसे चाहें उसे एक आदर्श देश-सेविका बना दें। मैं अपने माता-पिता, भाई तथा अन्य संबंधियों की ओर से आपको विश्वास दिलाता हूं कि कोई आपके मार्ग में बाधक न होगा।

चंद्रकला के पढ़ने-लिखने ही तक का नहीं, वल्कि शादी-विवाह तथा जीवन के अन्य प्रश्नों पर भी आपका जो निर्णय होगा, हम सभीको मान्य होगा।

आपका,
रामस्वरूप पाण्डेय

श्री पी० एस० पाठक की ओर से—

: ७४ :

लन्दन,
११-५-३३

प्रिय सेठ जमनालाल,

आपका २०-४-३३ का पत्र पाकर और यह पढ़कर कि आप जेल से छूट गये, वहुत प्रसन्नता हुई।

यह जानकर खेद हुआ कि आप अपने कान के इलाज के लिए यूरोप आने में असमर्थ हैं। यदि आप किसी डाक्टर के द्वारा अपने कान की तकलीफ के वारे में सारा विवरण विस्तार से भिजवा दें तो मैं यहां किसी विशेषज्ञ से इस वारे में वातचीत करके उनकी राय आपको लिखकर भेज सकता हूं।

मुझे आशा है कि पहाड़ी स्थान से आपको लाभ होगा और आप शीघ्र ही स्वस्थ हो जायंगे। यदि आप परिवर्तन और कान के इलाज की दृष्टि से यूरोप आने का निश्चय करें तो मैं सोचता हूं, यह अच्छा ही होगा। अव तो इंग्लैंड आना इतना सुगम हो गया है कि आपको कुछ सोचने की जरूरत ही नहीं।

कुछ-न-कुछ यहां चलता ही रहता है। भारत में कुछ काम कर पाने की मुझे खुशी होगी। किंतु जबतक राजनैतिक आंदोलन और धार्मिक झगड़े

समाप्त नहीं हो जाते तबतक कोई लाभप्रद कार्य करने के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

जब इतने लोग राजनीति में भाग लेने और जनता में आगे आने को उत्सुक हैं तो मुझे आशा है कि कुछ स्थायी परिणाम उससे निकलेगा और अधिक उपयोगी कार्य प्रारंभ हो पायंगे।[1]

शुभ कामनाओं-सहित—

आपका,
पी० एस० पाठक

: ७५ :

लंदन,
१९-७-३९

प्रिय सेठ जमनालालजी,

कुछ दिनों पहले मुझे श्री केशवदेव नेवटिया का एक पत्र मिला था, जिसमें मुझे आपके जयपुर रियासत में नजरबंद होने की सूचना दी गई थी। साथ ही यह भी कि अपने एक पत्र में आपने मेरे स्वास्थ्य के बारे में पूछा था और मुझे आपको पत्र लिखने के लिए कहा था।

यह आपकी बहुत ही कृपा है कि आपने मुझे स्मरण किया, खासकर उस समय जबकि आप स्वयं अपनी परेशानियों और कार्यों में घिरे हों। मैं स्वस्थ हूं और एक साथ कई कार्यों में व्यस्त हूं। मुझे खेद है कि आप इस समय जयपुर में राज्य कैदी हैं, क्योंकि स्वभावतया आप अपने-आपको देश-सेवा के कार्य के लिए असहाय अनुभव कर रहे होंगे। मुझे इस विषय की विस्तार से जानकारी नहीं, लेकिन मैं मानता हूं कि स्वयं आपने जो किया वह न करने की अपेक्षा, जेल जाना अधिक उपयुक्त समझा होगा। आशा है, आपका और रियासत के बीच का झगड़ा तय हो जायगा और जल्दी ही आप जेल से बाहर आ जायंगे।

---

१. अंग्रेजी से अनूदित

आपका पुत्र ठीक व व्यस्त होगा और इंग्लैंड में रहने से उसे लाभ हुआ होगा। आशा है, आप स्वस्थ होंगे और आपके कान में अब कोई तकलीफ नहीं होगी।

युद्धकाल में आक्रमण से बचाव की तैयारियां यहां जोरों से हो रही हैं। मुझे आशा है कि चूंकि सब देश आक्रमण के समय अपने बचाव की तैयारी में लगे हुए हैं, किसीको भी युद्ध शुरू करने का समय नहीं मिलेगा।

मुझे खेद है कि अधिक अनुभव प्राप्त किये बिना ही बंबई में कांग्रेस सरकार ने मद्य-निषेध लागू करने जैसा कठिन कार्य हाथ में ले लिया। संयुक्त राज्य अमरीका का उदाहरण ही सरकार को मद्य-निषेध लागू करने की व्यावहारिक कठिनाइयों की ओर से सावधान करने के लिए पर्याप्त होना चाहिए था। मुझे आशा है कि यदि सरकार के इस कदम के परिणाम स्वरूप अधिकारियों में भ्रष्टाचार फैला और लोगों ने गुप्त रूप से शराब बनाना और पीना शुरू कर दिया, जैसाकि अमरीका में हुआ, तो सरकार अपनी असफलता को स्वीकार करने और लोगों को जबर्दस्ती शराब पीने से रोकने के प्रयत्न स्थगित करने में नहीं हिचकिचाएगी।

शुभकामनाओं सहित––

आपका,
पी० एस० पाठक

---

१. अंग्रेजी से अनूदित

श्री पारसनाथसिंह की ओर से—

: ७६ :

दिल्ली,
१४-३-२९

प्रिय बजाजजी,

वन्दे ! आपका तार श्री घनश्यामदासजी को मिला, पर फरवरी-मार्च के लिए ४५,०००) भेजने की बात उनकी समझ में न आ सकी। सो इसका स्पष्टीकरण चाहते हैं। उन्होंने कहा कि मैंने (जहांतक मुझे याद है) साल में एक लाख देने को कहा था, सो छः महीने का ५०,०००) होता है। उनका ख्याल यही था, पर आपका तार मिलने पर सोचने लगे कि बात क्या है, पर कुछ याद न कर सके । कृपया विस्तार से लिखेंगे कि कितना देने को कहा था, कितना दिया गया, कितना बाकी है, इत्यादि।

आपने इसका उत्तर तार में नहीं दिया कि अगर आप अप्रैल में नहीं आ सकते तो अगस्त में मीटिंग रखी जाय या नहीं। बिड़लाजी का प्रोग्राम १० अप्रैल तक दिल्ली-पिलानी के बीच बिताने का है। फिर एक सप्ताह बनारस, फिर कलकत्ता।

आपका,
पारसनाथ

श्री गोविंदलाल पित्ती की ओर से—

: ७७ :

बम्बई,
२२-२-३६

प्रियवर श्री जमनालालजी,

मेरा तार आपको मिला होगा। सरदार वल्लभभाई वहां आ रहे हैं। वह आपसे इस संबंध में बात करेंगे। मैं सरदारसाहब के नाम का पत्र

साथ ही में भेज रहा हूं। उसमें परिस्थिति का संक्षेप में वर्णन है। कांग्रेसी नेताओं की पूर्ण सहानुभूति और सक्रिय सहायता चाहता हूं। आप सरदार-साहब से परामर्श कर लें। चुनाव-घोषणा-पत्र की कापी भेज रहा हूं।

आपका स्वास्थ्य कैसा है, लिखें। सुलभा का आपको प्रणाम पहुंचे।

स्नेही,
गोविन्दलाल पित्ती

श्री अमरचंद पुंगलिया के नाम—

: ७८ :

कलकत्ता,
मिती पौष कृ० ८

प्रिय महोदय,

माननीय गवर्नमेंट (सरकार) द्वारा मुझे 'रायबहादुर' की उपाधि मिलने पर आपने जो बधाई भेजने की कृपा की है, तदर्थ मैं आपका बहुत आभार मानता हूं और परमात्मा से मेरी प्रार्थना है कि वह मुझे देश और समाज की सेवा करने का बल प्रदान करे।

आपका अनुगृहीत
जमनालाल बजाज

: ७९ :

वर्धा,
(नवंबर, १९१८)

श्रीयुत भाई अमरचन्दजी,

सप्रेम जयगोपाल।

पत्र आपका आया। इन दिनों बाहर आने-जाने तथा चीफ कमिश्नर, कमिश्नर आदि के यहां आने के कारण पत्रोत्तर में विलम्ब हुआ। कांग्रेस

की हकीकत लिखी, सो मालूम हुई। इधर मंडल चीफ ग्रेन पुलगांव आदि के कार्य रहने के कारण मेरा बंबई आना नहीं हुआ। अगर आना बनता तो बहुत-से महानुभावों के दर्शनों का लाभ होता।

कांग्रेस के संबंध में मारवाड़ी विद्यालय में जो घटना हुई, वह पढ़कर दुःख हुआ। श्री फतेहचंदजी स्वयं कांग्रेस भक्त हैं, फिर भी इस तरह की कार्यवाही होना आश्चर्य की बात है। इसमें दोनों तरफ कुछ तो भी गैर-समझ होना संभव मालूम होता है, तथापि आपस में कितनी भी गैर-समझ हो, दूसरों को उसका भान होने देना अनुचित है। तथापि मेरी राय से यह प्रकरण ज्यादा न बढ़े तो ठीक है, नहीं तो भविष्य में आपस के प्रेमभाव में फरक आने की आशंका है। आप किसी भी तरह यह मामला आपस में ही निपटवान की कोशिश करना। श्री गोविंदलालजी से भी कहना, आप भी ज्यादा जोर नहीं देना। अगर मेरा वहां रहना होता तो अवश्य यह मामला निपटाने के लिए जितना हो पाता खटपट करता।

छात्रवृत्ति का विज्ञापन 'अभ्युदय' आदि में देखा था। व्यापारी शिक्षण, वर्धा के लिए १५०) रु० मासिक की सहायता मिलेगी, लिखा सो ठीक। आशा है, सहायता-संबंधी पत्र शीघ्र ही आ जायगा। 'मारवाड़ी अग्रवाल महासभा' का अधिवेशन यहां करने का विचार आ० सु० १५, कार्तिक कृ० १, २ का हुआ है। अपने खास-खास नेताओं की सम्मति तार द्वारा मंगाई है। बहुतों की सम्मति आ गई है। श्री गोविंदलालजी को भी तार किया था। उत्तर अभी तक नहीं मिला। आशा है, इनकी सहानुभूति का तार शीघ्र ही मिल जायगा। सभा के थोड़े रोज पहले तुम्हें आना पड़ेगा व समय पर श्री गोविन्दलालजी को भी आना पड़ेगा, सो विदित रहे।

आपका,

जमनालाल बजाज

: ८० :

वर्धा,
१८-७-२४

श्री अमरचन्दजी,

प्रेमपूर्वक नमस्कार। मराठी मध्य प्रान्त खादी मंडल ने नागपुर में एक खादी भंडार खोलने का निश्चय किया है। प्रचार और बिक्री की दृष्टि से दूकान इतवारी में ही होना अच्छा मालूम पड़ता है। भंडार के लिए इतवारी में कोई मौके की अच्छी जगह दिलाने की आप कोशिश करेंगे, ऐसी प्रार्थना है।

प्रांतिक कमेटी की बैठक नागपुर में २५-७-२४ को होगी। उस समय तक कुछ निश्चय हो जाना चाहिए।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

श्री अमरचंद पुंगलिया की ओर से----

: ८१ :

रंगून,
वसंतपंचमी, २७-१-२८

पूज्य सेठजी,

सेवा में सविनय वन्देमातरम्। आपका कृपा कार्ड यथासमय मिला। कार्यवश प्रत्युत्तर में विलम्ब हुआ सो, क्षमा करें। ब्रह्म (बर्मा) प्रांतीय हिंदू सभा का द्वितीय अधिवेशन मांडले में गत ता० २१-२२-२३ जनवरी को पूज्य पं० नेकीरामजी शर्मा के सभापतित्व में आशातीत सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। मैं भी वहां गया था, कल ही दोपहर में लौटा हूं। बर्मा प्रांत के प्रायः सभी भिन्न-भिन्न स्थानों से दूर-दूर के लोग आये थे। सभा में

उपस्थिति लगभग दो-ढाई हजार की थी, जिसमें प्रायः दो सौ के अन्दाज स्त्रियों की थी। पंडितजी का भाषण बहुत ही मार्मिक, ओजस्वी तथा विद्वत्तापूर्ण हुआ, जिसका उपस्थित जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

हिन्दी-प्रचार, बौद्धानुयायी वर्मी लोगों तथा भारतवासी हिन्दुओं में एकता, व्यायाम, सामाजिक कुरीतियों का निवारण, विधवाओं की रक्षा, अस्पृश्यता-निवारण तथा शुद्धि आदि विषयों पर कई महत्वपूर्ण उपयोगी प्रस्ताव पास हुए। वहां के लोगों के आग्रह के कारण पंडितजी का इरादा इस प्रांत के भिन्न-भिन्न स्थानों में घूमकर संगठन तथा प्रचार करने का है। संभव है, इस कार्य के लिए उनको प्रायः एक मास इधर लग जाय। अभी तो वह मांडले से मेम्यो की ओर गये हैं। जहाज से उतरने के दूसरे दिन रंगून में भी एक सार्वजनिक सभा हुई थी, जिसमें उन्हें मानपत्र दिया गया था।

इसके पहले श्रद्धेय वावा खड्गसिंह तथा सरदार मंगलसिंहजी इधर पधारे थे। ऐसे नेताओं के आगमन से जनता पर वड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा है।

भाई श्री मोतीरामजी के स्वास्थ्य के वारे में आपका संदेश उन्हें वतला दिया है। पूज्य वापूजी ने मद्रास कांग्रेस के समय उन्हें व्यायाम के लिए आज्ञा दी थी सो रोज प्रातःकाल घूमने के लिए जाया करते हैं।

वाकी हाल सब ठीक है। वापू के कुशल समाचार लिखते रहियेगा। यहां योग्य सेवा हो तो लिखियेगा। पूज्य वापूजी का स्वास्थ्य पहले से अव अच्छा होगा।

विनीत,
अमरचन्द पुंगलिया

पुनश्च—

मांडले के अधिवेशन में इने-गिने पांच-सात मारवाड़ियों को छोड़कर और किसी मारवाड़ी भाइयों ने उपस्थिति द्वारा भी योग नहीं दिया। यह वड़े दुःख और लज्जा की बात है। सुना जाता है कि किसी महाशय ने

'सनातन धर्म' रक्षा के नाम पर महासभा के विपरीत भ्रम उत्पन्न कर दिया था। दूसरा कारण शायद चन्दे का डर भी हो सकता है। समय पाकर तो उन्हें संभलना ही पड़ेगा, चाहे देरी से ही सही।

अ० पुं०

श्री आनंदीलाल पोद्दार के नाम—

: ८२ :

जुलाई, १९३६

प्रिय आनन्दीलालजी,

आपका विना तारीख का पत्र, आपके वकील श्री माधवप्रसादजी के द्वारा उनके ता० १५-७-३६ के पत्र-संख्या ३५०।३६, के साथ यथासमय मेरी गैरहाजिरी में प्राप्त हुआ था। साथ में पूज्य महात्माजी के नाम भी एक पत्र था, जो उसी समय उनकी सेवा में पहुंचा दिया गया था। आपने मेरी प्रार्थनाओं को स्वीकार कर मेरा त्यागपत्र स्वीकृत कर लिया, तदर्थ धन्यवाद! परन्तु जैसाकि मैंने कहा है—मुझसे समय-समय पर आप इस संबंध में जो कुछ विचार-विनिमय करना चाहेंगे मैं उसके लिए तैयार रहूंगा, और मुझे वहुत खुशी होगी अगर इस ट्रस्ट द्वारा राजपूताने में भी ऐसा सुन्दर कार्य हो सके। जिस उद्देश्य से यह ट्रस्ट स्थापित किया गया है, उसकी सफलता के लिए मैं आप लोगों से अनुरोध करूंगा कि इस ट्रस्ट को आप एक कानूनी ट्रस्ट का स्वरूप दे दीजिये तथा कानूनी ट्रस्ट के अनुसार ही इसकी कार्यवाही जारी कीजिये। मनुष्य के शरीर का कोई ठिकाना नहीं है, अतः मैं चाहूंगा कि ट्रस्ट में उदार विचारों के ट्रस्टी हों, जो समय को पहचान सकें और आज से पच्चीस वर्ष आगे की दुनिया के बारे में सोच सकें। जिनको सच्ची शिक्षा के प्रचार में रस हो और जिनमें राष्ट्रीय भावों का विकास हो, ऐसे ट्रस्टीगण होंगे तो संस्था उत्कर्ष पा सकेगी—राजस्थान

की सच्ची सेवा होगी, ट्रस्ट का उद्देश्य सफल होगा। आपको और हम सबको सन्तोष होगा और शिक्षा प्राप्त कर सेवाभाव से काम करनेवाले नवयुवक तैयार हो जायंगे। राजपूताना की शिक्षा की कमी पूरी होकर वहां नवजीवन पैदा होगा।

जमनालाल वजाज का वन्देमातरम्

श्री आनंदीलाल पोद्दार की ओर से—

: ८३ :

वम्बई,
१५-७-३६

प्रिय जमनालालजी,

आपकी सहानुभूति के दो पत्र तथा एक तार मिला। उनके लिए मैं आपका ऋणी हूं। यह विपत्ति अचानक और ऐसी दुःखद थी कि मेरे और मेरे परिवारवालों के लिए उसका सहन करना असह्य था, किंतु आप-जैसे वन्धुओं और हितैषियों के आश्वासन से इस भीषण दुःख में वहुत-कुछ सांत्वना मिली है। मैं आशा करता हूं कि आपके संदेश से अवश्य धैर्य धारण कर सकूंगा। आखिर ईश्वर की लीला एवं उसके आदेश के सामने हम सबको अपना शीश झुकाना पड़ता है, यह मानकर व्यथित हृदय को वार-वार शांत करते हैं। आशा है, समय आने पर यह दारुण दुःख अपनी दारुणता को त्याग देगा।

आपका,
आनंदीलाल पोद्दार

श्री विरदीचंद पोद्दार कीं ओर से—

: ८४ :

नागपुर,
२९-९-२७

श्रीयुत् जमनालाल वजाज,

जै गोपाल ! वर्धा के पत्र से मालूम हुआ कि तुम्हारे पिताजी का स्वर्ग-वास हो गया। समाचार पढ़कर दु:ख हुआ, तुम्हारी माताजी को दु:ख हो गया। अपनी माताजी को सांत्वना देना। इस वात के आगे किसीका जोर नहीं।

जाइंट के वारे में तुमने लिखा था कि जब मेरा बंबई जाना हो तो सवकी तरफ से अधिकार दिया जाय तो शायद रास्ता वैठ जाय, पर अभी तो तुम्हारे बंबई जाने में ढील दिखाई देती है। सीजन नजदीक आ गई है। शिवनारायणजी बंबई में गामड़िया से मिले थे। उसने कह दिया बांटणी किये विना जाइंट नहीं होगा, यह जवाव उसका अनुचित है। हमारा तो विचार है, गामडिया को छोड़कर भाव उठाई-बंधाई का ८) अथवा ९) रखकर जाइंट कर लेना। इस विषय में तुम्हारी क्या राय है? तुम कव-तक आओगे लिखना।

आपका,
विरदीचन्द पोद्दार

: ८५ :

रंगून,
१०-११-३०

चिरंजीव जमनालाल वजाज,

आशीर्वाद !

पत्र तुम्हारा आया। पढ़कर वहुत आनंद हुआ। तुमको जेल में रहते हुए भी हमारा स्मरण रहता है, यह तुम्हारी सज्जनता और हमारे सद्भाग्य की बात है।

यहां के मुनीम ने सट्टे का काम करके कुछ नुकसान कर दिया, इस लिए काम देखने मैं यहां आया हूं। हाल १५-२० दिन यहां रहना होगा।

तुम्हारे जन्मदिन के उपलक्ष्य में तुम्हें सद्बुद्धि देने के लिए परमात्मा से प्रार्थना करने के लिए तुमने हमलोगों को लिखा, सो परमात्मा ने तुम्हें सद्बुद्धि दे रक्खी है। परंतु तुम्हारे लिखने से पुनः परमात्मा से प्रार्थना की है कि परमात्मा तुम्हें सद्बुद्धि देते रहें और तुम्हारे हाथ से सेवा का कार्य होता रहे।

तुमने लिखा है, पहला पत्र मिला होगा, सो मुझको तुम्हारा और कोई पत्र नहीं मिला है।

केशव के विवाह के विषय में लिखा, सो तुम्हारे मुजव ही मेरा मत है। परंतु केशव का दान भाईजी को कर चुके हैं। अव केशव-संबंधी सब हक उनको ही है। मैंने अपने विचार उनको लिखे हैं, परंतु उत्तर नहीं आया। केशव को पुछवाया था। वह भी कहता है, हम इस विषय में कुछ भी कहना नहीं चाहते। नागरमलजी की इच्छा हो वैसा करें। अतः तुम लिखते हो उतनी बड़ी लड़की और सुधारक लोगों की लेना नागरमलजी कवूल करें, ऐसा नहीं दिखता है। परंतु वन सकेगा जितनी बड़ी लड़की और मुख्य वात यह कि अच्छी लड़की, देखकर संवंध करने की चेष्टा करेंगे। तुम जेल में पड़े हुए भी फूलकुंवर तथा केशवदेव में इतना प्रेम रखकर उनके हित का प्रयत्न करते हो, यह तुम्हारी उदारता है। इस विषय में श्रीयुत् केशवदेवजी तुमसे मिलें, तव उनको कह देना कि कोई लड़की उनके ध्यान में हो तो मुझे सूचना दें।

श्रीमहाराज और गौरीशंकरजी को पत्र देकर तुम्हारे समाचार लिख दिये हैं।

तुमको पत्र लिखते नेत्र में जल आता है। कई वातों में अपने विचारों में वहुत अंतर है और हमारा नैतिक जीवन कई कारणों से वहुत गिरा हुआ है। इस बात को तुम पूर्णतया जानकर भी तुम मुझसे प्रेम करते हो, यह तुम्हारे निष्कपट प्रेम का चिन्ह है। सज्जनों का व्रत होता है "अंगीकृतं

सुकृतिनः परिपालयन्ती" अर्थात् सज्जन लोग ग्रहण किये हुए कार्य को छोड़ते नहीं हैं।

तुम्हारा स्नेही,
बिरदीचंद

: ८६ :

नागपुर,
१२-१-३१

श्रीयुत् जमनालाल बजाज

पत्र तुम्हारा आया। उसकी नकल श्रीयुत् गौरीशंकरजी और पूज्य श्री अच्युत मुनिजी को भेजी गई थी। उनकी तरफ से आई हुई चिट्ठियां श्रीयुत् केशवदेवजी को भेजी हैं, सो तुमको मिलेंगी। हम लोग देश-सेवा के काम में तुम्हारा साथ नहीं देते, इस विषय में लिखा. सो तुम करते हो वह काम अच्छा है, यह समझते हुए भी हम शामिल नहीं होते, यह हमारे चित्त की दुर्बलता है। बालक सब प्रसन्न हैं।

तुम्हारा हितैषी,
बिरदीचंद

श्री बिरदीचंद पोद्दार के नाम—

: ८७ :

वर्धा,
३-११-४१

पू० वृद्धिचन्दजी,

आखिर कल आपका आना नहीं बन सका। आपका फोन आया, उस-पर से मालूम हुआ कि श्री जुधालालजी जोगाणी के लकवा का दौरा हो गया। चिन्ता हुई। आप कोई डाक्टर के पास से दौरे का वर्णन व इस समय क्या इलाज चालू है, लिखा भिजवावेंगे तो मैं मेरे एक-दो अनुभवी डाक्टर मित्रों

से इलाज के बारे में राय मंगाकर आपको लिख भेजूंगा। इनकी उमर तो सत्तर के लगभग होवेगी। मेरी ओर से भी इन्हें हिम्मत रखने के लिए कहना, क्योंकि इस बीमारी में मनोबल (मन की हिम्मत) का खासकर ठीक असर हुआ करता है। अगर आना हो जाता तो 'गो-सेवा-संघ' के बारे में व 'वर्धा गोरक्षण संस्था' के सम्बन्ध में आपसे समक्ष में खुलासेवार बात हो जाती। वर्धा गोरक्षण संस्था ठीक नमूने की जल्दी ही बन जाय तो दूसरी पुरानी गोशालाओं के संचालकों को बताकर वहां भी परिवर्तन-कराने का संभव हो सकता है। इसे मैं गोसेवा संघ का वर्तमान में मुख्य उद्देश्य मान रहा हूं। इसलिए एक बार तो मैंने ही कल की मीटिंग में अध्यक्षता का भार अपने ऊपर उठा लिया है। व्यवस्था ठीक जम जाने पर अगर आपको उत्साह व सुविधा हुई तो, आपपर यह भार डालकर अन्यथा दूसरे किसी उत्साही मित्र पर इसकी जिम्मेदारी डालकर मैं मुक्त हो जाना चाहूंगा। मैंने कल फोन से मीटिंग से पहले आपसे बात करने का प्रयत्न भी किया था, परन्तु नंबर नहीं मिलने से व फोन आपके नाम पर न होने से बात नहीं हो सकी। पूज्य नागरमलजी का त्यागपत्र भी नहीं आया व चि० केशव भी कल नहीं आ सका। वह शायद बम्बई गया हुआ है। श्री रुकमानन्दजी बजाज की पहले की मीटिंग में यह सूचना थी कि एक घर के दो जने नहीं रहना चाहिए, उस समय तो दूसरे नाम सामने नहीं होने के कारण व एक-दो नाम मेरे सामने भी थे तो उनसे स्वीकृति नहीं होने के कारण, उनका, गंगाबिसन का, श्रीराम टिवड़ेवाले का व आपका नाम रख लिया गया था। उन्होंने आपके नाम पर विरोध नहीं लिखाया था। परन्तु अब जब दूसरे योग्य व उत्साही काम करनेवाले मिलना संभव है तो फिर मेरी राय है कि पू० नागरमलजी, जिनका आज तक आना हो भी नहीं सका व भविष्य में भी कम संभव है, अपना त्यागपत्र भेज देवें। आप तो रहेंगे ही, चि० गंगाबिसन व श्री मोहनलाल टीवड़ेवाले का त्यागपत्र भी ले लिया जायगा। उनके स्थान पर मेरी इच्छा एक तो श्री गोपालराव वालुंजकर को व दूसरे श्री भूत को लेने की है। ये दोनों ही

सज्जन पुरुष हैं। गोरक्षण के काम में ठीक अनुभव व प्रेम भी रखते हैं। श्री भूतजी को तो सरकार की नौकरी के समय का डेयरी व खेती का अच्छा अनुभव है। वह सरकारी नौकर थे और अब पेंशन लेकर यहां रहते हैं। आशा है, आपको भी यह विचार पंसन्द होगा।

'गोरक्षण' का जो वर्तमान स्थान है वहां से जगह के अभाव के कारण उसे हटाना पड़ता दिखता है। उसके लिए शुरू में कमेटी मुकर्रर की है। आप भी उसमें हैं, मैं भी हूं। आप किसी रोज आ सकेंगे और पहले से लिख देवेंगे तो उसकी मीटिंग रख ली जायगी।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

श्री बिरदीचंद पोद्दार की ओर से—

: ८८ :

नागपुर,
५-१२-४१

श्रीयुत् जमनालाल बजाज,

जै गोपाल! पत्र तुम्हारा आया, पढ़कर आनन्द हुआ। अंदाज १०-११ वर्ष से अपना पत्र-व्यवहार बंद जैसा हो रहा है। कभी पत्र आता है, तो वह भी दूसरों के हाथ का लिखा हुआ होता है और संक्षिप्त होता है। अभी का तुम्हारा पत्र स्वतः का लिखा हुआ दो पन्नों का भरा हुआ आया। उसे देखकर खुशी हुई है। हमारा जीवन प्रायः शुरू से अभी तक हरएक कार्य में अपयश से भरा हुआ है। तुम्हारा जीवन यश से भरा हुआ है। उस हालत में भी तुम हमें अभी तक काम करने लायक समझ रहे हो, यह खुशी होने का दूसरा कारण है। गोरक्षण-विषयक बातें रूबरू करेंगे।

१०-१२-४१ तक स्वामीजी महाराज यहां रहेंगे। वहांतक मैं नहीं आ सकूंगा। इसके बाद जब लिखोगे तभी आ जाऊंगा।

जोगाणीजी के विषय में तुमने पत्र में समाचार लिखे, उसे पढ़कर तुम्हारे अन्तःकरण की पवित्रता का निश्चय होता है। हमारी समझ से तुम्हें आत्म-साक्षात्कार बहुत जल्दी होना चाहिए। हमारे यहां दो अलौकिक संन्यासी (ऐसे आज तक हमारे देखने में नहीं आये हैं) आये हुए हैं। हमारा विचार था, तुम्हें लिखकर महात्माजी को उनसे मिलाते, परन्तु कई कारणों से नहीं लिख सके। अगर अध्यात्म-शास्त्र में तुम्हारी रुचि हो गई हो और कर्म करते-करते कुछ थकावट होकर शांति की कीमत कर्म से अधिक दिखने लग गई हो तो दो घंटा का समय निकालकर यहां आना। समाचार हमें पहले से लिख देना। महाराज का सत्संग का समय सुबह ८ बजे से १० बजे तक और सायंकाल को ३ बजे से ५ बजे तक रहता है।

पूज्य बापूजी को हमारा प्रणाम कहकर संन्यासियों का सत्संग करने के लिए अवश्य कह देना। पत्र देना।

आपका,
बिरदीचन्द पोद्दार

श्री रामदेव पोद्दार की ओर से—

: ८९ :

बम्बई,
(फरवरी, १९४०)

पूज्यवर,

इन दिनों आपका कृपापत्र नहीं मिला। वैसे तो मैं फतेहचंदजी से आपके स्वास्थ्य के विषय में जानकारी लेता रहता हूं, परंतु मुझे इस बात

का बड़ा खेद हुआ कि आप वंबई पधारे भी, परन्तु पूज्य पिताजी की तबीयत नरम होने के कारण मेरा वंबई आना-जाना नहीं होता था, इसीलिए सूचना समय पर न मिलने की वजह से आपके दर्शन नहीं कर सका। आपके दर्शन न कर पाने से चित्त को वहुत निराशा रही।

जब आप बंबई पधारे थे तो आपसे आयुर्वेदिक कॉलेज तथा अस्पताल के विषय में जिक्र हुआ था। उस समय मैंने श्री खेरसाहव का यह विचार आपके सामने रखा था कि पूज्य महात्माजी द्वारा इसका शिलारोपण-समारोह कराया जाय, तो वहुत श्रेष्ठ रहे। उस समय आपने यह कहा था कि जव यह योजना उस अवस्था में पहुंच जायगी तब इसका विचार कर लेंगे। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आयुर्वेदिक कालेज तथा अस्पताल की योजना के एस्टीमेट वनकर तैयार हो गये हैं। लगभग ४ लाख रुपया तखमीना इन मकानों को बनवाने का आया है, जो अपनी ओर से स्वीकार कर लिया गया है। सरकार ने मकानात बनवाकर देने का सारा भार हम लोगों पर डाल दिया है और तदनुसार सरकार ने वर्ली की ३०,००० गज जमीन का कब्जा भी इसके लिए हमलोगों को सौंप दिया है। इसका मूल्य करीब पौने चार लाख होता है।

यह तो स्पष्ट ही है कि इस प्रकार का आयुर्वेदिक कार्य प्रथम बार कांग्रेस सरकार के राज्य काल में होने जा रहा है। इस योजना को कार्यरूप में परिणत करने में श्रीयुत खेरसाहव और मुंशीजी ने बहुत अधिक प्रयत्न किया है, साथ ही वहुत रस भी लिया है। श्री खेरसाहव का कथन यही था कि इन संस्थाओं के भवनों का शिलारोपण-संस्कार पूज्य वापूजी द्वारा ही होना चाहिए और मैं स्वयं उनसे इसके लिए आग्रह करूंगा। अपने मंत्री-मंडल के इस्तीफे देने के वाद सरकार के सलाहकारों ने भी इस कार्य में वहुत सहानुभूति दिखाई है और प्रत्येक कार्य को पूर्ण करने में वहुत जल्दी चेष्टा की है। मैं यह जानता हूं कि पूज्य महात्माजी का समय वहुत मूल्यवान है तथा देश की महान चिन्ताओं का वोझ उनपर वहुत अधिक है। इसलिए मैं नहीं चाहता कि केवल इस कार्य के लिए ही उन्हें यहां पधारने का कष्ट

दिया जाय। किन्तु पूज्य महात्माजी बंबई होकर पधारते ही रहते हैं। अतः जब भी निकट में उनका इधर से पधारना हो तभी एक घंटे का समय इस कार्य के लिए देने का कष्ट करें, तो बड़ी कृपा होगी।

पूज्य माताजी की तबीयत इन दिनों लगभग दो मास से बहुत नरम चल रही है। ब्लडप्रेशर के साथ ही कमजोरी और बेचैनी बहुत ज्यादा बढ़ गई है। यही कारण था कि कई बार इरादा करने पर भी मैं आपके पास पूना आकर दर्शन नहीं कर सका। पूज्य पिताजी की जो हालत है, उसे आशाजनक नहीं कहा जा सकता। एक-न-एक नया उत्पात प्रतिदिन खड़ा हो जाता है। उनका जर्जर शरीर इस सबका मुकाबला कबतक कर सकेगा नहीं कह सकते। लेकिन वह अभी तक मुकाबला कर रहे हैं, यही निराशा में आशा की किरण है। पिताजी की इस हालत में हम लोगों को बहुत चिंता है।

अपने स्वास्थ्य का पूरा हाल लिखें। यहां लोगों से पूरे समाचार नहीं मिलते। आपके दर्शन कबतक हो सकेंगे, यह भी लिखने की कृपा करें।

साथ में, बंबई के गवर्नर और अपने साथ जो एग्रीमेंट हुआ है, उसकी भी एक प्रति अवलोकनार्थ भेज रहा हूं। पत्रोत्तर दें, योग्य सेवा से सूचित करें।

भवदीय,
रामदेव

: ९० :

बंबई,
१६-२-४०

पूज्यवर,

आप जानते ही हैं कि पिताजी की बहुत वर्षों से उत्कंठा थी कि एक बार पूज्य महात्माजी को 'आनंदीलाल विद्या प्रचार संस्था' के केन्द्रस्थान नवलगढ़ ले जाया जाय। यह इच्छा तो पूरी नहीं हो सकी, किन्तु यदि पूज्य महात्माजी इस आयुर्वेदिक कालेज तथा अस्पताल के शिलारोपण-कार्य को ही स्वीकार कर लें तो उनकी बहुत बड़ी उत्कंठा पूरी हो जायगी। इस पत्र को लिखने

में पूज्य पिताजी का भी वड़ा आग्रह है। आप पूज्य महात्माजी के सामने सब वातें रखकर उनकी स्वीकृति भिजवाने की चेष्टा करें। तारीख निश्चय यदि पीछे से कर दें तो भी कोई विचार की वात नहीं, लेकिन फरवरी में जो भी तारीख अनुकूल हो वही निश्चित कर सकते हैं। यदि फरवरी मास में अनुकूलता न हो तो मार्च निश्चित कर लें। इस विषय में समय थोड़ा होने का भी विचार न करें, जल्दी से-जल्दी भी इस विषय में यथोचित प्रवंध किया जा सकेगा।

विशेष क्या लिखूं? जिन परिस्थितियों में से हम लोग गुजर रहे हैं उसमें समारोह आदि करने जैसा तो कोई मौका है नहीं, किन्तु पूज्य महात्माजी से इस पुण्य कार्य का आरम्भ हो, यह हमारी उत्कट अभिलाषा है। यह कार्य कैसे सफल होगा, यह तो आप जानें। मैं इसका सारा भार आपपर छोड़ता हूं। यदि इस संवंध में मेरा वहां हाजिर होना आप जरूरी समझें तो वैसी सूचना दें।

भवदीय,
रामदेव आनन्दीलाल पोद्दार

श्री रामेश्वर पोद्दार की ओर से—

: ९१ :

धूलिया,
४-३-३६

पूज्य श्री भाईजी,

सादर प्रणाम !

पूज्य वापू द्वारा 'हरिजन वंधु' में लिखी प्रभु कृपा कैसे प्राप्त करूं, भाईजी? स्वयं वापू को पत्र लिखने की इच्छा होती है, मगर उन्हींकी आज्ञा भंग होगी। हां, आप वापू से पूछकर उत्तर दोगे तो मुझे वहुत आनन्द होगा।

कारण जिसका जैसा अधिकार होता है, वैद्य वैसा ही उसका इलाज करता है। मुझे जीवन-दान देनेवाले बापू और विनोबा के सिवाय कोई नहीं।

मामा के अलग हो जाने पर अब दुकान का भार खींचने में असमर्थता मालूम होती है। पूर्वजों की पूंजी पर मैं मौज कर सकता हूं, मगर सपूत के लक्षण के अनुसार कार्य में वृद्धि नहीं कर पाता। अतः मेरा विचार होता है कि धीरे-धीरे सब व्यापार समेटकर व्याज व भाड़े पर निर्वाह करेंगे। एक शंका यह होती है कि पूज्य विनोबा व्याज की आय पर जीना पसंद नहीं करें तो? तो अब क्या करना मेरा धर्म है? व्यापारादि के विषय में अपने अनुभव के आधार पर बापू और विनोबा के तत्व भी आप जानते हैं। निर्णय प्रदान करेंगे, ऐसी आशा है।

अब निजी मेरी व्यवस्था के लिए भी सोचिये। भाईजी. परमेश्वर की कृपा से बहुत-कुछ है। मैं एक व्यवस्था-पत्र (विल) करना चाहता हूं। मिल की रकम का ट्रस्ट करने के लिए आपकी सलाह चाहिए। आप,विनोबा, जाजूजी मिलकर जो कुछ व्यवस्था कर दोगे वैसा करूंगा। अब श्रीराम भी सज्ञान हो जायगा। उसे सब संभलाकर सिर्फ मिल के रुपये के व्याज से यानी १००) मासिक से मैं अपना काम चलाऊंगा। मूल रकम का ट्रस्ट बनवा दूंगा। स्त्री जीती रही तो उसको अन्न वस्त्र मिलता रहे, इसके अलावा मूल रकम पर कब्जा ट्रस्टियों का हो जाय।

आपका श्रीराम भोले स्वभाव का लड़का है। लड़की आप बतानेवाले हैं। अतएव उस लड़की की व्यवस्था कर देना भी कर्त्तव्य जान पड़ता है। अतएव शुगर मिलवाली रकम की उत्पन्न उस लड़की के नाम पर ट्रांसफर कर देना ठीक होगा। अब रहा प्रश्न माता व भौजाई का। उनकी व्यवस्था पिताजी उईल में कर गये हैं, वह आपको बता दूंगा।

यहां की 'गो-शाला' व 'गो-सेवाश्रम' को पूज्य बापूजी की प्रेरणा से विनोबा जन्म दे गये हैं और वैश्यों का तो धर्म ही गोपालन है। उस आदर्श की पूर्ति होती रहे, यह मेरी इच्छा है—पूज्य बापू व विनोबा को मंजूर हो तो। आज तो उस कार्य से मुझे कोई सन्तोष नहीं है, कारण कि पूज्य विनोबा ने

तो सत्याचरण ही सच्ची गोरक्षा है, ऐसा मंत्र मुझे दिया । ऐसा आदर्श पुरुष जबतक न मिले तबतक गोसेवा होगी नहीं। वैसे यहां की परिस्थिति गोसेवा के बहुत अनकूल है।

चर्मालय के लिए मेरे पास, माताजी को गोसेवा के लिए दी हुई जमीन है। उसका ट्रस्ट अभी तक नहीं बना है। यह भी एक काम है। दान की एक जमीन मेरे पास और है, गोशाला से बराबर तीन मील आगरा रोड सड़क पर। बड़े मौके की है। आप ही ने हरिजन को अपनाने का उपदेश हमें दिया है। पूज्य बापू तो उनके लिए प्राणों तक की बाजी लगा बैठे हैं। अतएव हरि-जनों की सेवा हो, यह मेरा भी कर्त्तव्य है। इन सबको सखी का लाल बनाने में समर्थ होऊं, यह मेरी इच्छा है। पूज्य सरदार काका तो मजाक में ही कहते रहते थे कि जमनालालजी को हरिजन की कन्या दत्तक देकर उसकी शादी श्रीराम से करा दो। मेरी यह हिम्मत तो आज नहीं है, भाईजी, मगर चर्मालय आदि की प्रवृत्ति चलाने जैसी परिस्थिति की अनुकूलता, जो स्वप्न में भी नहीं थी, उसकी थोड़ी हिम्मत मुझमें आ गई है।

गोशाला के पास ही एक घर बांधने की भी योजना है। घर बांधकर बालूभाई और मैं दोनों उसमें रहें, ऐसा विचार आया था। विनोबा से प्रार्थना करके घर तो बनवा लिया है। पर अब तो बालूभाई भी यहां नहीं रहे। खेड़ा में जा बसे हैं। और मुझे अच्छी सोहबत की खास जरूरत है। मेरे ये विचार विनोबाजी को आप ही बता देना। वह आपकी ही बात मानेंगे।

पूज्य साने गुरुजी भी संभवतः यहां रहें, ऐसा सुनता हूं। मेरी इच्छा बापू विचार का एक मासिक महाराष्ट्र से निकालने की है। महाराष्ट्र में कुछ तो बापू के विचारों के अज्ञान के कारण तथा कुछ द्वेष से प्रेरित होकर कुछ लोग विरोध मचा रहे हैं। इन सबका विचार करते हुए सिर्फ बापू के विचार महाराष्ट्र में 'हरिजन बंधु' के जैसे पत्र के द्वारा फैलाये जायं तो ठीक रहेगा। गांधी सेवा संघ के द्वारा इस धूलिया की धूल में भी निर्माण कार्य करो, भाईजी, यह मेरी एक प्रार्थना है।

मन का एक विचार और है, जो पूज्य काकासाहब ने पसद किया है।

विनोबा को भी मैंने लिखा था । विचार तो उन्हें भी पसंद आया। वह यह है कि गोशाला के भवन में 'गांधी मंदिर' बनाना। उसमें बापू के सब ग्रंथ रखे जायं, व संशोधित व संपादित होकर वे प्रकाशित किये जायं। वर्धा की लाइब्रेरी यहां प्रदान करोगे तो महान उपकार होगा। यह सब मेरी प्रार्थना व याचना है। मैंने हृदय खोलकर बहुत-कुछ लिख दिया है। विनोबा से मंत्रणा करके शीघ्र उत्तर देंगे।

आपका,
रामेश्वर पोद्दार

श्री भास्कर फाटक के नाम—

: ९२ :

कलकत्ता,
३-४-३९

प्रिय भास्कर,

तुम्हारा दामोदर के नाम का पत्र देखा। मुझे व्यक्तिगत रूप से तो तुम्हारे लिए कुछ कहना नहीं है। युवकों को, जल्दबाजी व विवेक की कमी के कारण, अपने भावी जीवन में काफी हानि उठानी पड़ती है, खासकर व्यापार के क्षेत्र में तो वे दोष बड़े भारी हो जाते हैं। तुम्हें अपनी भूल नज़र आई, यह तुम्हारे हित की दृष्टि से उचित ही हुआ। तुम्हें भविष्य में इसी तरह सुबुद्धि प्राप्त होती रहे, यही ईश्वर से प्रार्थना है।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

श्री हरिभाऊ फाटक के नाम—

: ९३ :

चिकलदा,
२८-११-३३

प्रिय श्री हरिभाऊ,

मुझे यह जानकर वहुत खुशी होती है कि किसानों की वहवूदी का ख्याल आपकी एसोसियेशन के दिल में है। कांग्रेस के वारे में आपका कहना ठीक है। कांग्रेस का किसानों की वेहतरी चाहना स्वाभाविक और वाजिव ही है। कारण कि भारत में सवसे अधिक संख्या किसानों की ही है। वे ही इस देश के आधार हैं।

चूंकि आपने कृपा तथा प्रेम से पत्र लिखा है, इसलिए मैं आपको सारी परिस्थिति वता देना उचित समझता हूं।

मुझे जव यह वात विदित हुई थी कि जाइंट का भाव अव ज्यादा है तभी मैंने श्री गंगाविसन वजाज तथा अन्य मित्रों से इसे कम करने की कोशिश करने को कहा था। मेरी खुद की इच्छा होते हुए भी पूज्य महात्माजी तथा अन्य अतिथियों के कारण मैं खुद जितनी कोशिश करनी चाहिए उतनी नहीं कर सका। पूज्य महात्माजी के जाने के वाद मैंने खुद भी कोशिश की। जाइंट कमेटी की मीटिंग वुलाई। उम्मीद थी, उसमें संवंधित मित्र लोग समय पर आयंगे। खास-खास मित्र समय पर नहीं आये, इसलिए उनसे समक्ष में वातचीत न हो सकी। मुझे यहां आना था, इसलिए मैं अपने विचार लिखकर श्री गंगाविसन वजाज को दे आया था। मेरा वह पत्र जाइंट कमेटी की सभा में भी पढ़ा गया था, ऐसी मेरे पास खवर आई है। मैं श्री गंगाविसन तथा अन्य मित्रों को सव वातें भली प्रकार समझाकर आया था। वे उस संवंध में वंवई, नागपुर तथा हिंगणघाट भी गए थे।

भाव कम करने में मुख्य अड़चन जाइंट कमेटी के सव सदस्यों का एक मत न होना है। अगर सव लोग भाव कम करने के लिए राजी हो जायं

तो भाव कम करने में खास दिक्कत न हो। लेकिन जव वे राजी नहीं हो रहे हैं तो ऐसी हालत में क्या करना चाहिए, इसका विचार मैं कर रहा हूं। ऐसी हालत में जाइंट का कार्य तोड़ा जा सकता है या नहीं, इसके ऊपर मैं कानूनी राय ले रहा हूं। अभी तक जाइंट तोड़ने की कानूनी सलाह नहीं मिली है। वकीलों का कहना है जवतक सव सदस्य एकमत न हों जाइंट तोड़ना गैर-कानूनी होगा। फिर भी मैंने वंवई के वकीलों से सलाह मंगवाई है। इधर उन लोगों को राजी करने की कोशिश भी करता रहा हूं। देखें क्या परिणाम आता है। सव परिस्थिति देखते हुए उनको समझाना ही समाधान का एक रास्ता दिखाई देता है। आशा है, आप भी इसमें मेरी मदद करेंगे।

मेरी हार्दिक इच्छा है कि पूल का भाव कम हो जाय। पूल का भाव ज्यादा होने से सिर्फ किसानों को ही नुकसान नहीं पहुंचता वल्कि शहर की पेठ को भी धक्का पहुंचता है। आस-पास भाव कम हो और एक जगह ज्यादा हो तो वहां का पैठ तथा दूसरे व्यापार-धंधे सव ही को धक्का लगता है। मेरी हाजिरी में जव-जव जाइंट बनाया गया तव-तव शहर की पेठ की तरक्की को ख्याल में रखकर बनाया गया तथा जव भी उससे पेठ को धक्का पहुंचता दिखाई दिया तव-तव मैंने उसे तोड़ने का आग्रह किया है। कई दफा इसी वजह से जाइंट टूटा और कई दफा वनने से रुका। कई दफा मुझे अकेले को ही विरोध करना पड़ा है, और आज भी मुझे वही काम प्रायः अकेले करना पड़ रहा है।

इसके वाद मैं आपके अंग्रेजी के पत्र की कुछ गलतफहमियां दूर कर देना उचित समझता हूं।

(१) कुछ समय से मैं फैक्टरी का मालिक नहीं हूं। वह एक लिमिटेड कंपनी कर दी गई है। उसमें करीव आधे शेयर मेरे हैं। मेरा इस कंपनी पर यद्यपि पूरा प्रभाव भी है, तथापि दूसरे हिस्सेदारों का ख्याल करने की जिम्मेदारी भी मुझपर आ गई है। यह सव होते हुए भी मेरा विश्वास है कि यह कंपनी गैरवाजिव भाव नहीं रखेगी।

(२) वर्धा में बच्छराज फैक्टरी में दो प्रेस हैं और एक जीन है। एक ही हाते में दो जीने हैं, लेकिन वे दोनों मिलकर एक ही समझी जाती हैं। जावराजीन, जो पहले वर्धा में थी, कई साल से पुलगांव चली गई है। इसलिए उसका जाइंट से कोई संबंध नहीं आता।

(३) अगर हमारी फैक्टरी तथा जीनों का २५-२६ वर्ष का हिसाब देखा जाय तो हमको जब-जब जाइंट हुआ है तब-तब दूसरों को कुछ-न-कुछ देना ही पड़ा है। कभी जीन से तो कभी प्रेस से। खैर यह तो हुई गलतफहमी दूर करने की बात।

अन्त में फिर एक बार आपके प्रेम-प्रेरित पत्र के लिए मैं आपका आभार मानता हूं। मैं आशा करता हूं कि आपकी एसोशियेशन किसानों की सच्ची भलाई के लिए हमेशा प्रयत्न करती रहेगी।

अगर आपको जानना हो कि हमारी तरफ से जाइंट के विषय में क्या-क्या कार्रवाई हो रही है तो आप श्री गंगाबिसन बजाज से जान सकते हैं। मैं आपके पत्र और इस पत्र की नकल उनके पास भेज दूंगा।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

श्री बच्छराज जमनालाल के नाम—

: ९४ :

रांची,

१५-३-३८

पूज्य बच्छराजजी जमनालाल,

ता० १३ का पत्र मिला। पिछले साल एक हजार रुपया बांटा गया था। उसमें से ९४५) वसूल हुआ है, इस बारे में मैं जब वर्धा आऊं तो पूछना। इनके जमाखर्च के बारे में और समझकर करूंगा।

ता० १४ का भी पत्र मिला। मन्दिर के जो रुपये श्री वालकृष्ण गोपाल राव पुरनवार में निकलते हैं, इसके संवंध में यहां से तो लिख नहीं सकता, क्योंकि मुझको इनकी ठीक अवस्था का पता नहीं। उनकी परिस्थिति कैसी है, यह मालूम होने पर ही कहा जा सकता है। अधिक समझने के लिए मेरी समझ से चि० राधाकृष्ण से पूछकर मन्दिर की कमेटी बुला ली जाय। कमेटी इस वारे में कुछ तय कर सके तो ठीक है। राधाकृष्ण, काका-साहव, गंगाविसन की राय लेकर फैसला कर सकते हैं।

मेरा यहां ता० १७ तक रहने का विचार है। ता० १८ को पुरुलिया और डालमियानगर होते हुए ता० २१ को गोमो पहुंचने का इरादा है। वहां से निकलकर कलकत्ते होते हुए ता० २५ को उड़ीसा गांधी-सेवा-संघ की कांफ्रेंस में डेलांग जाने का विचार है। मेरा स्वास्थ्य ठीक है। यहां ठीक आराम व शान्ति मिली। चिरंजीव सावित्री के नाम की दो सौ की हुंडी उसे दे दी गई है।

जमनालाल वजाज का वन्देमातरम्

: ९५ :

कर्णावतों का वाग,
जयपुर,
१८-५-३९

पूज्य वच्छराजजी जमनालाल,

ता० १४, १५, १६ के पत्र मिले। मेरा स्वास्थ्य ठीक है। गोड़े में दर्द है। इसका इलाज ठीक से चालू हो गया है। श्री नंदकिशोरजी राजवैद्य व लच्छीरामजी वैद्य की सलाह से इलाज शुरू कर दिया है। उससे फायदा मालूम हो रहा है। कल एक एक्सरे भी लिया, चिंता की वात नहीं।

चि० दामोदर जाजू के विवाह में मेरी राय से द्वारकादास का जाना ज्यादा जरूरी है। यह लड़कीवालों से परिचित है, तथापि पू० जाजूसाहव कहें उस एक को चला जाना चाहिए।

डिगरस केस का फैसला हो गया, सब निर्दोषी ठहरे, सो मालूम हुआ। भविष्य में इस प्रकार की मूर्खता (पागलपन) न होने पाये, इसकी पूरी जिम्मेवारी सबको समझ लेनी चाहिए।

आगरा दोसौ रुपये भेज दिये होंगे, नहीं तो भेज देना।

श्री. . .से कहना कि उनका ता० ८ को भेजा पत्र मुझे १७ ता० को मिला। उनके काम से किसीको सन्तोष नहीं है व काम भी कम है। अगर यह बात ठीक हो तो उन्हें चिरंजीलाल समझाकर, एक-आध महीने का प्रश्न हो तो उस प्रकार उनसे कमल की राय लेकर फैसला कर लें। उनसे कह देना कि जहांतक कमलनयन से पूरी रिपोर्ट नहीं मिलेगी वहांतक मैं उसके निर्णय में फरक नहीं करना चाहता, क्योंकि मुझे अब उसपर जिम्मेदारी डालनी है।

नागपुर बैंक की ओर से ता० १०-५ का पत्र आया है। प्रस्ताव सही करके भेजा है। उन्हें भिजवा देना। मैंने तो त्यागपत्र दे दिया था। फिर प्रस्ताव क्यों भेजा है, यह तपास करा लेना। मेरे स्थान में अन्य डायरेक्टर की आवश्यकता समझें तो कमलनयन को कर सकते हैं।

करन्दीकर का पत्र मेरे नाम आया हुआ भेज रहा हूं। चिरंजीलाल, द्वारकादास अपनी राय के साथ कमल के पास भेजकर राय मंगवा लें और मुझे भी सूचित कर दें।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

: ९६ :

जयपुर,
१३-६-३९

पू० वच्छराजजी जमनालाल,

श्री लक्ष्मीनारायण मन्दिर की ओर से गोकुलदास का पत्र आया है। नासिकवाले सीतारामजी शास्त्री से मन्दिर की रकम लेनी है। वह हिसाब नहीं करें व किस्त वगैरा करने को भी तैयार नहीं हों, तो उनपर नालिश

कर दी जाय। मियाद के वाहर रकम नहीं जानी चाहिए। इनके पास जमीन-जायदाद है।

जमनालाल वजाज का वन्देमातरम्

: ९७ :

जयपुर,
१७-६-३९

पू० वच्छराजजी जमनालाल,

दो पत्र मिले।

सेगांव के बारे में मेरी तो यह राय है कि वगीचे का पूरा खेत व इमारतें उन्हें देनी हैं। दूसरे खेत अपने होंगे तो भी राधाकिशन से वात करके कमल यहां आयेगा तव निश्चय हो जायगा, नहीं तो वाद में।

रामकृष्ण पहुंच गया, यह ठीक हुआ। श्री कुन्दनवेन वहां आई है। वह कौन है? कहां की रहनेवाली है? पूरा विवरण लिख भेजना। व्यवस्था तो आश्रम में की होगी।

श्री सीताराम शास्त्री के प्रोनोट के ही लिए नासिक किसीको भेजने की जरूरत नहीं। वम्वई आते-जाते कोई वहां ठहर सकता है। विना कारण दस-पंद्रह रुपया खर्च करने से क्या लाभ?

पुलगांव मिल के फार्म पर सही कर भेजी है। क्या पहले मेरी हिंदी में सही नहीं है? अगर हिन्दी में हो सके तो दूसरा फार्म भिजवा देना नहीं तो यह है ही। मैं वैद्य नंदकिशोरजी से तपास कराता रहता हूं। कालूराम के लड़के की तवीयत ठीक नहीं हो रही है, इलाज तो वह ध्यान देकर करते हैं। श्री लच्छीरामजी तो खुद सख्त वीमार हो गये हैं।

अखवारों में तो सी० पी० में वारिश अच्छी हुई लिखा है, इधर भी थोड़ी हुई है।

पूज्य वापूजी व उनके मेहमानों की व्यवस्था उनकी इच्छा मुजव करते रहने का पूरा ख्याल रखना।

श्री दरबारीलालजी को कहलवा देना कि उनका पत्र मिल गया। समक्ष में जब मिलना होगा तभी खुलासा हो सकेगा।

कमल का पत्र उसे आते ही दे देना।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

: ९८ :

जयपुर-जेल,
२-७-३९

पूज्य बच्छराजजी जमनालाल,

श्री रामनरेश त्रिपाठी के यहां 'मुस्लिम संत'नामक पुस्तक की २५० प्रतियां हैं। लागत-कीमत इस पुस्तक की ११ आने है। उनसे लिखा-पढ़ी करके यह पूछ लेना कि वे लागत-कीमत में किताबें देने को तैयार हैं क्या? यदि लागत-कीमत पर किताबें प्राप्त हो सकें, तो मंगा ली जायं और रुपये त्रिपाठीजी के खाते में जमा किये जायं। किताबों के बारे में मेरे बाहर आने पर पूछ लिया जाय। अढ़ाईसौ किताबों में से दोसौ वर्धा मंगा ली जायं व पचास जयपुर भेज दी जायं। रुपये खाते में जमा हों, तो ही मंगाना है।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

: ९९ :

जयपुर,
५-७-३९

श्री बच्छराजजी जमनालाल,

श्री गौरीलालजी की ओर से थोड़ी चिंता हो रही है। बीमारी बहुत ज्यादा बढ़ गई। आज सुना है कि प्रजामंडल में तार आया है कि आशा बिल्कुल नहीं रही। मेरा तार मिल गया होगा। उनकी हालत की पूरी-पूरी स्थिति लिख भेजना। कम-ज्यादा हो जायं तो उनके पीछे फिजूल खर्च बिल्कुल नहीं करना है। भगवानदास की इच्छा होगी वह उनके स्मारक में लगा दी जायगी। भगतपुर में या वर्धा में क्रिया-कर्म ठीक तौर से करा देना चाहिए।

द्वारकादास भैय्या का पत्र उसे बन्द ही देना। उसके दिल का दर्द वगैरा जो हो सो कमल, चिरंजीलाल को ध्यानपूर्वक व शान्तिपूर्वक समझ लेना चाहिए।

विट्ठल के समाचार उसे कह दिये हैं। उसका लड़का पढ़ने जाता है, यह ठीक हुआ। फीस वगैरा का इन्तजाम ठीक होगा। लड़का व उसकी मां को तकलीफ न होने पाये।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

: १०० :

पूज्य बच्छराजजी जमनालाल,

श्री रामनरेश त्रिपाठी ने वर्धा व यहां जयपुर में मुस्लिम सन्तों की किताबें भेजी हैं। उसकी लागत कीमत ग्यारह आना फी किताब है। उस मुजब यहाँ तो पचास पहुंच गईं है। आपके पास १५० किताब पहुंच गई हों तो दो सौ किताबों के रुपये उनके खाते जमा कर मेरे हस्ते खाते लिख देना। किताबें अच्छी हैं। तुम एक रुपये या १२-१२ आने की कीमत से बेंच सको तो बेचने की व्यवस्था करना। इन्होंने छः पुस्तकें और भी भेजी हैं। उसके ४ रुपये दो आने भी इनके जमा-खर्च कर लेना और इन्हें लिख देना।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

: १०१ :

जयपुर,
१७-७-३९

पूज्य बच्छराजजी जमनालाल,

श्री बाबासाहब देशमुख आजकल वर्धा रहते हैं या अपने गांव रहते हैं? उनके खर्चे के लिए पूर्ववत् रु० ५०, ५५ जारी रखे जायं। मेरे बाहर आने पर इस बारे में फिर पूछ लें।

डा. महोदय को, 'डेली न्यूज' में जो खबरें निकली हैं, उनसे संतोष हो जायगा। पहले से गोड़े का दर्द किंचित कम है। पर अब एड़ियों में शुरू

हो गया है । विजली का इलाज जारी है । आराम तो धीरे-धीरे ही हो सकेगा ।

श्री गोरेलालजी के स्वर्गवास का चि० कमल के नाम का तार आया है, ऐसा अभी दामोदर से मालूम हुआ। साथ का श्री भगवानदास का पत्र उन्हें पहुंचा देना। बीच में उनके वारे में आशा होने लगी थी, पर ईश्वर की जैसी इच्छा होती है वही होता है। इस मौके पर उनके खर्च (मोसर) वगैरा का आडंवर न हो, इसका ध्यान रखना ।

जमनालाल वजाज का वन्देमातरम्

: १०२ :

सीकर,
२६-९-३९

पूज्य वच्छराजजी जमनालाल,

यहां इस वर्ष वहुत भयंकर अकाल है। यहां से कुछ लोगों को देशावर भेजना ही पड़ेगा, ऐसी परिस्थिति है। वहां चि० गंगाविसन, चि० कमल आदि सव सलाह करके मुझे सूचित करें कि वहां फैक्टरी, दूकान व अन्य कामों में कितने लोगों को लगाया जा सकता है। मैं जयपुर ता० २८ की सुवह पहुंचूंगा ।

जमनालाल वजाज का वन्देमातरम्

: १०३ :

पूना,
११-१२-३९

पूज्य वच्छराजजी जमनालाल,

कल शाम को शंभू का तार आया, जिससे मालूम पड़ा कि विट्ठल के छोटे वच्चे का फिट के समय देहांत हो गया। विट्ठल की पत्नी को सान्त्वनां देना तथा उससे पता करके लिखना कि वह इस समय विट्ठल को वहां बुलाना चाहती है क्या ? यहांपर विट्ठल मेरे काम में दवा-इलाज आदि में

रहता है। यदि बच्चा बीमार रहता, तो विट्ठल वहां जाकर कुछ सेवा बच्चे की कर सकता; परंतु फिर भी उसकी पत्नी से पूछ लेना और वह अच्छी तरह रह सके, ऐसा इंतजाम कर देना। रुपये-पैसे खर्च के लिए चाहिए तो शंभू को कह देना।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

: १०४ :

जयपुर,
४-४-४०

पूज्य बच्छराज जमनालाल,

मैं यहां परसों पहुंचा। समझौते की बातचीत चल रही है। ता० १० को फैसला होगा। आज तार दिया है, वह मिला होगा।

ता० १५ को वर्किंग कमेटी की मीटिंग वर्धा में होगी। यदि यहां का मामला निपट गया तो मैं वहां आने की कोशिश करूंगा, वरना नहीं आऊंगा। गर्मी के दिन होने की वजह से वर्किंग कमेटी के सब सदस्यों के रहने का अच्छा प्रबंध होना चाहिए। सागरमलजी से कह देना कि ठंडे पानी व खस की टट्टी की व्यवस्था रखें। मौलाना कांग्रेस के सभापति के नाते प्रथम बार आनेवाले हैं। उनका श्री गोपालराव काले को कहकर ठीक स्वागत कराने की व्यवस्था करा देना।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

: १०५ :

जयपुर,
३१-८-४०

पूज्य बच्छराज जमनालाल,

श्री जगदीशशरण गुप्त, भंवरीलाल जैमिनी व गोवरधनलाल बंसल के प्रामिसरी नोट के बारे में लिखा, वह मालूम हुआ। इनपर मुकदमा करने

की जरूरत नहीं। इन तीनों की पढ़ाई के सिलसिले में रुपये दिये गए थे। यदि इनकी तरफ से आ जाते हैं तो ठीक, वर्ना यह रकमें बट्टे खाते लिख दी जा सकती हैं।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम

: १०६ :

सीकर,
२-१०-४०

श्री बच्छराजजी जमनालाल,

आपका २८ ता० का पत्र मिला। कलकत्ते की जमीन के बारे में पावर आफ अटरनी कराकर मदनलाल भट्टड़ को भेज दिया होगा। मैं पूज्य बापू-जी से मिलने दिल्ली चला गया था। आज लौटा हूं। पू० बापूजी वहां पहुंचे होंगे ही। ११ ता० को वर्किंग कमेटी की मीटिंग वर्धा में होगी। उसका सब इन्तजाम करालें। मीटिंग में श्री राजेन्द्रबाबू का व मेरा आना संभव नहीं है। पूज्य राजेन्द्रबाबू तो इस समय मास के अंत तक यहीं रहेंगे। मेरा परसों यहां से जयपुर होते हुए उदयपुर जाने का विचार है। वहां से वापस जयपुर ता० ९ को आना होगा। बाद में वनस्थली जाने का विचार है।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

श्री गंगाबिसन बजाज के नाम—

: १०७ :

नासिक रोड जेल,
१३-१-३१

चि० गंगाबिसन,

पूज्य जाजूजी के नाम का पत्र व 'टाइम्स' पत्र की घटाटे के मुकदमे की प्रीव्ही कौंसिल के फैसले की कटिंग भेजी है। तुम पढ़कर पूज्य जाजूजी को दे

देना। मुलाकात पहले निश्चय के अनुसार अगर ता० १५ को होनेवाली हो तो वर्धा से चि. कमल या प्रल्हाद कोई भी एक जना आवे। उसके साथ पूज्य जाजूजी के पत्र में लिखे मुताविक विगतवार समाचार भिजवा सको तो नोट कराकर भिजवा देना। मुकदमे के सम्बन्ध में तो, कोई न भी आने वाला हो तो, जेल के पते से सीधे समाचार भिजवा सकोगे। उस पत्र में भी राजी-खुशी के समाचार तो अवश्य लिख सकते हो। जैसा मैंने पहले कई वार लिखा है व इस वार भी पूज्य जाजूजी के पत्र में लिखा है कि चि. राधाकृष्ण या तुम्हें, मौसम आदि के कारण समय न मिले तो कोई और एक याने वियाणी या संभाजी, संभव हो तो महीने में दो बार नहीं तो एक वार व्यापार के मामूली विस्तार से जैसे बच्छराज जमनालाल, उधारी, नागपुर मुकदमा, मित्रों की प्रसन्नता, आश्रम व घर के लोगों के समाचार आदि देते रहने चाहिए। पूज्य मां को मेरा प्रणाम कह देना। वाई केशर वगैरे सबोंको मेरी राजी-खुशी के समाचार कह देना।

इस साल चोरी, लूट-पाट आदि का ज्यादा डर है, सो पहरेवाले ईमानदार व खातरी के रहें तथा जोखम कम रहे, इसका पूरा ख्याल रखना। बीमा आदि बराबर बेच रखना। अपने पास (ब० ज०) इस समय हाथ में कितनी रकम है। एक विचार यह होता है कि जहां कम्पनी की खरीदी न हो वहां अथवा कम्पनी की खरीदी वंद हो उस समय रकम जितनी हाथ में हो उसकी रुई लेकर बीमा वगैरा सव वरावर वेचकर गोदाम में जाप्ते के साथ, दूसरे वर्ष निकाली जा सके ऐसी व्यवस्था से, भरकर रख दी जाय। इसमें भाव की ज्यादा जोखम नहीं मालूम होती। लूट-खसोट तथा राजनैतिक मामले के कारण कोई अनधारी जोखिम आ जाय तो दूसरी वात है। तुम्हारी क्या राय है? माल भर रखना हो तो कहां ठीक रहेगा? कितनी रकम छूटी हो सकती है? वर्धा में ही माल भरना पड़ेगा तो कम्पनी की परवानगी लेकर व जिस समय उनकी खरीदी न हो उस समय भरना ही ठीक रहेगा, या अन्य किस प्रकार? चिरंजीलाल, पूनमचन्द कव छूटेंगे? श्री मोहनलालजी सादू के मार्फत, श्री तुलसीरामजी तेली की अकाल मृत्यु के कारण,

उनके घरवालों को मेरी समवेदना व उनके दुःख में सहानुभूति पहुंचा देना। तुलसीराम के कितने वच्चे हैं? क्या उमर है? चि. कमला को कहना, उसने भी पत्र नहीं लिखा। अगर वह वर्धा से सीधे आनेवाली हो तो जेल में विगतवार विहार, वंगाल, वर्धा का उसका अनुभव लिख लावे।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १०८ :

पौष सुदी एकादशी, १९८८,
जनवरी, १९३१

चि. गंगाविसन,

तुम्हारा ता. २३ का व राधाकृष्ण का पत्र मिला। समाचार जाने।

वर्धा, वम्बई का आकंड़ा आज मिला है। फुरसत से देख लूंगा। उधारी वसूली के वारे में मेरे विचार पहले लिखे ही हैं, उसका ध्यान रखना।

पूज्य वालारामजी का पत्र आया सो ठीक। उन्हें जवाव देना कि रकम की अभी जरूरत है। देस से लिखा है। अगर वह जल्दी आनेवाले हों तो आने पर कह देना।

मेघे व परमानंद की आधी रकम भी आ जावे तो और समय दियाजा सकता है। परमानन्द अगर तीन हजार भी जमा कर देवे, तो ठीक है, परंतु उसके करार व जवान का तो कोई ठिकाना ही नहीं रहा।

श्री गौरीलालजी, भगवानदास का स्वास्थ्य ठीक है, सो वरावर सुधर जाय, ऐसा इलाज या साधन होना जरूरी है।

दुर्गादत्त की माता को एक वर्ष के लिए आठ रुपया मासिक देने का पूज्य जाजूजी ने निश्चय किया, सो ठीक किया। वाद में फिर विचार करना जरूरी होगा तो किया जा सकेगा।

वाई वसन्ती लड़के के इलाज के लिए रु २००) मांगती है, सो ठीक। २५) मासिक देना वंद कर रु० २००) एकमुश्त खुर्जे जाने व इलाज कराने

को इसे दे देना और कह देना कि वापस जमा कराने की चिन्ता-फिकर नहीं रखना। सहायता खाते में देना।

जीन, प्रेस व नागपुर के मुकदमे के सम्वन्ध में समाचार जाने।

व्यापार में आगे जाकर शायद गुंजाइश रहने लग जाय।

चि. शान्ती की मां की तवीयत अव ठीक हो गई होगी। कमजोरी हालत में काम का बोझ कम पड़े, ऐसा ख्याल रखना।

वलवंतरावजी देशमुख,तुलसीराम तेली, गोविन्दरामजी जटिया की मृत्यु के समाचार जाने। खेद हुआ।

घासीरामजी आ गये, लक्ष्मण कल आवेगा, सो ठीक।

जमनालाल वजाज

: १०९ :

मोरांसागर (जयपुर-जेल)
१३-४-३९

चि. गंगाविसन,

मेरे समाचार तो मिलते ही रहते हैं। मेरा स्वास्थ्य ठीक है। चि. शान्तावाई के पत्र से मालूम हुआ कि नर्वदा वर्धा आ गई है। उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं है। गर्भवती भी है व साथ में अपेंडिसाइटिस की शिकायत वताते हैं। ऐसी नाजुक हालत में आपरेशन में भी थोड़ा डर रहता है। सो तुम अपने यहां की लेडी डाक्टर व सिविल सर्जन की, डा. महोदय के साथ, राय लेना। उनका क्या कहना है? आपरेशन कराना वहुत जरूरी है या नहीं? ऐसी हालत में दूसरा क्या इलाज हो सकता है? तुम केशरवाई से व नर्मदा से मिलते रहना। इलाज वगैरा की जो उचित व्यवस्था समझो करवाना। चि. राधाकृष्ण वहां नहीं है, सो तुम वरावर ख्याल रखना। चि. प्रहलाद भी वहां नहीं हैं। चि. श्रीराम वर्धा ही होगा? चि. शान्ती की परीक्षा हो गई होगी। वैसे तो पास होने की आशा होगी? चि. रमा, हरगोविन्द वगैरा सव राजी होंगे।

जमनालाल वजाज का वन्देमातरम्

: ११० :

पूना,
७-११-३९

चि. गंगाविसन,

तुम्हारा ता. ४-११ का पत्र मिला। कल तुमको एक पत्र दिया है, मिला होगा। श्री लूणसिंहजी के लड़के भोपालसिंह को दूकानदारी, आंक वगैरा सिखाना चाहिए। स्कूल में पढ़ाने की तो मेरी राय नहीं है। दूकान का काम सीख सके तो ठीक है। अतः तुम उसके बारे में सोचकर तय कर लेना।

वंशीधर के बारे में समाचार मालूम हुए। तुम तथा शिवनारायणजी मिलकर व सोचकर इसे वर्धा या और कहीं वर्धा के नजदीक किसी काम पर लगा सकते हो तो देखना। अन्यथा चि. रामेश्वर को लिखकर गोला भेज देना। साथ में वामनराव जोशी का पत्र भेजा है। इनके बारे में भी सोच-कर. यदि इनका कुछ कर सकते हो तो, देखना।

श्री पुरुषोत्तमदास जाजोदिया काम करना चाहते हैं। कोई व्यवस्था कमलनयन की सलाह से हो सकती हो तो विचार करना।

गुलाबचन्द को फैक्टरी में तो नहीं रखना चाहिए। सब घर के एक जगह नहीं रखना चाहिए, तुम्हारी यह राय बिलकुल ठीक है। उसकी खुद की क्या इच्छा है। वह किस प्रकार का काम पूरी जवाबदारी से कर सकता है, तपास करना। क्या वह बंगले की पूरी जिम्मेवारी उठाने को तैयार है? उसे ही कहना कि चि. राधाकृष्ण, कमल के आने पर उससे बात करके सूचना भेजें।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

श्री चिरंजीलाल बड़जाते के नाम—

: १११ :

वर्धा,
१६-१०-३४

प्रिय चिरंजीलाल,

तुम्हारा ता. १५-१०-३४ का पत्र मिला। १५ हजार की चीजें नीलाम हुईं, लिखा, सो ठीक। मैंने तो एक लाख अन्दाज किया था। वृजमोहनजी को पावर मिली, यह अच्छा हुआ। आशा है, भविष्य में सारा कार्य ठीक तरीके पर चलेगा। कम-से-कम एक लाख का गहना तो नीलाम में विक जाय, तो ठीक रहे। चि० वृजमोहन नीलाम के समय रहता है, यह ठीक है। उसकी सलाह से वेचने का ख्याल रखना। वृजमोहन का पावर तो पक्का है न ? वह कैंसिल तो नहीं करा सकेगा ना ? मेरा कांग्रेस के समय आना होगा या नहीं, इसका निश्चय पू० राजेन्द्रवावू के यहां आने पर होगा। वंगले का क्या हुआ ? तुम्हारे लिए यह घर का काम है। तुम चिन्ता नहीं करना। वंगला और गहना विक जाय. वाद में कालवादेवी का मकान भी कोशिश करके वेचना पड़ेगा।

जमनालाल वजाज का वन्देमातरम्

श्री चिरंजीलाल बड़जाते की ओर से—

: ११२ :

बम्बई,
२१-१०-३४

माननीय पूज्य सेठजी,

सविनय प्रणाम !

अभी तक सव जेवर अस्सी हजार का विक चुका, वाकी नीलाम का है। मुझे संदेह है कि सव नीलाम कल खतम हो सकेगा। दो चीजें भारी

रखी हैं, उसके लिए क्या होता है सो फिर लिखूंगा । ये दो भारी चीजें बिक जायं तो सब जेवर १। लाख के अंदाज हो जायगा। श्री जमीयतराम जिद कर लेते हैं। वाजिब बात भी कभी-कभी सुनते नहीं, इसलिए काम निपटने में देरी हो रही है। जिस परिस्थिति में हैं, उस हालत में काम तो समझा-बुझाकर ही पटाना पड़ेगा।

कृपा रखिये।

आपका,
चिरंजीव

श्री चिरंजीलाल बड़जाते के नाम---

: ११३ :

वर्धा,
२४-१०-३४

प्रिय चिरंजीलाल,

तुम्हारे दोनों पत्र मिले। जेवर एक लाख आठ हजार के अंदाज का बिक गया और दस हजार के करीब और बिकेगा, सो ठीक। जो पुराना जेवर हो वह इस मौके पर बेच देना आवश्यक है।

और दूसरे देने को नहीं होगा, फिर तुमने लिखा है, उस प्रकार देना, नोटिस व पत्र की नकल देखी, अब इसकी चिंता करने का कारण नहीं। तुम अपना काम करते रहो। बंगला बिक जाना जरूरी है। चि. शांता को यह पत्र पढ़ा देना। चि. मदालसा का ज्वर उतर गया है। मेरा स्वास्थ्य ठीक है। थोड़े मानसिक आराम की जरूरत है। वह मिलने से ठीक हो जायगा। बंगले का सौदा पक्का होते ही मुझे तार से खबर देना। मुझे बंगले की थोड़ी चिंता रहती है।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

: ११४ :

कलकत्ता,
८-३-३५

प्रिय चिरंजीलाल,

तुम्हारा ६-३ का पत्र मिला। आशा है, तुम बंबई पहुंच गये होगे।

तुम्हारे ऊपर जो डिग्री हुई उसका कामठी जाकर तुम फैसला कर आये, उसकी विगत मालूम हुई। पहली किश्त में जो तुमने ५००) नकदी देने का किया है, सो उसकी क्या व्य स्था की है, सो लिखना।

चि. शांता का मेरे पास भी पत्र आया है । जमीयतराम की रिसीवर बैठाने की सलाह को मैं अच्छी तरह समझ नहीं सका हूं। तुम वहां जमीयतराम, नरोत्तम तथा अन्य मित्रों से सलाह करो और जिसमें श्रीनिवास का लाभ हो, उसपर विचार करना चाहिए। चि. रामनिवास तथा वहन सुवटादेवीजी से मिलकर उनकी राय भी जान लेना। मैं वर्धा पहुंचने पर जाजूजी से सलाह करके लिखूंगा । परंतु उसमें देर लगना सम्भव है।

समाचार-पत्रों में जो खवर छपी थी, वह मुझे भी बुरी लगी थी। इसके वारे में दर्यापत करके रखना कि पूरा सबूत हो तो उसपर मानहानि का मुकदमा चलाया जा सकता है या नहीं । प्रेसवालों से खातरी कर लेना कि मोती द्वारा ही वह खबर छपाई गई है क्या ? जो ईश्वर पर भरोसा और श्रद्धा रखता है, अपनी नीयत साफ रखता है, सचाई से काम करता है, वह हिम्मत नहीं हारता है। उसे इधर-उधर की निंदाओं से घवराना नहीं चाहिए। जिसकी कार्यपद्धति खराव है और नीयत साफ नहीं है तथा ईश्वर पर श्रद्धा नहीं है, वही हिम्मत हारते हैं। तुम्हें तो सदा हिम्मत और सदाचार से काम करते रहना चाहिए।

चि. शांता से कहना कि घवराने की कोई वात नहीं है।

उन तीन चीजों में से जिसकी यहां कम कीमत उठेगी, वह बंबई भिजवा दूंगा।

जमनालाल बजाज के वन्देमातरम्

श्री चिरंजीलाल बड़जाते की ओर से—

: ११५ :

३-७-३६

पूज्य सेठजी,

सविनय प्रणाम! आपने श्री राजेंद्रबाबू के एस्टेट के बारे में तथा हिसाब के संबंध में रिपोर्ट मांगी, वह नीचे मुजब है—

१. श्री घनश्यामदासजी बिड़ला ने रु० ४५,०००) श्री राजेंद्रबाबू को दिये, उसके एवज में श्री बिड़लाजी के आज्ञानुसार आपके नाम से मार्गेज पजेशन यानी कब्जा गिरवी करा लिया गया था। यह रकम वह ९ वर्ष में देंगे। नौ वर्ष में रुपये नहीं दिये तो एस्टेट अपनी हो जायगी। मार्गेज पजेशन होने से रुपया ब्याज तो हर साल एस्टेट की आमदनी से आता जायगा। एस्टेट की कीमत, जल्दी से बेची जाय तो २५-३० हजार अंदाज की है। अगर लेनेवाले को जरूरत हो तो इससे ज्यादा कीमत आ सकती है।

मार्गेज पजेशन होने से आगे-पीछे शायद रकम नहीं आई, तो नालिश वगैरा नहीं करनी पड़ेगी व पूरी एस्टेट अपने कब्जे में है।

२. अपनी रकम २७,०००) है, जिसका सादा गहनी दस्तावेज दुकान के नाम से करा लिया गया है।

श्री घनश्यामदासजी से मेरे छपरा से आने के बाद जो बातचीत हुई थी वह इस प्रकार है—

(अ) जीरायत की जमीन बंदोबस्त करने की बातचीत चल रही है। अगर यह कायम हो गया तो १५-२० हजार की रकम जल्दी आ सकती है।

(ब) बिजली के कारखाने में जो पूज्य बाबूजी की रकम लगी है उसका बिहार बैंक से सेटलमेंट हो रहा है। अगर सेटलमेंट हो गया तब तो डिबेंचर पर शेयर मिल जायंगे और अपनी रकमों में कसर नहीं लगेगी।

(क) श्री बिड़लाजी ने मुझसे पूछा था कि ४५,०००) गिरवीवाली आज की कीमत से कितनी एस्टेट है व २७,०००) की कितनी कीमत है।

तब मैंने यह कहा था कि ४५,०००) वाली गहन की एस्टेट की कीमत २५-३० हजार है व २७,०००) की आज की कीमत १५-१७ हजार तक लग सकेगी।

इस प्रकार वातचीत हुई थी, सो आपके घ्यान में लाने को लिखा है। एस्टेट के वेचने के संवंध में पूज्य राजेन्द्रवावूजी को हमेशा लिखा गया है, परंतु पूज्य वावूजी को कांग्रेस के कामों के सवव से फुरसत नहीं मिली। इस कारण एस्टेट नहीं विकी।

अभी एस्टेट लेने के गाहक कम हैं। जव एस्टेट विकने का मौका दिखेगा, उस समय पूज्य वावूजी को पूछकर व विहार जाकर एस्टेट वेचने की कोशिश की जायगी। ऐसा मौका माघ या फाल्गुन तक आवेगा। उस समय गन्ने की रकम लोगों के पास रहती है। अभी तक इलेक्ट्रिक या विहार वैंक का कोई सेटलमेंट नहीं हुआ है।

चिरंजीलाल बड़जाते

श्री चिरंजीलाल बड़जाते के नाम—

: ११६ :

बम्बई,

२७-५-३७

प्रिय चिरंजीलाल,

तुम्हारा ता० २६-५ का पत्र मिला। सेगांव के विषय में घवराने की जरूरत नहीं। तुम वलवंतसिंह से मिलकर सव वातें समझकर कर लेना। वहुत करके तो वह समझ ही जायंगे और मान लेंगे। यदि अच्छी तरह समझाने पर भी नहीं समझें और दोष उन्हींका हो तो सव वातें पूज्य वापूजी को समझाकर कह देना। यदि तुम्हें उन्हें कहने में संकोच हो तो मुझे लिख भेजना। मैं तुम्हारा वह पत्र और दीवानजी का पत्र उन्हें भेज दूंगा।

जमनालाल वजाज का वन्देमातरम्

: ११७ :

बम्बई,
९-१०-३७

प्रिय चिरंजीलाल,

तुम्हारा ता. ६-१० का पत्र मिला। श्री बच्छराजजी जमनालाल के काम का बंटवारा तुममें और द्वारकादास में हुआ। काम बांटने का पत्र पढ़ लिया है और वह इस पत्र के साथ भेज रहा हूं।

ब० ज० के बारे में बातचीत तो मेरे वर्धा आने पर विशेष रूप से होगी। तुम मुझसे फिर भी जो पूछना चाहो समय-समय पर लिखकर या मिलकर पूछ सकते हो। आज मैंने तार भेजा है। श्रीमन्नारायण और श्री रामनारायणजी बीमार हैं। उनकी दवा, सेवा आदि की व्यवस्था करा दी होगी। श्री बृजमोहन बिड़ला कल शाम को वर्धा पहुंचेंगे। उनके रहने की व्यवस्था बंगले के ऊपर के कमरे में, जहां जवाहरलालजी ठहरते हैं, कर देना। पौनार, मगनवाड़ी, नवभारत-विद्यालय, महिला-आश्रम, नालवाड़ी वगैरा भी उन्हें समय मिले तो दिखा देना। भोजन की ठीक व्यवस्था जरूरी है। वह दूध ज्यादा लेते हैं। चि. गोवर्धन को बराबर समझा देना। भोजन के समय तुम वहां जा सकते हो।

जमनालाल बजाज के वन्देमातरम्

: ११८ :

जुहू,
७-११-३७

प्रिय चिरंजीलाल,

तुम्हारा खास पत्र मिला। उसमें बहुत-सी सूचनाएं अवश्य विचार करने योग्य हैं। तुम्हें उसमें संकोच करने का कोई कारण नहीं। जो तुम्हें उचित लगे, वह जब मुझसे मिलो तो कह दिया करो या लिख दिया करो। वर्धा में मुझसे समय लेकर मुझे सब बातें समझाना। छः वर्ष के नफे-नुकसान का जो हाल तुमने लिखा, वह मुझे बराबर समझ में नहीं आया। अब अपनी

घरू इमारतें तो वर्धा में नई बन नहीं रहीं—शिक्षा-मंडल या महिला-मंडल में कुछ इमारतें बनाना जरूरी हो गया था। वह भी बहुत समय तक विचार-विमर्श तथा पूज्य जाजूजी की राय लेकर ही निश्चित करना पड़ा था।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

: ११९ :

जयपुर,
३-२-३९

प्रिय चिरंजीलाल,

दुकान के व तुम्हारे पत्र मिले। तुम वर्धा पहुंच गये, यह ठीक हुआ। मुझे थोड़ी चिंता थी, खासकर मेहमानों की व्यवस्था की। अब तो कमल भी पहुंच गया है। राम वहां है ही। ठीक व्यवस्था कर लेंगे। चतुर्भुज-भाई बैंक के डायरेक्टर हो गये, जानकर खुशी हुई। पूनमचंद मिल गया है। सब समाचार तो कमल कहेगा ही। मुझे जो करना था, मेरा अभिप्राय, काम करने की पद्धति वगैरा की चर्चा उससे हुई है। श्री पुरुषोत्तम बैरिस्टर से फैसला हुआ होगा, नहीं तो फिर नोटिस देकर नालिश कर दी जाय। इन्कमटैक्स में जमनालाल संस करने से काफी नुकसान हुआ। सुपरटैक्स भी देना पड़ा। यह बात मेरी समझ में बराबर नहीं आई। मेहमानों का कार्य हो जाने के पश्चात मुझे सविस्तर लिखना। अबतक खेती की हालत ठीक होगी।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

श्री नारायणदास बाजोरिया की ओर से—

: १२० :

कनखल,
२६-२-४१

पूज्यवर,

सादर प्रणाम !

मैंने समाचार-पत्रों में पढ़ा कि आपका स्वास्थ्य कुछ ठीक नहीं था,

अतएव आप शिमला स्वास्थ्य-लाभ के लिए गये हैं। आशा है, आपका स्वास्थ्य अब सुधर गया होगा और आप पूर्ण स्वस्थ हो गये होंगे ?

आप तथा आपके चि. रामकृष्णजी इस पुण्य कार्य में तपस्या कर रहे हैं। मेरी भी इच्छा है, किन्तु शरीर में रोग मंदाग्नि प्रायः सदा रहने से जाने का सौभाग्य नहीं मिलता। वैसे तो सब ही मरते हैं, किंतु जो देश, जाति, और धर्म के लिए जाता है, उसका ही जीवन सफल है। आपने तो मारवाड़ी समाज की लाज रखी है।

श्री रानी अमृतकुंवरजी को मेरा प्रणाम निवेदन कीजियेगा। मैं Sermon on the mount (पर्वत पर के उपदेश) का एक सुंदर संस्करण संस्कृत पद्यों में हिन्दी तथा अंग्रेजी में छपाना चाहता हूं। भूमिका के लिए गत साल पूज्य मीराबहन को लिखा था। अब वह या रानी अमृतकुंवरजी दो शब्द लिख दें, तो अच्छी बात है।

मेरे योग्य सेवा लिखियेगा। क्या मुझे बापूजी अपने पास सेवाग्राम में रहने देंगे ? मैं उनके पास एक झोंपड़ी बनाकर उसमें रहना चाहता हूं। बाद में महीने दो महीने तक, हमेशा भी रह सकता हूं। क्या आप बंदोबस्त कर सकते हैं ? मैं रहूंगा तो मेरे काम आयगी, नहीं तो दूसरों के काम आयगी। महात्माजी की विजय तो रुजवेल्ट और चर्चिल के भाषण से हो गई। कार्य में कब आती है, देखना है।

आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा। समाचार जरूर दीजियेगा।

आपका आज्ञाकारी,

नारायणदास बाजोरिया

श्री गजानन बिड़ला की ओर से—

: १२१ :

वम्वई,
२७-६-३४

पूज्य श्री जमनालालजी,

प्रणाम !

मैं आपकी कृपा से प्रसन्न हूं। गोपी आपके साथ नहीं गई, लेकिन कुछ देर रेल में भी वातें हुई होंगी। मेरे लायक हो तो लिखने की कृपा करेंगे। उसकी मानसिक स्थिति सुधरी है क्या ? गोपी शायद उसके पिताजी की तवीयत ठीक न रहने से न जा सकी होगी अथवा दूसरा कोई कारण हो ? मुझे तो उसने कुछ भी नहीं लिखा। वापू के पत्र की कापी आपको भेज रहा हूं। अभी तक जबलपुर से इसका जवाव नहीं आया है। आना जरूरी है। प्रतीक्षा में बैठे हैं। आपसे उनकी स्टेशन पर भेंट हो सकी थी क्या ?

वापू से पिताजी की बातें हो गई हैं। नतीजा अच्छा ही निकला दीखता है। यद्यपि पिताजी ने मुझे खास कुछ नहीं वताया है कि क्या वातें हुईं, तो भी उनको शांति मिली है, ऐसा महसूस करता हूं। वापू ने तो सारांश में बता दिया था।

बापू के इस पत्र से सबको संतोष होना चाहिए; मुझे तो है। आपकी क्या राय रही, लिखने की कृपा करें। मेरे लायक और कुछ काम ?

आपका,
गजानन

: १२२ :

बम्बई,
९-७-३४

पूज्य श्री जमनालालजी को गजानन का प्रणाम !

पत्र आपका मिला । ऐसी तकलीफ बराबर करते रहें। मुझे बहुत

लाभ होगा। पूज्य जमनादासजी का पत्र बापू के पास चला गया है। उसकी कापी मेरे पास भी आ गई है। कोई खास बात न होने से आपको नहीं भेज रहा हूं। बस इतना ही लिखा है कि "जो आप लोग कहेंगे हम करने को तैयार हैं"। यही सारांश था। लेकिन उनके पत्र से इतनी बात झलकती है कि उनको १६ आना संतोष नहीं हुआ है। वह जो पहले लिखा था कि मेरा और गोपी का संबंध भविष्य में वे कैसा चाहते थे, उसका फिर होना था, लेकिन उसका उपाय तो दीखता नहीं है। खैर, जो कुछ हुआ सब अच्छा हुआ है। मुझे और गोपी को तो संतोष है, यह बड़ी बात है।

मैं कल बड़ौदा जा रहा हूं। आनंदप्रियजी की बहन को देखने का ही खास मतलब है। २-३ रोज ठहरकर आऊंगा। उनके पास काकाजी ने यहां से एक आदमी भेजा था। वह तो अब की स्थिति देखकर कोई इंकार नहीं करते हैं। उन्होंने तो लड़की पर छोड़ दिया है। अब देखें, मेरे जाने से हम दोनों की क्या राय और इच्छा होती है। वहां से लौटकर आपको लिखूंगा। आपका स्वास्थ्य ठीक होगा।

गजानन का प्रणाम

श्रीमती गोपीबाई बिड़ला की ओर से—

: १२३ :

जबलपुर,
१९-६-३४

पूज्य श्री ताऊजी,

सादर प्रणाम !

मैं आपको इतने दिनों तक पत्र न दे सकी। कृपाकर क्षमा करें।

पूज्य श्री पिताजी का स्वास्थ्य पहले तो बहुत बिगड़ गया था। हार्ट के दौरेवालों का तो यही हाल होता है। घंटे-भर में ही ऐसी हालत हो जाती

है कि कुछ मालूम ही नहीं होता कि क्या होनेवाला है। किंतु अब ईश्वर की दया से कुछ ठीक हैं। आशा है कि जल्द ही ठीक हो जायंगे। आपका स्वास्थ्य ठीक होगा। आप पटना कबतक जायंगे। वहां कितने दिन ठहरने का विचार है? कमलाबाई, पूज्य ताईजी वगैरा अल्मोड़ा से वापस आ गई होंगी। कृपा पत्र कृपाकर शीघ्र लिखें। यहां पूज्य पिताजी से जो बातें हुईं, वे तो आपको व पूज्य बापू को जो पत्र पिताजी ने दिया था उससे विदित हो ही गई होंगी।

शेष सब प्रसन्न हैं।

आपकी आज्ञाकारिणी,
गोपी

: १२४ :

वर्धा,
१९-८-३४

परम पूज्य श्री ताऊजी,

चरणों में सादर प्रणाम! कृपा पत्र आपके दो मिले, पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। सबसे ज्यादा आनंद इस बात का हुआ कि आपके कान का आपरेशन सफलतापूर्वक हो गया। आपको अभी बोलने में तकलीफ भी काफी होती होगी। मेरी तो इच्छा बहुत थी कि आपरेशन के समय मैं आपकी सेवा में हाजिर रहूं। मैंने पूज्य ताईजी को पूज्य बापू से पूछने को कहा भी था, किन्तु पूज्य ताईजी की इच्छा कम होने से लाचारी थी। आशा है, अब पट्टी तो खुल गई होगी। दर्द कम हुआ होगा। पास में रहने और दूर रहने में इतना ही अन्तर हो जाता है। पास रहने से यद्यपि कोई कुछ कर नहीं सकता, किंतु मन में शान्ति रहती है, दूर रहने पर अशांति। आप अभी अस्पताल में ही रहेंगे? मैं अभी तो पूज्य बापू की जाने की इजाजत न मिलने तक तो यहीं हूं। फिर एक बार पूज्य पिताजी ने बुलाया है, सो उनके पास ४-६ दिन के लिए जाकर, उसके बाद बंबई आने का विचार है। मैंने पूज्य काकाजी को बंबई की संस्था के विषय में जो लिखा था,

उस सम्बन्ध में आपकी क्या राय है? क्या आप उस विचार को पसंद करेंगे? मेरा तो ख्याल है कि वैसा होने से मेरे जीवन का एक ध्येय बन सकेगा और उसीकी सहायता से कुछ आगे भी बढ़ सकूंगी। फिर कुछ दिनों बाद जैसी आप सबोंकी आज्ञा होगी और विचार होंगे उसीके अनुसार किया जायगा। यह तो मेरे अपने विचार हैं, किन्तु आपके विचार तो बम्बई आऊंगी और आपसे मिलूंगी तभी ठीक से जानने में सुविधा होगी। पूज्य माताजी वगैरों की जो थोड़ी-बहुत सेवा का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, वह यदि मैं कर सकती तो मुझे अत्यन्त ही आनंद होता। किंतु मेरे वैसे भाग्य ही कहां? आपकी दया से मैं यहां प्रसन्न हूं। मेरी ओर से आप किसी भी प्रकार की चिंता न करेंगे।

हां, ताऊजी यहां पर आपकी गैर-हाजिरी में सीरा-पूरी का भोजन तो बहुत बनने लगा है। आप थे तब तो सादा ही बनता था। ग्रामोफोन भी सीतारामजी बजाया करते है, पान भी खाते हैं। कई नियमों का तो एक प्रकार से उल्लंघन ही होता है। शायद आप होते तो किसीका ऐसा करने का साहस न होता, किंतु यह सब करते तो सीतारामजी ही हैं।

कमलाबाई की पढ़ाई खूब जोरों से चल रही है। अपनी तबीयत की विशेष संभाल रखेंगे। कृपापत्र दिलाते रहने की कृपा करें। शेष शुभ!

आपकी आज्ञाकारिणी पुत्री,
गोपी

श्री जुगलकिशोर बिड़ला की ओर से—

: १२५ :

पिलानी,
वैसाख सुदी १५, '८४

श्रीयुत भाई श्री जमनालालजी,

जयगोपाल! कृपापत्र आपका आया। आपने अछूतों के कुंओं के रुपयों के लिए लिखा, सो आपके सम्मुख ही भाई रामेश्वर को कह दिया था,

किंतु शायद आप भूल गए होंगे। अब आप इसके लिए भाई रामेश्वर के ऊपर हुंडी मेरे हिसाब में कर लें। आपकी हुंडी पहुंचने पर वह सिकार लेंगे। मैंने भी उनको लिख दिया है।

भाई रामेश्वर ने भी अछूतों के कुंओं के लिए जो बीस हजार रुपया दिया था, वह तो पहुंच ही गया होगा? कार्य भी प्रारंभ हो गया होगा?

कृपा विशेष रखें।

भवदीय,
जुगलकिशोर

: १२६ :

सिद्ध श्री वर्धा भाई जमनालालजी को जुगलकिशोर का राम राम घणा मानसे। कृपा बनाये रखियेगा। आपका पत्र आया। मंदिरों के बारे में लिखा सो आप इस बात को अभी प्रकट मत कीजिएगा। मेरा विचार ऐसा है कि हिन्दू महासभा के असवर पर इस बात की घोषणा करके सिफा-रिश के लिए एक कमेटी बना दी जायगी। वह कमेटी जैसी सिफारिश करेगी उसपर आप विचार करके आपकी खात्री होने पर आप उस जगह काम करने के लिए हुकुम करेंगे। बाकी इसके पहले बनारस में पूज्य काकाजी और पूज्य मांजी की भी राय लेनी पड़ेगी, क्योंकि यह काम पूज्य मांजी की आज्ञा से ही होनेवाला है। सो सारी बात करके फिर आपको समाचार दूंगा। पूज्य महात्माजी को मेरे अनेक प्रणाम कह देना।[1]

जुगलकिशोर

: १२७ :

कलकत्ता,
(मिला, ७-१०-४१)

भाई श्री जमनालालजी,

प्रणाम! 'हिंदुस्तानी' के संबंध में प्रकाशित एक लेख की कटिंग भेज रहा हूं। कृपया इसे पढ़ लेवें। मैं समझता हूं, आप लोगों के पास ऐसे

---

१. राजस्थानी से अनूदित।

लेख कठिनता से ही पहुंच पाते होंगे। यदि पहुंच भी जायं तो पढ़ने में उपेक्षा होती होगी।

समाचार-पत्रों में तथा अन्य लोगों से हिन्दुओं की भांति-भांति की शिकायतें सुनी जाती हैं। संभव है, उनमें कुछ असत्य भी हों। परंतु इसमें कोई संदेह नहीं कि अधिकांश शिकायतें सच्ची हैं और उनका कारण हम लोगों का दब्बूपन तथा अनुचित मनोवृत्ति ही है।

कृपा बनाये रखें। आशा है, आप अच्छे होंगे।

भवदीय,
जुगलकिशोर

: १२८ :

कलकत्ता,
पौ. कृ. ११-'९८
(जवाब दिया— २-११-४१)

भाई श्री जमनालालजी,

राम-राम। कृपापत्र मिला। कांगड़ा के लिए ऊनी चरखों के बाबत मैंने इसलिए लिखा था कि इस इलाके में सौ में से नब्बे हिंदू हैं, लेकिन फिर भी उनके हाथ में कारीगरी नहीं होने के कारण वे बहुत गरीब हैं। वहां पालमपुर नामक स्थान में नवाब बहावलपुर की ओर से उनके एजेंट कई प्रकार के प्रलोभनों से हजारों स्त्रियों को हर वर्ष एक प्रकार से फुसलाकर और अपनी रियासत में भेजकर मुसलमान बना लेते हैं। गोस्वामी गणेशदत्तजी तथा कई आर्यसमाजी नेताओं से ऐसा सुना गया था।

इस समय चरखा तथा करघा दोनों ही काम विशेष लाभदायक सिद्ध हो रहे हैं। कांगड़ा के अलावा पंजाब में यह काम कहीं करना हो तो रोहतक— हरियाने के जाटों का इलाका भी अच्छा होगा। परंतु ये सब बातें मैं पूज्य महात्माजी की राय हो तो उन्हींके निर्णय पर छोड़ता हूं। मेरी तो यह सूचना

मात्र है, जो सेवा में उपस्थित करदी गई है। पिलानी के लिए भी मेरा यह आग्रह नहीं है कि सारा काम पिलानी में ही हो। मेरा इतना ही निवेदन है कि हेडआफिस अर्थात् शेखावाटी का हिसाव-किताव-संबंधी वड़ा केंद्र पिलानी में हो। श्री पूज्य महात्माजी की यह राय कि चर्खा-संघ पर छोड़ देना चाहिए, अच्छी है। मेरा तो यह निवेदन है कि इस संवंध में मुझसे फिर से पूछने की कोई आवश्यकता नहीं। जैसी भी पूज्य महात्माजी की आज्ञा हो, किया जाय। चर्खे के उपरांत अन्य कामों के संबंध में भी वही निवेदन है। किंतु मेरी धारणा में यह एक खादी का काम ही इतना वड़ा है कि इसमें यदि करोड़ों रुपया लगा दिया जाय तव भी वह कम पड़ेगा।

आशा है, आपका स्वास्थ्य ठीक होगा। कृपा बनाये रखें।

आपका,
जुगलकिशोर

: १२९ :

कलकत्ता,
४-११-४१

श्री भाई जमनालालजी,

राम-राम। आपका कृपापत्र मिला। आपने लिखा कि ९ ता॰ को पूज्य महात्माजी वारडोली जा रहे हैं। मेरे वहां आने का प्रधान उद्देश्य महात्माजी के दर्शन का था, यह तो आप जानते ही हैं। भाई घनश्यामदास की भी राय है कि नई राजनैतिक परिस्थिति के कारण इस महीने में पूज्य महात्माजी को वहुत कार्य रहेगा। इसलिए अभी उनका समय लेना उचित नहीं होगा। मैं भी कुछ घरेलू तथा ट्रस्ट-संबंधी अन्य सार्वजनिक कार्यों में उलझा हुआ हूं। और फिर पूज्य महात्माजी वहां नहीं रहेंगे, सो इस समय आना ठीक नहीं रहेगा, ऐसा दिखता है। इसलिए आपको तार भी दिया है।

संभव है कि अव तो मैं एक बार दिल्ली तथा पिलानी होकर ही फिर

कहीं पर पूज्य महात्माजी तथा आपके दर्शन कर सकूंगा। इस बीच पत्र द्वारा आपसे कुछ सार्वजनिक कार्य-संबंधी बात कर लेता हूं।

इस समय कपड़े तथा सूत की तंगी से जैसी स्थिति हो रही है तथा भविष्य का भी जो डर है वह तो आप जानते ही हैं। इसलिए इस समय चरखे, का प्रचार कातनेवालों को बहुत लाभदायक होगा; क्योंकि इस समय कताई में मजदूरी भी बहुत मिल सकती है। इसलिए दस हजार रुपये के चरखे जो ऊन अच्छी तरह कात सकें, कांगड़ा तथा कुलू के इलाकों में पूज्य महात्माजी की आज्ञा लेकर चरखा-संघ के द्वारा वितरण करवाना चाहता हूं। वे रुपये मेरी स्वर्गीय पत्नी के हैं।

इसके उपरांत पचास हजार रुपये खादी तथा चरखा-संघ के काम के लिए पूज्य महात्माजी की सेवा में रखने की बात है। उसमें से बीच-पचीस हजार की पूंजी तो हमारे गांव पिलानी में चरखा-खादी का काम बढ़ाने के लिए पिलानी के केंद्र खाते जमा खादी कोष में रखी जाय और बाकी पचीस-तीस हजार पंजाब में कांगड़ा के पहाड़ी इलाके में, जहां के राजपूत, ब्राह्मण तथा हरिजन आलसी और बेकार बैठे रहते हैं, उनकी कताई के लिए खर्च किये जायं। यदि आवश्यकता हो तो रुई कातने व बुनने के लिए भी सहायता पहुंचाई जाय।

यह तो हुई सब पूज्य महात्माजी से निवेदन करने की बात। और अब बीस हजार रुपये आपको भी मेरे पुराने खाते पेटे, जो हरिजनों के मंदिर व पानी की सहायता के संबंध में देने का वायदा किया है, भेजनेवाला हूं।

तो इस समय दस हजार तो चरखा-वितरण के लिए और बीस हजार आपको—यह तीस हजार कल-परसों में भेज रहा हूं। खादी-चरखेवाले पचास हजार पूज्य महात्माजी से बात करने पर और आपका उत्तर आने पर भाई घनश्यामदास को यहां दिला दिया जायगा।

आपके पैर में आराम हो गया होगा ? रुई की फसल आपके उधर कैसी है ? गये साल से कितना कम और कैसी धारणा है। आपको पता हो तो कृपा करके समाचार देवें। जैसी स्थिति है, उससे कपड़े की तंगी का कष्ट

देश में वहुत वढ़ जाने का डर दीख रहा है।

कृपा वनाये रखें। कृपया मेरी ओर से पूज्य महात्माजी को हाथ जोड़कर अनेक प्रणाम कह देवें।

भवदीय,
जुगलकिशोर

श्री जुगलकिशोर बिड़ला के नाम-----

: १३० :

गोपुरी, वर्धा
७-१२-४१

प्रिय श्री भाईजी,

आपका ता. ४ का पत्र कल मिला। आपके तार का जवाव तो मैंने उसी रोज़ दे दिया था। हां, यह वात तो ठीक है कि आजकल पू. वापूजी के पास भीड़ ज्यादा रहती है। आप १५ जनवरी को यहां आने का रखें। उस समय पू. वापूजी यहां रहेंगे तथा गो-सेवा संघ के सदस्यों का जमा होना भी संभव है। भविष्य के कार्य का निश्चय करने की दृष्टि से आपको गो-सेवा संघ का सदस्य तो अवश्य हो जाना चाहिए। मैं फिर से संघ का विधान व फार्म पूज्य वापूजी के भाषण-सहित भेज रहा हूं।

इस समय आपने लिखा कि कपड़े व सूत की तंगी से स्थिति विकट हो रही है, सो तो विचारणीय है ही, साथ में अनाज का भाव भी इतना तेज़ हो रहा है कि गरीव व मध्यम स्थिति के लोगों की हालत शोचनीय होती जा रही है। आपने लिखा कि पंजाब के कांगड़ा व कुलू पहाड़ी इलाके में चर्खा से ऊन भली प्रकार कत सके, उसके लिए पूज्य बापू की आज्ञा से दस हजार रुपये आप लगाना चाहते हैं। पर केवल चर्खे बांटने से तो काम नहीं

होने वाला है। ऊन खरीदना, व बाद में उसका कपड़ा तैयार हो, वह खरीदना वगैरा कार्य तो चर्खा-संघ द्वारा ही ठीक हो सकना संभव है। आजकल चर्खा-संघ का कार्य पूज्य बापूजी की सलाह के मुताबिक पूज्य श्रीकृष्णदासजी जाजू करते हैं। मैंने उनसे बात की है। आपकी, दस हजार की व पचास हजार की दोनों योजनाओं के बारे में वे किस प्रकार अमल में आ सकती हैं, यह तैयार करके एक-दो रोज़ में देवेंगे। उसपर पूज्य बापूजी से बात करके मैं आपको लिखूंगा।

हरिजनों के मंदिर व कुएं के लिए आप बीस हजार मुझे भेजनेवाले हैं, सो ठीक है। आपकी इच्छा है तो मैं यह कार्य अपनी निगरानी में कर दूंगा, अन्यथा आप यह रकम हरिजन सेवक संघ को भी दे सकते हैं। क्योंकि पहले भी आपने जो रुपये भेजे थे, वे बाद में भाई घनश्यामदासजी की सलाह से अन्य उपयोगी कार्य में लगा दिये गए थे।

भविष्य में गो-सेवा संघ के बारे में भी खयाल तो रखना ही होगा। फिलहाल मैं आपपर ज्यादा बोझा नहीं डालना चाहता हूं। केवल सूचना कर रखी है, क्योंकि यह कार्य भी खूब ही महत्व का है। वैसे ही काफ़ी रुपयों की ज़रूरत होगी।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: १३१ :

वर्धा,
१०-१२-४१

भाई जुगलकिशोरजी बिड़ला,

आपने खादी के काम के लिए कांगड़ा की ओर १०,००० रु० के चर्खे वितरण करने को तथा २५-३० हजार रु० वहां ऊनी और सूती खादी का काम करने के लिए और २०-२५ हजार रु० पिलानी में खादी के काम के लिए देने को लिखा है। इस विषय में पंजाब के काम के बारे में डॉ० गोपीचन्दजी का पत्र और पिलानी के काम के बारे में श्री जाजूजी का पत्र इसके

साथ भेजता हूं। गोपीचन्दजी ने भी अपना पत्र श्री जाजूजी की सलाह से लिखा है। वह पंजाब के लिए चर्खा-संघ के प्रतिनिधि हैं और श्री जाजूजी अखिल भारतीय चर्खा-संघ के मंत्री हैं। मैंने इस विषय में पूज्य बापूजी की सलाह ली। उनका कहना था कि काम तो आपकी इच्छा हो वहीं किया जाय, किंतु किस रीति से किया जाय, यह बात चर्खा-संघ पर छोड़नी चाहिए। संघ को इस विषय में अधिक जानकारी है। वह पैसे का अधिक-से-अधिक ठीक उपयोग कर सकेगा। मेरी भी ऐसी राय है।

पिलानी के बारे में श्री जाजूजी ने लिखा है, उस विषय में भी आप सोच लीजिए। यदि वहां पूरी रकम की ज़रूरत न हो तो राजपूताना के उन भागों में, जहां गरीबी ज्यादा है, इसका उपयोग होना ठीक रहेगा। रकम चर्खा-संघ को देकर अपनी इच्छा बतलाने की कृपा करें। काम की तफसील चर्खा-संघ पर छोड़ना ठीक होगा। यथासंभव आपकी इच्छानुसार काम किया जायगा। परंतु वैसा काम बनता न दीखे, तो फिर उसका उपयोग अन्य स्थानों के गरीबों के लिए होना चाहिए। चाहें तो उसमें भी आप ऐसी शर्त्त रख सकते हैं कि अन्य स्थानों में आपकी सम्मति लेकर वह रकम खर्च हो।

आपने तीस हजार रुपये भेजे, सो मिल गए। इसमें से बीस हजार हरिजनों के कुओं, मंदिर इत्यादि काम मेरी मार्फत करने के लिए हैं, सो जमा कर लिये हैं। बाकी दस हजार आपका पक्का निर्णय मालूम होने पर चर्खा-संघ को भेज दिये जायंगे।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

श्री रामेश्वरदास बिड़ला की ओर से—

: १३२ :

बिड़ला हाउस,
२६-११-२५

श्री भाई जमनालालजी से राम-राम !

पत्र आपका मिला। हिसाब भेजा, सो मिला। मुझको पहलेवाली रकम का याद नहीं है कि कितना दिया था, लेकिन नये रुपये १५ हजार तो ठीक होंगे।

कमलाबाई का विवाह बंबई में करने का विचारा, सो ठीक किया। मैं भी जरूर शामिल होऊंगा। माटुंगावाले बंगले के लिए लिखा, सो वह बंगला तैयार ही है। पर पूज्य पिताजी आयंगे तो वह माटुंगा ही ठहरते हैं। उनका विचार फागुन सुदी में आने का है। इसलिए पक्का नहीं लिख सकता। परंतु गिरगांववाला बंगला तो तैयार है। अगर वह आपको पसंद हो, तो मैं महादेव को लिख दूं।

स्नेही,
रामेश्वर

: १३३ :

दिल्ली,
१-२-२८

प्रिय भाई जमनालालजी,

पत्र मिला। महात्माजी के बुखार के विषय में हम लोगों को भी बड़ी चिंता हुई थी। उनका बुखार ईश्वर की कृपा से उतरा, इसका समाचार श्री मालवीयजी महाराज के पास आ गया था, जिससे चित्त को शांति हुई।

श्री रामकृष्णजी मोहता यहां आये थे। उनसे वहां के सब समाचार मिल गये थे। राजा लोग यहांपर आये थे, परंतु वापस कूच कर गये हैं। मैं नहीं समझता था कि खद्दर की बातें सुनने का उनको मौका मिलता। जैसी खद्दर मोटी है वैसा ही उसको सुनने के लिए मोटा टाइम होना चाहिए। यहां रजवाड़ों को अपने ही झंझटों से बहुत कम फुरसत थी। इधर-उधर चक्री बने फिरते थे। मालवीयजी को भी उन लोगों से मिलने का बहुत कम समय मिला। कृपा विशेष रखिये। मैं यहां एक महीने तक ठहरूंगा। भाई घनश्यामदास भी इतने समय तक ठहरेंगे।

भवदीय,
रामेश्वरदास बिड़ला

: १३४ :

पिलानी
२-११-२९

भाई श्री जमनालालजी,

अछूतों के लिए मन्दिर खोलने के लिए आप वहां बैठे हैं, यह खबर मैं अखबारों में पढ़ता रहता हूं। लेकिन मेरा विचार है कि ट्रस्टी लोग जल्दी ही आपकी बात नहीं मानेंगे। परन्तु जिस कार्य को आपने उठा लिया है, उसे पूरा ही करना चाहिए।

श्रीयुत जयकर वगैरा की राय कानून से ठीक हो तो विशेषकर लक्ष्मी-नारायणजी का मन्दिर और अम्बा देवी का मन्दिर भी खुल जाय तो अच्छा है। खर्च की आवश्यकता हो तो मेरे पास से कुछ दिला सकते हैं। पूना के पार्वती मन्दिर के लिए भी पहले उम्मीद हो रही थी, लेकिन कल के अखबार देखने से पता चला कि वे लोग भी झगड़ा करेंगे।

आपकी तबीयत अच्छी होगी। विवाह में तो आपको नहीं बुलवाऊंगा और आप भी आने के लिए खुश नहीं हैं। बालमुकुन्दजी भी शायद यहां नहीं आयंगे।

स्नेही,
रामेश्वरदास

: १३५ :

वम्वई,
२५-३-३५

भाई श्री जमनालालजी,

होली का राम-राम।

४२वीं होली समाप्त की, उसका वधाई-पत्र आपका मिला। साथ में भाईजी का लिखा पत्र भेजा, सो भी मिला। यह पत्र नहीं था, परन्तु आपका उनका एग्रीमेंट था। आपने इसके वारे में मुझसे पूछा कि आपको पसन्द आया होगा, सो भाईजी के साथ का ऐसा एग्रीमेंट होना ही बतलाता है कि परस्पर विश्वास न होने से ही लिखा पढ़ी आपने करवाई है। परन्तु उन्होंने मेरे नाम से वे शर्तें लिखकर दी हैं। शायद उस पत्र की कापी अवश्य कर ली होगी। परन्तु किसी समय यह रुपया भाईजी न दें तो इस एग्रीमेंट के हिसाव से आप अदालत में भाग नहीं सकते हैं। इसलिए इतनी लिखा-पढ़ी कराकर भी हथकचाई रख ली । जव मिलेंगे तव वातें होंगी। मेरे इस कागज की कीमत गांधी-इरविन पैक्ट के समान है।

रुपये १० हजार भाईजी की वावत आपकी दूकान पर भेजने के लिए कह दिया है। मैं करीव १-२ ता० को वनारस जानेवाला हूं। जानकी-वहन से नमस्ते। संतरा भेजे, वहुत मीठे थे। खा पूरे किये। और सव प्रसन्न हैं।

आपका,
रामेश्वरदास

: १३६ :

बम्वई,
६-८-३५

भाई श्री जमनालालजी,

आपका पत्र इन दिनों नहीं आया। जाल नवरोजी की कोठी के सामने अपनी दो दूकानें खुलती हैं, जिनमें से एक अनाजवाले को भाड़े दी गई थी,

जिसके बारे में उन्होंने आपको खाली करवाने के लिए कहा था। मुझे भी पत्र द्वारा एक-दो बार लिख चुके हैं। इस दूकान को खाली करवाने के लिए नोटिस भी दिया जा चुका है। परन्तु जब-जब यह मौका आया वह दूकानदार गले पड़कर मोहलत मांगता गया और वह अबतक खाली न हो सकी। उस दूकानदार ने स्थिति ऐसी कर ली है कि उसको निकालने में उसका पांच-सातसौ का रुकाव हो जाता है। आमतौर से ये लोग उधार ही माल बेचा करते हैं। इसी प्रकार उसका बहुत-सा रुपया गरीबों पर निकलता है। इसलिए अब समझ में नहीं आता कि क्या करना चाहिए। कोर्ट में फरियाद करने से वह निकल तो सकता है, किन्तु कोर्ट में वह तो यही कहेगा कि मुझे जाल नवरोजी निकालते हैं, क्योंकि मैं गरीब हूं और जालसाहब को अपने बंगले के सामने कोई गरीब दूकानदार अच्छा नहीं लगता। शायद कोर्ट उसको दो-चार महीने की मोहलत भी दे सकती है। कृपया आप लिखियेगा इसमें क्या किया जाय, मैं दुविधा में पड़ा हूं।

मैं तारीख ९ को बनारस जा रहा हूं और फिर जल्दी ही बम्बई आना होगा। वर्धा तो कब आना हो, सो देखा जायगा।

पूज्य महात्माजी की तबीयत ठीक होगी?

आपका,
रामेश्वर

: १३७ :

बंबई,
२५-७-३८

भाई श्री जमनालालजी,

सीकर से आपका तार मिल गया था। आपके उद्योग से समझौता हुआ है, सो आपको बधाई है। परंतु अभी तक किन शर्तों पर समझौता हुआ है, अखबारों से कुछ विदित नहीं हुआ। एक प्रकार से सीकरवाले झुक ही गये, ऐसा ही अखबारों से मालूम होता है।

जिन आदमियों को रियासत ने मार दिया, उनके लिए रियासत क्या करेगी? भविष्य में सीकर की प्रजा के साथ उनका क्या व्यवहार रहेगा? महाराज और अफसरों पर इस समझौते का क्या प्रभाव पड़ा? महाराज से आपकी बातें तो काफी हुई थीं और आपने महाराज को नेक सलाह भी दी होगी। महाराज पर कैसा प्रभाव पड़ा, उसका व्यौरा देंगे। सर बीचम आदमी कड़क है। आपको कैसा लगा?

सी. पी. के मंत्रियों ने तो बहुत खराब काम किया। बाकी दो-एक प्रांतों में भी ऐसा काम हो रहा है कि जिससे शायद वह भी फिर से काला धब्बा लगवायें।

आपका,
रामेश्वर,

श्री रामेश्वरदास बिड़ला के नाम —

: १३८ :

वर्धा,
२९-७-३८

प्रिय भाई रामेश्वरदासजी,

आपका २५-७-३८ का पत्र यहां मिला। आपके दोनों तार भी मिल गये थे। मैंने भी आपको दो तार भेजे थे। आशा है, वे मिल गये होंगे। मैं खुद ही आपको सीकर के मामले में पत्र लिखना चाहता था। सीकर में इस समय एक बार तो शान्ति कायम हो गई है और हजारों नहीं तो कम-से-कम सैकड़ों जानें तो नष्ट होने से बच गई हैं। अखबारों में जो खबरें निकलती रहती हैं, वे तो एकांगी हैं। जनता का दृष्टिकोण रखनेवाली खबरें तो अप्रकाशित ही रहीं, क्योंकि इस आशय की तारें जयपुर सरकार की ओर से सेंसर कर ली गईं।

मैं महाराजासाहब से तथा सर बीचम से भी मिला था। सर बीचम का रुख अनुचित-सा ही रहा। जयपुर अधिकारियों से अब भी मेरा पत्र-व्यवहार चालू है और महाराज के नाम के पत्रों व तार की नकलें आपकी जानकारी के लिए भेज रहा हूं। यह जो पत्र-व्यवहार आपको भेजा है, प्रकाशित नहीं होना चाहिए। खानगी तौर पर मित्रों को दिखा सकते हैं।

जमनालाल का वंदेमातरम्

श्री रामेश्वरदास बिड़ला की ओर से--

: १३९ :

बंबई,
१९-६-३९

भाई श्री जमनालालजी से राम-राम !

आपका पत्र इन दिनों नहीं आया। मैं भी नहीं लिख सका। पूज्य बापू ता० २१ को आनेवाले हैं। उम्मीद तो यह थी कि आप भी आयेंगे, परंतु गडघोवां से काम पड़ा है, सो देखें। एक प्रकार से तो आप वहां बैठ हैं, सो अच्छा ही है। स्वास्थ्य सुधर जायगा। देश में बरखा की मौसम अच्छी गिनी भी जाती है। सावन का कहरिया सुनने को मिलेगा। कमल की मां वहां है ही। उनको मेरा नमस्कार कहें। मैं सावन में बनारस जाने का विचार कर रहा हूं। शायद लौटते वक्त आपसे जयपुर में मिलूं। उम्मीद है, उस समय तक आप वहीं रहेंगे। बड़ी किस्मत से ऐसी मेहमान-दारी मिलती है[1]। उसे आसानी से नहीं छोड़ियेगा। भाई के पास बड़े दोस्त[2] का पत्र आया था और टाडसाहब से मिलने को लिखा था। बापू के पास

---

१. जयपुर राज्य की जेल में। २. बाइसराय।

भी पत्र था। पत्र-व्यवहार हो रहा है। रजवाड़ों की यहां कान्फ्रेंस थी, उसमें जो हुआ सो आपने अखबारों में पढ़ा ही होगा।

व्यापार ठीक नहीं चल रहा है। मुकुंद आयरन का काम इधर अच्छा सुनने में आया है। सरदारजी यहां आयें हैं, अलाय-बलाय सब बापू के बदले उनपर ही डालते रहते हैं। आपके बिना उनका मठ सूना रहता है। गजानन के गीगा हुए का समाचार तो आपको मिल ही गया होगा। गोपा की तबीयत अभी ठीक नहीं हुई है। आप राजी-खुशी होंगे। पत्र दें।

रामेश्वर का राम-राम

: १४० :

बम्बई,
८-१२-३९

भाई जमनालालजी,

मैं यहां कल रात को आ गया। आपका एक भी पत्र नहीं आया, सो सरदारजी कहते थे कि अगर जवाबी कार्ड या टिकट भेज दी जाय तो उत्तर जरूर मिल जायगा, परन्तु मैं भी एक आना आपके लिए खर्चना ठीक नहीं समझता।

कमल की मां को नमस्ते कहिये। आप बाम्बे आयेंगे तो गेस्ट-हाउस में ठहरेंगे ही।

रामेश्वर का राम-राम

: १४१ :

नई दिल्ली,
६-११-४१

प्रिय भाई जमनालालजी,

आपका पत्र मिला। आपकी वर्षगांठ पर मेरी शुभ कामनाएं तो हैं ही। भगवान आपको लम्बी उम्र दे, यह प्रार्थना है। मैं यहां से २-३ दिन में बनारस जाऊंगा और वहां से १५-१७ तारीख के आस-पास बम्बई जाऊंगा।

गो-सेवा-संघ के काम में मेरा सहयोग रहेगा ही। आप जानते ही हैं कि दही खाकर मैं नियमित गोसेवा करता ही हूं। सदस्य तो उन्हें बनाइये जो अब दूध-दही नहीं खाते हों। दूसरे मेरे लिए वैद्यों की राय भैंस के दही की ओर हो तो फिर सही कर देने से तकलीफ रहेगी। मैं हृदय से आपके इस कार्य के साथ हूं। सिर्फ सही करवाकर क्या कीजियेगा? खजांची के लिए भी सिर्फ शोभा का नाम लेकर क्या करेंगे?

मेरा स्वास्थ्य पहले से ठीक है। आशा है, आप प्रसन्नतापूर्वक होंगे।

पावर अलकोहलवाले काम के बारे में मैंने अब और देखभाल की तो मालम दिया कि यह काम नफे का अभी तो बिल्कुल नहीं है। नया काम है। आगे जाकर साधारण फायदा सम्भवतः हो जाय। इसलिए इस काम में यही समझकर पड़ना है कि नफा नहीं होगा। श्रीगोपाल ने रामेश्वर को सब समाचार लिखे हैं। वह आपको बतावेगा ही।

आपका,
रामेश्वरदास

: १४२ :

दिल्ली,
१३-११-४१

भाई श्री जमनालालजी,

राम-राम। आपका पत्र मिला। गो-सेवा-संघ के सदस्य बनने के जो नियम आपने दिये हैं, उन नियमों पर सदस्य बनना मुझे कठिन मालूम होता है। आप शायद इसे नहीं मानेंगे। इसके अतिरिक्त उन नियमों द्वारा गो-रक्षा हो सकती है, इसमें मुझे संदेह है। गो-सेवा-संघ का पहला कार्य डेरी चलाने का है। जब इतनी तादाद में दूध हो जाय कि वह बिक ही न सके तब यह नियम होना चाहिए कि गाय का घी-दूध ही खाया जाय। आज गाय-भैंस का तो क्या ऊंटनी का दूध भी मिलना मुश्किल हो रहा है। गाय अगर पालकर तैयार भी की जाय तो अभी बहुत वर्ष लगेंगे और आज दूध की बहुत आवश्यकता है। ऊंटनी तक का दूध लोग पीते हैं।

इसीलिए प्रथम कार्य तो गो-सेवा-संघ का यह होना चाहिए कि हर जगह डेरी खोले, ताकि लोगों को आसानी से घी-दूध मिल सके। यहांपर अंग्रेजों की डेरियां हैं। वहां से लोग शुद्ध समझकर घी-दूध महंगे भाव में लेते हैं। रुपये का छः छटांक घी देते हैं, फिर भी पूरी मांग रहती है। केवल नियम बनाने से ही गो-रक्षा हो सकती है, यह मेरी समझ में नहीं आता। पिलानी में १) सेर से लेकर १।।।) तक का घी बिकता है, परन्तु अपनी डेरी से ७-८ छटांक तक का घी लोग ले जाते हैं। कलकत्ते में इसीलिए माधव ने एक डेरी खोली है। २०० गायें रखने का इरादा है। मंहगा बेचने पर भी यहां मांग बढ़ती जा रही है। इसलिए मेरे ख्याल से जहां-जहां भी अपने कारखाने हैं, डेरी खुल जानी चाहिए।

जब शुगर मिल बनाई थी तब हमने नियम कहां बनाये थे? सस्ती व सफेद होने की वजह से लोग खुद-ब-खुद चीनी खरीदने लगे थे। आप व्यापारी नहीं रहे, नहीं तो आप संघ के ऐसे नियम नहीं बनाते।

आप वर्धा में रहकर गो-सेवा-संघ का कार्य करना चाहते हैं, परंतु यह असम्भव है। देश में कई गोशालाएं हैं और उनपर लाखों तो क्या करोड़ों से भी ज्यादा खर्च लगता होगा। उन्हें भी ठीक राह सुझाने की जरूरत है। हालांकि वे लोग जल्दी समझनेवाले नहीं हैं, परंतु उनमें से दो-चार को भी अच्छी तरह समझाया जाय तो आपके काम में बहुत मदद मिल सकती है। और बाकी बातें आपसे मिलना होगा तब होंगी।

आपको कंपनी में से निकालकर मैंने अच्छा ही किया। इसका फायदा आपको काफी मिल रहा है, यह बताने की जरूरत नहीं है। इन रुपयों का आप इस काम में उपयोग करें तो मेरा प्रायश्चित्त हो जायगा, ऐसा मैं मानता हूं।

आशा है, आप प्रसन्न होंगे।

आपका,
रामेश्वरदास

श्री रामेश्वरदास बिड़ला के नाम—

: १४३ :

वर्धा,
१५-११-४१

प्रिय भाई रामेश्वरदासजी,

आपका ता० १३-११-४१ का पत्र मिला। नियम पालन में आपको कुछ मुश्किल मालूम होगी, लेकिन वह मुश्किल दूर होने जैसी है। आपके लिए नियम का चलाना असम्भव बात हो, ऐसा नहीं। निश्चय करने पर वह बात आपको आसान हो जायगी। नियम लेने से गो-रक्षा होने में आपने संदेह प्रकट किया, तो यह भी पुरानी-सी बात है। खादी तथा हरिजन-कार्य में भी ऐसी मुश्किल व संदेह प्रकट किया जाता था, लेकिन विना ऐसा किये कार्य चलने जैसा नहीं है। यदि भाई घनश्यामदास दूसरों को कहें कि आप हरिजनों को छूयें, लेकिन स्वयं उसका आचरण आग्रहपूर्वक न करें तो उनके कहने में जोर नहीं रहेगा। उसी तरह गो-सेवक भी यदि गाय के दूध-घी का इस्तेमाल आग्रहपूर्वक न करता हो तो दूसरे के ऊपर उसका क्या प्रभाव पड़ सकता है?

यद्यपि पूज्य बापूजी की इसमें सैद्धांतिक दृष्टि है और वे तो इन बातों पर बहुत जोर देते हैं, लेकिन मैं तो व्यावहारिक दृष्टि से ही इस बात को आवश्यक मानता हूं। गायों के दूध-घी का प्रयोग पूर्ण मात्रा में नहीं होता। दूध-घी को बाजार में योग्य भाव नहीं मिलता, इसलिए गाय का पालना आज लाभ की चीज न रहकर बोझ रूप हो गई है और गायें दो-दो, चार-चार रुपये में विक रही हैं। और आज कटने के सिवाय दूसरा उनको कोई चारा नहीं। जो लोग गाय पालते हैं, वे उन्हें चारा नहीं दे सकते। आधी भूखी रहकर निकम्मी बनी हुई गाय कसाइयों के घर में कट जाती हैं।

आपने जो शुद्ध किंतु महंगी चीज के लिए उदाहरण दिये हैं, वे बड़े लोगों के तथा बड़े शहरों के हैं। आपका जिन लोगों से संबंध होता है,

वे स्वाभाविक ही बड़े लोग होते हैं । उनपर से तो देश की स्थिति विदित करना कठिन है। आपको आश्चर्य होगा कि जो लोग पींजरापोल या गोशाला चलाने में मदद देते हैं, दान देते हैं, वे भी गोशाला का दूध सस्ते में ही लेने का प्रयत्न करते हैं। यह कभी भी ख्याल नहीं करते कि इस दूध की लागत से हम कम भाव में क्यों खरीदें।

हम लोगों ने सस्ताई के फेर में पड़कर कई उद्योगों का और पर्याय से अपना नाश कर लिया है। गाय पालने के उद्योग का नाश भी इसी प्रकार हुआ है तथा अभी हो रहा है। हम दूध-घी खरीदते समय लागत के हिसाब से दाम देकर नहीं खरीदते, किंतु बाजार-भाव से कम-से-कम दाम देकर खरीदते हैं। गरीब पशु पालनेवालों में इतनी ताकत कहां कि बाजार-भाव का नियंत्रण रखें। अतः या तो पशुपालन लाभदायक नहीं हो सकता, इसलिए उस काम को छोड़ दें या मिलावट करके सस्ते भावों में ही दूध बेचें।

केवल कुछ शहरों का यह प्रश्न नहीं है, सारे भारतवर्ष का है और खासकर गांवों में ही गायों का पालना शहरों से आसान है। किसान के लिए पशुपालन एक सहयोगी उद्योग है। उसे खेती के लिए ठीक खाद आदि मिल जाता है और चारे की उसे सहूलियत रहती है। उसे यदि हम दूध-घी के लिए बाजार दिला दें, तो लाखों मन दूध-घी पैदा हो सकता है। आप गो-सेवा संघ के द्वारा कुछ डेरियां शुरू करने की बात कहते हैं, लेकिन जो हजारों डेरियां देहातों में चल रही हैं, उन्हें व्यवस्थित करने का काम ही बहुत बड़ा है।

यदि हम डेरियां व्यवस्थित करने का कार्य भी हाथ में लें तो २-४ से अधिक डेरी चलाना भी आज तो बहुत बड़ा कार्य हो जायगा; किन्तु यदि हम उन लोगों को, जो गाय तथा अन्य पशु पालते हैं, अच्छी तरह गाय रखने, नस्ल सुधारने तथा उनकी बनी चीजों को योग्य भाव से बाजार दिलवा दें तो ज्यादा आसानी से बहुत बड़ा कार्य हो सकता है। फिर भी जरूरत के हिसाब से शहरों में तो डेरियां चलानी ही होंगी। चाहे वे संघ के नियंत्रण में हों अथवा स्वतन्त्र रूप से चलाई जायं। वह काम भी करना पड़ेगा।

इस कार्य को तुरंत हाथ में ले लेने में धोखा है । आज इस कार्य के लिए शास्त्रीय दृष्टि रखनेवाले व्यावहारिक आदमी नहीं हैं। विना कार्यकर्त्ताओं को तैयार किये उत्साह में आकर डेरियां खोलने में धोखा है। काम अव्य-वस्थित होकर नुकसान गया तो लोगों का उत्साह मंद पड़ जायगा। इसलिए मैंने आपके सामने सबसे पहले कार्यक्रम रखा है। अच्छे आदमियों का संग्रह करना और कार्यकर्त्ता तैयार करना। यहां सबसे पहले प्रयोगशाला व गो-सेवक विद्यालय खोलने का मेरा प्रयत्न होगा। इसमें भी अच्छे कार्य-कर्त्ता न मिलने से अड़चन आ रही है। मैं वर्धा रहकर यहां सारी व्यवस्था जमा रहा हूं। बिना पूरी तैयारी किये काम करने के परिणाम अच्छे नहीं होते। इसीलिए सावधानी से काम बढ़ाने का मेरा विचार है।

सम्भव है, आपकी व्यापारी बुद्धि को मेरी धीमी प्रगति अखरे, लेकिन क्या करूं ? आप जैसी तेज चाल से चलनेवाले साथी मिलने में भी दिक्कतें आ रही हैं।

शुगर मिल का उदाहरण यहां इसलिए लागू नहीं हो सकता कि वह तो मशीनरी की बात है। यदि आप उसके मुकाबले में वेजीटेबल घी का उदाहरण लें और उसका प्रचार हो ऐसी बात रखें तो चल सकता है। अपनी चीज तो बाजार में पुसाती थी, सस्ती पड़ती थी, इस कारण लोग उसे लागत से ज्यादा भाव देकर खरीदते थे। गाय का दूध व घी बाजार में लागत-भाव से नहीं बिक रहा है, इसीलिए नियम लेनेवाले बढ़ाने हैं। नियम लेनेवाले लोग महंगी चीज भी खरीदेंगे। और जब पहले-पहल महंगी खादी भी लोगों ने खरीदी तभी आज खादी की प्रगति हो सकी है। इसी तरह नियम लेनेवाले गो-सेवक गाय का घी-दूध भी महंगा खरीदेंगे तो अपने-आप ही उत्पत्ति बढ़ेगी। आवश्यकता को बढ़ाने से चीजों की पैदाइश बढ़ती ही है, यह व्यापारिक नियम है। आप भी तो उन्हीं व्यापारियों के अगुवा हैं।

रही भैंस, बकरी तथा ऊंटनी के दूध की बात। वह लोगों को मिले, इसीलिए तो कहता हूं कि आप धनवान लोग यह महंगा गाय का दूध-घी

खरीद लें और बेचारे गरीबों को वह सस्ता दूध पीने दें। लेकिन आप धन-वानों को संतोष कहां? आप तो सब-का-सब लेकर उन्हें वंचित रखना चाहते हैं। इसीलिए तो मैं कहता हूं कि आप गरीबों के लिए गाय के दूध-घी का व्रत लेकर गरीबों के लिए भैंस, बकरी, ऊंटनी को छोड़ दें। आशा तो है आप इस पर अवश्य विचार करेंगे।

मुझे केवल वर्धा में रहकर ही गो-सेवा नहीं करनी है, सब जगह घूमना भी है। लेकिन पहले मैं यहां बैठकर कुछ तैयारी कर लूं। एक-आध आदर्श डेरी चला लूं। अनुभव लेकर दूसरों से कहूं। विना अनुभव के ज्ञान देने-वालों की इस अभागे भारत में पहले ही कमी नहीं। मैं और क्यों उनमें वृद्धि करूं। बाहर की गोशालाओं को समझाना तो है, लेकिन जल्दी करके कार्य विगाड़ना नहीं है। इसीलिए यहां रहकर तैयारी कर रहा हूं।

मुझे आशा है कि अब आपके संशय की निवृत्ति हो जायगी और नियम के महत्व को समझकर नियम लेंगे और मेरी तरह नियम पर जोर देने लग जायंगे।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

: १४४ :

बनारस,
२३-११-४१

भाई श्री जमनालालजी,

नमस्कार।

आपका पत्र मिला। संघ के नियम पालने में तो मुझे कठिनाई ही दिखती है। किसीके यहां भोजन करने जाऊं तो उनसे यह कहना कि मुझे गाय का ही दूध चाहिए या साग में गाय के घी की ही छोंक हो, ठीक नहीं लगता। उन्हें भी बुरा लगेगा। और मेरा वहां आना-जाना भी छूट-

सा जायगा। परन्तु आपकी दृष्टि से आपने लिखा, वह ठीक है। मैं काम भी न करूं व आपके नियमों में दोष निकालूं, यह अच्छा भी नहीं है।

आशा है, आपका स्वास्थ्य ठीक होगा।

आपका,
रामेश्वर

: १४५ :

वम्वई,
२९-१२-४१

भाई श्री जमनालालजी,

राम-राम! इन दिनों आपका कोई पत्र नहीं आया। आपकी तवीयत का क्या हाल है?

मैंने सुना है, आपने रेल व मोटर में बैठना छह महीने के लिए छोड़ रखा है। यदि यह वात ठीक है तो आपसे मिलना दुर्लभ है। पूज्य वापूजी से मिलने वारडोली जा रहा हूं।

सेवाग्राम में क्या जमीन नहीं मिल सकेगी? सरदारजी तो कहते थे कि जमीन देख ली है। एक मकान वहां जल्दी वन जाता तो अच्छा रहता।

मेरा विचार अभी यहीं ठहरने का है। चि० कमलनयन अभी यहां नहीं पहुंचा है।

आपका,
रामेश्वर

श्री लक्ष्मीनिवास बिड़ला की ओर से—

: १४६ :

पूना,
२७-१-३३

पूज्य ताऊजी,

अबतक तो मैं घरवालों के साथ ही कार्य करता था। अब साथ में काम करते रहने के अतिरिक्त मेरा विचार एक स्वतन्त्र काम करने का भी है। मैंने विचार करके एक जीवन बीमा कंपनी खोलने का विचार किया है। अभी तो इसकी पूंजी दो लाख करने का विचार है, फिर यदि ज्यादा हुई तो देखा जायगा। यह मेरा पहला स्वतन्त्र काम है। इसलिए आपसे केवल मौखिक ही नहीं, किन्तु सक्रिय सहायता की पूरी आशा है। वह सक्रिय सहायता चाहता हूं इस बीमा कंपनी का आपको 'बोर्ड आफ डायरेक्टर्स' का सभापति बनाकर। इसमें आपको जो डायरेक्टरों के हिस्से के शेयर होंगे, वे लेने होंगे। अभी यह निश्चित नहीं है, किन्तु वह शायद ५००० हों। आपसे इन्कारी की तो मुझे आशा नहीं है, अतः आपका नाम मैंने पक्का ही लिख लिया है।

विनीत,
लक्ष्मीनिवास बिड़ला

: १४७ :

दिल्ली,
२३-१२-३५

पूज्य ताऊजी,

कृपापत्र आपका मिला। लोहे के काम के बारे में मैंने पहले भी पता लगाया था, लेकिन यहां काफी मिकदार में स्क्रैप आयरन नहीं मिलता। इसकी उपयुक्त जगह कलकत्ता, बंबई या लाहौर हो सकती है।

आग बीमा के काम में फायदा है, ऐसा खुद कंपनियोंवाले ही कहते हैं, इसलिए मैंने आग बीमा की कंपनी खोलने का विचार किया है। बीस

लाख रुपये की कैपिटल, हाफ पेड-अप रहेगी । कुछ लोगों से शेयर बेचने की बात-चीत भी की है। आपने जीवन बीमा कंपनी के दो लाख के शेयर बिकवाने का वादा किया था, लेकिन उस वक्त मैं आपके उस वादे का लाभ न उठा सका, कारण मुझे पूंजी की जरूरत नहीं थी। क्या आपका वह वादा अब काम में ला सकता हूं ?

सुशीला के अपेंडिक्स का दर्द रहता है। कलकत्ते में आपरेशन कराने का विचार है। शायद १५ दिन बाद यहां से उसे ले जाऊंगा।

विनीत,
लक्ष्मीनिवास

: १४८ :

कलकत्ता,
३-३-३७

पूज्य ताऊजी,

आपको तो मालूम ही है कि मैं व्यापार को छोड़कर दूसरे कामों से बहुत दूर रहता हूं, लेकिन अखबारों द्वारा कहां क्या हो रहा है, इसका पता तो लग ही जाता है । आजकल हिंदी अखबारों में साहित्य सम्मेलन के सभापतित्व के बारे में खूब धींगामस्ती चल रही है। चूंकि आपका नाम भी इस पद के लिए लिया गया है, आपपर भी काफी बौछारें पड़ रही हैं। कई लोग तो बहुत कटुता से विरोध कर रहे हैं। इस विषय में यदि सलाह दूं तो वह धृष्टता होगी, लेकिन नम्र भाव से जो मुझे लगता है, वह लिखना उचित होगा। जब इस विषय पर इतनी कटुता उत्पन्न हो गई है, तो उससे अलग रहना ही उचित होगा। मेरी समझ से तो यदि आपको सर्वसम्मति से सभापति चुना जाय तो ही शोभाप्रद है, अन्यथा अच्छा नहीं लगता। हिंदी की सेवा तो आप बाहर रहकर भी कर सकते हैं। पता नहीं आप इसको किस दृष्टि से देखेंगे । लेकिन मैंने अगर धृष्टता की है, तो मुझे क्षमा करें।

विनीत,
लक्ष्मीनिवास

श्री मथुरादास त्रिकमजी की ओर से—

: १४९ :

देवलाली,
९-३-२६

स्नेही भाई श्री,

आपका ता० ७ का पत्र मिला। मनीआर्डर लौटाया, सो मिला। बधाई रखने, न रखने के बारे में बापूजी की कोर्ट ने जो निर्णय दिया, उसे सिर माथे स्वीकार कर लेना चाहिए, बाकी लड़ने की मर्जी तो होती है।...

मथुरादास का प्रणाम

श्री मदनलाल के नाम—

: १५० :

वर्धा,
९-१-३७

प्रिय मदनलाल,

मुझे बताया गया है कि कटक के बेनामे का मामला अभी तक तय नहीं हो पाया। मुझे यह जानकर थोड़ा दुःख भी हुआ। बेनामे पर तुम्हारे व सोहनलाल के हस्ताक्षर अभी तक नहीं हो पाये हैं। मेरा विचार है कि इस तरह एक बार निश्चित हुई बात पर अमल करने में देरी नहीं होनी चाहिए।

मैं आशा करता हूं कि इस सम्बन्ध में आप लोग शीघ्र ही उचित कारंवाई करेंगे तथा उसकी सूचना मुझे देंगे।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

---

१. चि. कमला के विवाहोपलक्ष्य में।

श्री मोतीलाल माणकचंद (श्री प्रताप सेठ) के नाम—

: १५१ :

वर्धा,
१४-६-३४

प्रिय भाई प्रतापसेठजी,

आपका ता० १२-६ का पत्र मिला। आपने लिखा कि आपको दो लाख रुपये की जरूरत पड़ना संभव है, कारण कि आप कोई नया काम करना चाहते हैं। आपने पूछा है कि अगर आपको जरूरत पड़ी तो क्या वच्छराज कंपनी यह रकम दे सकेगी और अगर दे सकेगी तो किस ब्याज पर देगी। मैं ता. १६-६ को बंबई जा रहा हूं। वहां श्री केशवदेवजी नेवटिया से बात करूंगा। आप मेहरवानी करके नीचे लिखी हुई बातों का खुलासा बंबई लिख दीजियेगा।

१. अगर आपको जरूरत पड़ी तो आप रकम कब उठावेंगे। और कितने समय के लिए ?

२. वैसे ब्याज का निर्णय तो इस पर हो सकता है कि आप कितने समय के लिए रकम चाहते हैं, फिर भी आप कितना ब्याज उचित समझते हैं ?

३. अगर बताने में कोई आपत्ति न हो तो क्या आप बता सकेंगे कि आप कौन-सा नया काम शुरू करनेवाले हैं, जिसके लिए आपको यह रकम चाहिए।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

श्री मोतीलाल माणकचंद की ओर से—

: १५२ :

अमलनेर,
१७-६-३४

प्रिय भाई श्री जमनालालजी,

जय गोपाल। वि० वि० आपका ता० १४-६ का पत्र वर्धा मुकाम का आया, सो मिला। हाल मालूम हुआ। मैं इन्दौर मालवा मिल की एजेन्सी लेना चाहता हूं। उसके लिए मुझे रोकड़ की जरूरत है। उसके बारे में इंडिया बैंक और सेंट्रल बैंक से बातचीत हो रही है। यदि हमको बैंक से रुपये मिल गये तो आपसे रुपये लेने की जरूरत नहीं रहेगी। हमारे मि० जोशी, जो मैनेजर हैं, आपके पास आयेंगे और हमारा क्या प्रस्ताव है वह बतलायेंगे। यदि इंडिया बैंक से या सेंट्रल बैंक से या उनके डायरेक्टरों अथवा उनके मैनेजरों से आपका परिचय हो और हमारा प्रस्ताव देख-कर यदि आपको उचित लगे और आप ठीक समझें तो उनसे हमारे लिए सिफारिश कर सकते हैं।

यदि बैंक से रुपये नहीं मिले और आपसे दो लाख रुपये लेने पड़े तो वे रुपये मैं करीब महीना या डेढ़ महीने में उठा लूंगा और वह रकम बारह महीने में वापस करूंगा।

व्याज के विषय में मैं कुछ लिख नहीं सकता। आप ही जैसा आपको उचित लगे वैसा निर्णय कर दीजिये।

बाकी सब क्षेम कुशल है। ज्यादा शुभ।

आपका,
मोतीलाल माणकचन्द
(प्रताप सेठ)

श्री मोंतीलाल माणकचंद के नाम—

: १५३ :

वर्धा,
६-४-३८

प्रिय भाई श्री प्रताप सेठ,

मैं कल शाम को कलकत्ते से आया। आपके यहां के स्ट्राइक के बारे में मेरे पास तार वगैरा आये थे। कुछ मित्रों के पत्र भी आये हैं। मैं तो वहां आ नहीं सकता। इस पत्र के साथ दो खास पत्र आपके ध्यान में रहने के लिए भेज रहा हूं। आप पढ़कर वापस भेज दें। अब जो भविष्य आ रहा है, उसका हमको पूरा ख्याल रखना होगा। मेरी आपसे आग्रहपूर्वक प्रार्थना है कि किसी भी जवाबदार (समझदार) व्यक्ति को बीच में डालना हो तो बीच में डालकर फैसला कर लें।

मैं आज बंबई जा रहा हूं। ता० १५ को वर्धा वापस आऊंगा। आशा है, आपका स्वास्थ्य ठीक होगा।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

श्री जमनादास मालपाणी की ओर से—

: १५४ :

जबलपुर,
२३-६-३४

जोग श्री जमनालालजी साहब जोग श्री जबलपुर से जमनादास का जै गोपाल बंचना घणे घणे मानसे।

अपरंच कृपापत्र आपका मिला। चि० गजानन तथा गोपी पहुंचे। आपने इनको भिजवाने में बड़ी दूरतक का खयाल किया, इसके लिए आभारी हैं।

हमने एक पत्र पू० महात्माजी को दिया है, सो आपने देखा होगा। आपकी क्या आज्ञा है? अब क्या करना चाहिए? बहुत आगे-पीछे का सोचकर लिखिये। हम तो जैसी आप लोगों की आज्ञा होवेगी वैसा करने को तैयार हैं।

आपको हम कुछ लिखें, ऐसा नहीं है। आपको तो बिना ही लिखे हमारा ज्यादा ख्याल है, और गोपी का जो संबंध हमारा है, वैसा ही, बल्कि उससे ज्यादा, आपका है।

कृपा बनाये रखें और जब मौका लगेगा मिलने को आवेंगे। उस वक्त आपसे भविष्य का भी विचार करना है। देखे ईश्वर कब मिलायेगा। राजी-खुशी का पत्र दिलाते रहे।

श्री लालजी मेहरोत्रा की ओर से—

: १५५ :

याकोहामा,
१२-५-३७

पूज्य भाईजी,

यह पत्र देर से लिख रहा हूं, क्षमा कीजिएगा। जापान का घूमना करीब-करीब समाप्त हो गया है। प्रायः जितनी जगह देखने की थी सब देख ली। एक महीने कोबे में ठहरा था। वहां व्यापार का काम भी करता रहा और वहीं से आस-पास की जगहों में चक्कर मारकर देखता भी रहा। दो-चार जापानी व्यापारियों से संबंध कर लिया है और एक से तो इतनी पहचान

कर ली है कि जिससे यदि भविष्य में संबंध करना हो तो अड़चन न आये। कुछ जापानी व्यापारियों को एक बार दावत भी दी थी। कोटक की मार्फत लगभग दो हजार गांठें बेची भी हैं। व्यवसाय की दृष्टि से तो मेरा यहां आना असफल नहीं हुआ।

व्यापार के अतिरिक्त अन्य लोगों से भी मिलने की कोशिश की है, चैम्बर आफ कामर्स के अधिकरियों से भी। कोबे के मेयर से और उस प्रांत के गवर्नर से भी मिला। ओसाका के बड़े-से-बड़े अखबार के मुख्य संपादक से भी मिला था। तमाम जापान का ध्यान इस समय हिंदुस्तान पर है। एक तो हिंदुस्तान इनका माल बहुत लेता है, दूसरे अब जापान को डर लग रहा है कि पश्चिमी सफेद देशवाले उसे खा जायंगे। इसीलिए ये लोग अब एशिया के अन्य देशों की सहानुभूति लेना चाहते हैं। एशिया के नेतृत्व की अभिलाषा जापान के मन में है। यहां के हिंदुस्तानी आमतौर पर तो मध्यम श्रेणी के हैं. पर कुछने अच्छी कीर्ति पाई है। रासविहारी बोस और आनंद मोहन सहाय का अच्छा प्रभाव है। आनंद मोहन सहाय पहले १९२३ तक पूज्य राजेन्द्रबाबू के सेक्रेट्री थे। यहांपर १४ वर्ष से हैं। इनकी पत्नी श्रीमती उर्मिला देवी श्री दासबाबू की बहन की लड़की हैं। वह थोड़ा-बहुत व्यापार करते हैं, पर पूरा नहीं पड़ता, क्योंकि अधिक समय तो सार्वजनिक कामों में जाता है। यदि इनकी उदरपूर्ति का कोई इन्तजाम हो सके तो यह पूरी सेवा कर सकेंगे और इससे देश को लाभ हो सकता है। इनका यहां जापानी अधिकारियों पर भी अच्छा प्रभाव है। वहां आकर इस विषय में अधिक बात करूंगा। यहांपर पूज्य बापूजी तथा श्री रवींद्रनाथ ठाकुर का नाम अच्छी तरह से प्रख्यात है, खासकर पूज्य बापूजी का। छोटी-छोटी जगहों में भी पच्चीसों आदमी, जिन्हें टूटी-फूटी अंग्रेजी बोलना आता था, मुझसे पूज्य बापूजी की तन्दुरुस्ती के विषय में पूछते थे। मेरी टोपी देखकर उनको ऐसा अनुमान होता था कि मेरा कुछ संबंध स्वराज्य के आंदोलन के साथ होगा। कल दो-चार अमेरिकन मित्रों ने मुझे और सरोज को खाने के लिए बुलाया था। उनका प्रेम गांधी-समुदाय से बहुत है।

जिस तरह से जापान ने बहुत थोड़े समय में उन्नति की है, उसे देखकर आश्चर्य होता है। सन् १९२३ के भूकम्प में पूरा यकोहामा नष्ट हो गया था। तमाम शहर में मुश्किल से सौ-पचास मकान ही बचे थे। आदमी भी पचास हजार मरे थे। पर वीस दिन के पश्चात् ही शहर के सारे कार्य जारी हो गये थे, और एक वर्ष में तमाम शहर में अस्थायी इमारतें बनकर तैयार हो गई थीं। इस वर्ष तो प्रतीत ही नहीं होता कि यह शहर कभी बरबाद हुआ था। सात लाख की बस्तीवाला शहर पहले से ड्योढ़ा सुंदर बनकर पांच-सात वर्ष में ही तैयार हो गया। यहां के आदमियों का कला-कौशल, पुरुषार्थ व मेहनत अद्भुत है। एक मिनट भी खाली नहीं बैठते। मालिक को कहने की आवश्यकता ही नहीं। नौकर अपने-आप ही जान लगाकर अपना कार्य करता रहेगा। तमाम देश छोटे-बड़े कारखानों से भरा पड़ा है। कीरियों एक छोटी जगह, साठ हजार की वस्ती है। इसमें छोटे-बड़े मिलाकर लगभग तीन हजार कारखाने हैं। यह सब होते हुए भी साधारण जापानी, खासतौर पर किसान प्रसन्न नहीं। फौज में नौजवान किसान-वर्ग से अधिक आते हैं। उन्हें यह लगा कि वर्तमान पदाधिकारी किसानों के हित की बात नहीं करते। बड़े-बड़े पूंजीवादियों को ही ध्यान में रखकर राज्य चलाते हैं। इसी मुख्य बात पर पिछली २७ फरवरी को विद्रोह हुआ था, जिसमें कई मंत्री मारे गये थे।

आशा है, आपका स्वास्थ्य ठीक होगा। चि॰ कमलनयन का पत्र आया था। जवाब दे दिया है। मैं यहां से परसों १४ मई को सानफ्रांसिसको जाऊंगा। जून के तीसरे सप्ताह के आखिर तक न्यूयार्क पहुंचूंगा। जुलाई में लिवरपुल व लंदन जाऊंगा।

कल रात को एक अमेरिकन गृहस्थ के मकान पर मुझे खाने के लिए बुलाया गया था। वहांपर मिसेज़ कोरा मिली थीं। वह आपके यहां मिस म्यूरियल लिस्टर के साथ गई थीं। आपने उनको जो चरखा दिया था, उसे भी साथ में लाई थीं और चरखे को सरोज से चलवाकर देखा । आपकी, जानकी भाभी, महादेवभाई वगैरा की बात करती थीं। उनकी बड़ी इच्छा

है कि वापूजी एक वार जापान आयें। वे लोग उनका सव खर्चा उठाने को तयार हैं।

आपका,
लालजी

श्री दामोदरदास मूंदड़ा की ओर से—

: १५६ :

नागपुर,
२८-११-३८

पूज्यवर,

हैदरावाद के काम के लिए आपने मुझे छुट्टी दी, यह एक ही बात इसका वहुत बड़ा सबूत है कि आपका हैदरावाद के लिए कितना प्रेम है और शुरू से अवतक आप जो कुछ हैदरावाद के लिए करते रहे हैं, उसके लिए तो हम सदैव आपके ऋणी रहेंगे। जो जिम्मेदारी मुझपर स्टेट कांग्रेस ने डाली है, वह आपके आशीर्वाद का परिणाम है और इसके बल पर ही मैं इसका वोझ उठाने की हिम्मत कर सकता हूं। जिस विश्वास के योग्य आपने व उन्होंने मुझे समझा है, उसके योग्य मैं साबित हो सकूं यही मेरी परमेश्वर से प्रार्थना है। आपका हाथ सदैव मेरे सर पर होने के कारण मुझे किसी बात का डर नहीं है।

हैदरावाद का काम समाप्त कब होगा, इसका मुझे पता नहीं है। पर मेरी स्थिति यह है कि ज्योंही वह काम खत्म हो, मैं अपनी यह नैतिक जिम्मेवारी समझता हूं कि मैं फिर आपकी सेवा में आ जाऊं।

विनीत,
दामोदरदास मूंदड़ा

श्री शांतिकुमार नरोत्तम मोरारजी की ओर से—

: १५७ :

१४-११-३२

प्रिय जमनालालजी,

यह जानकर दुःख हुआ कि आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं है और कान की तकलीफ फिर शुरू हो गई है। आशा है, अब कुछ सुधार होगा।

आपको लोगों ने बतलाया होगा कि आपको जो रकम मुझे लौटानी थी वह कुछ समय पहले मय व्याज के मैंने पूरी चुकता कर दी है। तीन साल हुए अपनी जो बातचीत हुई थी, उसके अनुसार पिछले दिनों मैंने यह किया है।

सिंधिया स्टीम नेवीगेशन के एजेंट का कमीशन मेरी पत्नी के नाम देने का दस्तावेज मेरे पास आया है। यह दस्तावेज मेरे सॉलीसिटर श्री त्रिकमदास द्वारकादास ने तैयार किया है। पिछली बार दस्तावेज दिनशा दाजी ने बनाया था और श्री त्रिकमदास ने उसमें कुछ सुधार किया है। क्या आप इसे अपने सॉलीसिटर को दिखाना चाहेंगे ? यदि ऐसा हो तो कृपया अपने सॉलिसिटर या अन्य व्यक्ति का जिससे आप सलाह लेना चाहें, नाम व पता लिखें, ताकि वह उसे दिखाया जा सके। श्री केशवदेवजी बंबई के बाहर हैं और कुछ समय तक वापस नहीं आनेवाले हैं, इसीलिए आपको यह कष्ट दिया है। आपका उत्तर आने के बाद मैं दस्तावेज लेकर आपसे मिलने आ जाऊंगा, ताकि आप उसे अंतिम स्वीकृति दे सकें।

आपको पता चला ही होगा कि जुहारमलजी वाला मेरा कर्ज राजा बहादुर मोतीलाल के नाम कर दिया गया है। किन्तु मेरे पार्टनर श्री रामधनदासजी ने उसपर आपत्ति उठाई है और शायद वह कोर्ट में भी जायं। मेरे सॉलीसिटर की राय है कि उसमें उन्हें सफलता नहीं मिलेगी। श्री

रामधनदास और लोकनाथप्रसादजी के वीच चल रहे मुकदमे की सुनवाई २१ ता० को है। शेष मिलने पर—

सादर आपका,
शांतिकुमार मोरारजी

ता० क०

आपसे कर्ज मैंने २४-१-३० को लिया था और अदायगी की आखिरी किश्त १५-९-३२ को दी गई।

श्री शांतिकुमार नरोत्तम मोरारजी के नाम—

: १५८ :

धूलिया,
२१-११-३२

प्रिय शान्तिकुमार,

तुम्हारा ता० १४-११ का पत्र मुझे कल शाम को दिया गया। तुम्हारी याद तो बीच-बीच में आया करती है। मेरे कान के संवंध में, संभव है, मुझे एक्सपर्ट को दिखाने के लिए बम्बई या पूना कुछ रोज में जाना पड़े, इसलिए तुम पहले आओ तो तपास कर लेना। तुम्हारा खाता, ब्याज-सहित, चुकता हो गया, ऐसा तुमने लिखा, सो पढ़कर खुशी हुई। श्रीमती शान्तिकुमार को मेरी ओर से एजेन्सी देने में व कानूनी लिखा-पढ़ी कर देने का तुमने जो मसविदा तैयार कराया है, उसकी नकल व पहले जो लिखत है उसकी नकल श्री केशवदेवजी को भिजवा देना। वह उसे देखकर मेरे मित्र श्री कृष्णदासजी जाजू, जो कानून जानते हैं, के पास भिजवा देंगे। अगर संभव हो तो एक नकल मेरे पास यहां भिजवा देना, नहीं तो वर्धा से जाजूजी के देखने के बाद वह कागजात मेरे पास आ जायंगे तव मैं देख लूंगा। उसके बाद तुम्हारा

मुझसे मिलना ठीक रहेगा । बंबई में मेरे सॉलीसीटर तो मेहरबानजी कोला रोमर की फर्म है; परन्तु उन्हें दिखाना जरूरी होगा तो बाद में दिखा देंगे। मेरी एक ही इच्छा है कि लिखा-पढ़ी बराबर सचाई के साथ पक्की हो जाय, जिससे भविष्य में श्रीमती शांतिकुमार के तुम्हारे लेन-देन व अन्य कारणों से किसी प्रकार की तकलीफ न पहुंचे। मेरी समझ से शक्कर मिल बराबर चल गई तो श्री केशवदेवजी भी १५ दिसम्बर के बाद बंबई आ जायंगे। लिखा-पढ़ी पर सही हो जाने पर यह पत्र मुझे वापिस कर देने का ख्याल रखना।

श्री जुहारमलजी के लोन का झगड़ा चलने की संभावना लिखी व श्री रामधनदासजी व श्री लोकनाथजी के बीच में कुछ चलती है, जानकर दुःख हुआ। आपस में समझौता कर लेते तो हजारों रुपये व समय की नुकसानी से बच जाते। खैर, तुमको झगड़े में व खर्चे में नहीं उतरना पड़े, इसका पूरा ख्याल रखना। पूज्य माताजी व गोकीबहन को मेरा प्रणाम कहना। तुम दोनों से वन्देमातरम्।

श्री केशवदेवजी व मेरे पास कागजात के साथ पेढ़ी का हिसाब भी भिजवा देना। सिंधिया ठीक चलती होगी।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

श्री शांतिकुमार नरोत्तम मोरारजी की ओर से—

: १५९ :

बंबई,
१-९-३३

प्रिय सेठ जमनालालजी,

आपकी सूचनार्थ निवेदन है कि मैंने और मेरी पत्नी ने दस्तावेज पर कल दस्तखत कर दिये। मुझे खेद है कि मैं पहले दस्तखत नहीं कर सका,

क्योंकि मैं कलकत्ता गया हुआ था। मैंने अपने सॉलिसिटर को कहा है कि वह दस्तावेज की एक नकल अपनी इच्छानुसार श्री दिवेकर को भेज दें। उनसे मैंने यह भी कहा है कि वह इस संबंध में श्री दिवेकर और पोपटलाल से बिल का मामला भी तय कर दें। उसके बाद मैं सेठ केशवदेवजी की सलाह के अनुसार रकम अदा कर दूंगा।

मैंने सिंधिया स्टीम नेवीगेशन कंपनी लि०को भी सूचित कर दिया है कि उसकी एजेंट फर्म के पार्टनर की हैसियत से आपने ता० १ जुलाई, १९३२ से अवकाश प्राप्त कर लिया है।

ऐन समय पर आपने इतनी बड़ी रकम देकर जो सहायता की उसके लिए मैं किन शब्दों में आपका आभार प्रकट करूं। यहां यह कहना असंगत नहीं होगा कि मेरे धनी संबंधियों तथा पिताजी के तमाम मित्रों ने, उनसे सहानुभूति रखनेवालों के इतने बड़े दायरे में से अबतक किसीने मेरी ऐसी सहायता नहीं की जितनी कि आपने की। इस कारण तथा इसलिए भी कि पूज्य बापूजी इस (सहायता) से संबंधित थे, मैं उत्सुक था कि जल्दी-से-जल्दी इस कर्ज को चुका दूं। अब इससे उऋण होकर मुझे बहुत संतोष हो रहा है।

मुझे विश्वास है कि मुझमें आपने अबतक जो दिलचस्पी ली, वह आगे भी लेते रहेंगे और आपकी सहानुभूति मुझे मिलती रहेगी, जो कि मेरे लिए बहुत मूल्यवान है।

आपकी कृपा के लिए पुनः धन्यवाद! सादर

आपका,
शांतिकुमार

श्री शांतिकुमार नरोत्तम मोरारजी के नाम—

: १६० :

वर्धा,
३-९-३३

प्रिय शांतिकुमारजी,

१ ता० का तुम्हारा हृदयस्पर्शी पत्र मिला। वास्तव में मैंने कोई विशेष कार्य तुम्हारे लिए नहीं किया है। मैं हमेशा तुम्हें अपना छोटा भाई मानता आया हूं और इसलिए मैंने वही किया जो अपने छोटे भाई के लिए मुझे करना चाहिए था। हालांकि सिंधिया नेवीगेशन कंपनी लि० से मैंने संबंध विच्छेद कर लिया है, लेकिन तुम्हें जब भी जरूरत होगी, सलाह-मशविरे के लिए विना हिचकिचाहट के मुझे लिखते रहना। तुम्हारा और कंपनी का हित पहले की तरह अब भी मुझे प्रिय है। उस ओर से तुम्हें चिंता का कोई कारण नहीं है। मेरी हार्दिक इच्छा है कि तुम कंपनी के द्वारा तथा अन्य प्रकार से भी राष्ट्र की सेवा करते रहो।

श्री दिवेकर तथा पोपटलाल ने काफी ज्यादा रकम का विल वनाया होगा। मेरे विचार से श्री केशवदेवजी नेवटिया के द्वारा उस मामले को निपटाना वेहतर होगा।

अपने पत्र में तुमने जो भावनाएं व्यक्त कीं, उसके लिए आभारी हूं और तुम्हारी सफलता की कामना करता हूं।

तुम्हारा,
जमनालाल वजाज

: १६१ :

वर्धा,
१०-२-४२

प्रिय शांतिकुमार,

तुम्हारा ५ फरवरी का पत्र मिला। इसकी आवश्यकता न थी। मैं जानता हूं, तुम्हें यहांपर थोड़ा-वहुत कष्ट तो हुआ होगा। किंतु मैं तो

तुम्हें घर का आदमी समझता हूं। इसलिए इस ओर ध्यान देने की न तो मैंने आवश्यकता समझी और न आवश्यकता है।

२२ फरवरी को पूज्य विनोवाजी बंवई आ रहे हैं। उस समय गो-सेवा-संवंधी एक सभा का आयोजन किया जाय। सर पुरुषोत्तमदास या सर चुन्नीलाल सभापतित्व करें तो मेरी राय में संघ को वहांपर काम करने में सहूलियत होगी। स्वामी आनंद को टेलीफोन करके उन्हें भी कहना। अगर मीटिंग हो गई तो काफी लाभ होगा। और वैसे थोड़ा वातावरण भी वन जायगा। विनोवाजी वहुत करके कमल के पास ठहरेंगे।

जमनालाल वजाज का वन्देमातरम्

श्रीमती जनावेन रजव अली की ओर से—

: १६२ :

वम्वई,
१४-३-३९

मेहरवान पूज्य भाई जमनालालजी,

अकवर ने कांग्रेस-अधिवेशन में जाना स्थगित कर दिया है। इस संवंध में कल आपको एक पत्र लिखा है। आज मुझे भी कहा कि काकाजी को लिखो कि जो कार्यक्रम वदला, उसके लिए मुझे क्षमा करें।

भाईजी, अकवर वहुत भला लड़का है। एक वरस लंदन में रह आने के वाद भी उसके वर्ताव व रहन-सहन में कुछ भी फर्क नहीं पड़ा है। इससे मुझे वहुत संतोष होता है। मात्र इन लड़ाई के दिनों में वापस जा रहा है, इसीकी चिंता है। पर भाईजी, यह तो धर्मसंकट है, इस कारण मैं तो उसे भगवान के हवाले करके धीरज रखूंगी। आप तथा महात्माजी से मेरी

तरफ से कहना कि वह भी अंतःकरण से आशीर्वाद दें। अब भगवान की इच्छा होगी तो १९४१ की जनवरी में एम० बी० की पहली परीक्षा पूरी करके वापस आ जायगा। वह २५ मार्च को इटेलियन जहाज से जानेवाला है।

अब तो अकबर के बदले सलीम सफीया के साथ कांग्रेस में आ रहा है, और आपके साथ ठहरेगा। यह पत्र सलीम के साथ भेज रही हूं।

भाईजी, आप मुझ जैसी विधवा बहन पर और उसके बच्चों पर जो स्नेह रखते हैं, उसका बदला आपको ईश्वर दे, यही प्रार्थना ईश्वर से करती हूं। इतना ही।[1]

जनाबेन रजब अली के अशीर्वाद

श्रीमती राजकुमारी रिषभदास रांका की ओर से—

: १६३ :

जामनेर,
३-२-३६

प्रिय काकाजी,

जब इन्होंने वर्धा या आपके पास आने की चर्चा शुरू की, तब जो कुछ मेरे विचार या अड़चनें हैं वे सब कह देती हूं, जिससे फिर कोई गलतफहमी न रहे और आगे चलकर पछताना न पड़े।

१. मैं अब इधर-उधर फिरने से थक गई हूं। बाल-बच्चों का ख्याल करके अब इधर-उधर फिरना अच्छा नहीं। इसलिए आप अब जो भी निश्चय करें या उनसे करायें वह काम का हो।

---

१. गुजराती से अनूदित।

२. मेरा स्वभाव थोड़ा चिड़चिड़ा बन गया है, उसका कारण यह है कि मैंने वर्धा छोड़ने के बाद सच्चे स्नेह को न पाकर स्वार्थ और बेईमानों का ही अनुभव किया है और मुझे लगता है कि संसार में मुझे प्रेम करनेवाला कोई नहीं। पीहरवाले इतने स्वार्थी मिले कि मेरे गहनों के पैसे, जो मैंने मेरे भाई की शादी में दिये थे, वापस देने की तो दूर, मेरे पास बची-खुची सोने की जो दो बंगड़िया थीं, वे भी उन्होंने मेरे बिना पूछे गिरवी रख दीं। मेरे साथ उनका इतना रूखा व्यवहार है कि मैं या मेरे बच्चे बीमार पड़ें तो भी आकर नहीं देखते। मैं अगर पर्दा नहीं निकालती हूं. तो मेरी निन्दा करते हैं। रहे वह—तो वह तो व्यापार के पीछे इतने पागल हो गये हैं कि सवेरे से शाम तक व्यापार के आगे उनको बोलने की फुरसत नहीं। इन चार-पांच साल में मैंने जो जीवन बिताया, वह इतना रूखा था कि मैं उसमें जलकर खाक होगई। मैंने हजारों बार भगवान से मृत्यु मांगी, पर न मिली। सवेरे से शाम तक घानी के बैल जैसी घर के काम में लगी रहती हूं। अन्दर-अन्दर घुलती हूं। इस घुलने का यह परिणाम हुआ कि मैं चिड़चिड़ी बन गई। अभी से बूढ़ी होकर जीवन का उत्साह खो बैठी हूं। मैं सूखी रोटी खाकर भी संतोष से रह सकती हूं, पर ऐसा जीवन नहीं चाहती। लाचार हूं। कहां जाऊं? क्या करूं? मेरा है कौन? मुझे अपनी बेटी जैसा प्यार कौन करे? मेरी मांकी भूख कौन मिटाये? मेरा सुख-दुख सुननेवाली सखी को कहां खोजूं? मैं इतनी लाचार बन गई हूं कि मैंने अपने पर आये प्रत्येक संकट—दुख सहे। वह जब जेल गये थे तब उनके मित्रों ने मुझे मदद देनी चाही तो मैंने नहीं ली और उन्होंने मुझे अपने यहां बुलाया तो मैं नहीं गई। मैं मरना ज्यादा पसन्द करती हूं, पर दया-याचना नहीं चाहती। पर जब आपके पास आने का विचार हम कर रहे हैं तब आगे का जीवन ज्यादा सुरक्षित हो, इसलिए मैंने यह सब लिखा है।

अगर आप मेरे दुखी जीवन को सुखी करने के लिए मेरे पिता की जगह पूरी कर सकें तो ही मुझे बुलायें। नहीं तो मैंने वर्धा छोड़ने के मोह में आकर जो गलती की उसका प्रायश्चित्त भुगतती हुई दुःख के बचे दिन काटूंगी।

३. जैसे चिड़चिड़ापन, वैसे ही संकोच भी मेरा एक दोष है। मैं गरीबी में जन्मी, गरीबी में पली। श्रीमंती की अभिलाषा भी नहीं है, पर मैं श्रीमानों से इसलिए डरती हूं कि वे अगर मुझसे वर्ताव में परायापन रखेंगे तो वह मुझसे सहन नहीं होगा। मैं खुद अपनी सीमा समझती हूं। इसलिए श्रीमानों से कभी किसी प्रकार की आशा नहीं रखती। परन्तु अपमान भी नहीं सहन कर सकती। इसलिए आप अगर मेरे पीहर का स्थान लेना चाहें तो मेरे इस दोष को भी ध्यान में रख लें और मेरा यह दोष आप बर्दाश्त कर सकें तो ही मुझे बेटी बनायें।

मुझे आपकी श्रीमंती से मोह नहीं है, पर आपके प्रेम के उन जूने दिनों की याद करके ही मैं आपको पिता बनाना चाहती हूं। फिर भी मुझमें संकोच रहेगा। मैं आपसे सिवाय प्रेम के कुछ आशा भी नहीं रखूंगी। भूखी हूं मातृ-पितृ प्रेम की। आपकी छत्रछाया में रहकर वह मिलता रहे तो मुझे संतोष है।

उनमें इतनी शक्ति है कि वह हमारे संसार के लिए रूखी-सूखी रोटी तो कमा ही लेंगे।

मैं कहीं भी गांव के बाहर आपके घर के आस-पास मकान हो, वहीं रहूंगी, जिससे मेरे बच्चों को अच्छी हवा और शुद्ध वातावरण मिल सके।

मैं अभी तक डरती हूं, इसलिए जब कभी वह बाहर गांव जायं, तब मेरे पास रात को सोनेवाली कोई भी बहन हो तो ठीक।

आप मुझे यह सब बातें अनुकूल कर दें तो मैं आने को तैयार हूं, वरना नहीं। मेरा उनपर भरोसा नहीं है। वह तो सबकुछ व्यवस्था हो जायगी, ऐसा कहेंगे। और अपने काम में लग जायंगे, फिर उधर ध्यान नहीं देंगे। इसलिए मैंने आपको लिखा है।

अब रहा वहां आने का समय। मुझे वहां १५-२० रोज बाद आने में भी आपत्ति नहीं है, पर मुझे दो महीने बाद बालक होना है, सो मेरी व्यवस्था वहां हो सके तो मैं वहां आ जाऊं, नहीं तो यहां प्रसूति होने के बाद

आऊं। इसलिए आप जैसा विचार हो, वैसा मुझे लिख दें। आपका पत्र देखकर ही निश्चय करूंगी।

आपकी पुत्री,
राजकुमारी

श्री रिषभदास रांका की ओर से—

: १६४ :

फतेपुर (पूर्व खानदेश),
१७-२-३०

पूज्य सेठजी,

आपको मैंने कल पत्र दिया, वह मिल गया होगा। यहां आने पर पिताजी से वातें हुईं। मैंने उनको जो चिट्ठी लिख दी है, उसे वापस देने को वह इसलिए डरते हैं कि मैं कहीं एस्टेट गंवा डालूं। इसलिए यह मार्ग निकल सकता है कि स्थावर एस्टेट में तथा वह जवतक मेरा छोटा भाई वालिग न हो जाय तवतक वेच नहीं सकेंगे। इस वात पर वह मेरी चिट्ठी वापस कर देंगे। मुख्य झगड़े की बात यही है। वाकी की वातें तो थोड़े रोज मेरे यहां रहने पर सुलझ जायंगी। विदेशी माल का व्यापार न करना भी उन्होंने स्वीकार कर लिया है।

यह तो घर की वात हुई। अव रही सार्वजनिक काम की बात। मैंने आपका सिपाही बनकर काम करना जो स्वीकार किया उसका एकमात्र कारण यह है कि देश की वर्तमान परिस्थिति में सरकार से जो मुकाबला करना पड़ेगा उसमें सेनापति की आज्ञा का पूर्ण रूप से पालन करनेवाले सिपाहियों की वड़ी जरूरत होगी। जवतक अलग-अलग विखरे हुए लोग तथा अलग-अलग चलते हुए काम एकसूत्र में बंध नहीं जायंगे तबतक हम

सरकार का मुकाबला ठीक नहीं कर सकेंगे। यदि यह बात मैंने नहीं समझी होती तो मैं अपने काम करने की हविस को बुझा सकता था और मैं इस भाग में कुछ काम भी कर दिखलाता, किन्तु इस समय व्यक्तिगत विचार को छोड़ देश के इस संग्राम में मेरा जहां उचित उपयोग आपको दिखे वहां करने के लिए मैं आपके पूर्ण आधीन हूं। मुझे सिर्फ यही चिन्ता इस समय है कि देश के इस संग्राम में मेरी शक्ति का पूर्ण उपयोग हो।

वर्तमान देश के सामने दो प्रकार के कार्य हैं। एक लड़ाई का कार्य और दूसरा रचनात्मक। आप मुझसे कौन-सा कार्य लेना चाहते हैं, यह लिखने की कृपा कीजिये।

आशा है, आप प्रसन्न होंगे। आपके पत्र की राह देखता हूं।

रिषभदास का प्रणाम

: १६५ :

पूज्य चाचाजी,

आपका पत्र मिल गया था। पू० चाचीजी विहार गई हैं। मैं वहां न जा सका, इसका कारण, यहां के लोगों ने मैं बम्बई में रहूं, ऐसा आग्रह किया था। बाकी मेरी इच्छा उनके साथ जाने की थी और वह भी मुझे ले जाना चाहती थीं, किन्तु यह न हो सका। यहां अब मेरा कार्यक्रम यह है—

१. विले पारले-छावनी की बम्बई में बैठकर योजना करना तथा व्यूह रचना करना।

२. घणसोली के ग्राम-संगठन के कार्य का दिशा-सूचन।

३. नये स्वयं सेवकों की भरती करना।

४. खादी-बिक्री न होने से चर्खा-संघ को अड़चनें उपस्थित हुई हैं, उन्हें दूर करने का प्रयत्न करना।

विले पारले के लोग यहां आकर सलाह लेते हैं। घणसोली के कार्य के लिए मासिक चारसौ की सहायता श्री सूरजी वल्लभदास करते हैं और उस काम को किस प्रकार चलाना, मैं इसका दिशा-सूचन करता हूं।

नये स्वयं सेवकों की भरती का काम चालू है और ठीक संख्या में एकत्र करने का विचार है। चौथे कार्यक्रम का भी ठीक परिणाम हुआ है। सूरजी वल्लभदास ने एक लाख रुपये की पूंजी लगाकर शुद्ध खादी की दूकान खोलने का निश्चय किया है। इसी तरह और भी मैं प्रयत्न कर रहा हूं। दूकान पर रहता हूं। आप प्रसन्न होंगे।

आपका,
रिषभदास

श्री रिषभदास रांका के नाम—

: १६६ :

तुमने नाम वदला, ऐसा सुना है। मुझे विश्वास नहीं होता। अपनी लड़ाई का मूल सत्य पर है। नाम बदलने की कोई भी हालत में विलकुल जरूरत नहीं मालूम होती। जो कुछ ईश्वर की इच्छा है, वही होता है। मनुष्य को विना कारण मिथ्याभिमान पैदा हो जाया करता है। तुम इससे बचोगे, ऐसी ईश्वर से प्रार्थना है।

जमनालाल बजाज

श्रीमती सुबटा (सुव्रता) देवी रुइया की ओर से—

: १६७ :

बम्बई,
१०-८-२७

प्रिय भाई,

आपने लिखा कि सम्भव हो तो अपने हाथ के सूत की रक्षा भेज देना । सो मैंने अपने हाथ से सूत कातकर यह रक्षा बनाई है। देखने में सुन्दर तो नहीं है, परन्तु भाव से भरी हुई है। आपने लिखा कि वदलेमें संभव हुआ तो

रुपया तथा वस्त्र न भेजकर उत्तम विचारों का पत्र भेजने का इरादा है। भाई, क्या आप अभी तक यह भी निश्चय नहीं कर पाये, जिससे संभव लिखना पड़ा! आपकी वहन रुपये या वस्त्र के लिए उदासीन है। मुझे तो निर्मल प्रेम के साथ उच्चतम ध्येय का भरा हुआ पत्र भेजने में ही मैं अपनी रक्षा की कदर समझूंगी। सो वहन की यह रक्षा स्वीकारिये। यह दिन अत्यन्त मंगलमय है, क्योंकि श्री १०८ मुनि विष्णुकुमारजी ने ७०० मुनियों को वलि के छल से उवारा था। उनके प्राणों की रक्षा की थी। धर्म के लिए और इस दिन की याद दिलाने के लिए वहन अपने भाई को रक्षा वंधन करती है न कि मिथ्या प्रणाली से या पैसे के लिए!

आपकी वहन,
सुवटा

: १६८ :

पूना,
१७-८-२७

प्रिय भाई,

आपका भाद्र कृष्ण १ का लिखा हुआ पत्र मुझे भाद्र कृष्ण ३ को मिला। पढ़कर के जैसे रंक को नवनिधि प्राप्त हुई हो, ऐसा आनन्द हुआ। भाई, आप कहेंगे कि देखो स्त्रियों का स्वभाव ही कुछ ऐसा है कि वात को वढ़ा-चढ़ाकर लिख देती हैं। परन्तु भाई. यह नहीं समझना। मुझे जैसा अनुभव हुआ वह मैंने आपको लिखा है। मैंने आपको रक्षा क्या भेजी, वल्कि अपने हृदय से सत्भाव के रेशे निकाल-निकालकर भेजे हैं। आपने व्यवहार के सुन्दर नियम लिख भेजे हैं, वे मेरे लिए वहुत ही उपयोगी है। अव तो पर-मात्मा से यही प्रार्थना है कि दवी हुई इच्छा का सत् उपयोग हो। इच्छा के अनुसार कार्य होने से मनुष्य के मन का असमंजस मिटकर उसे धीरज रूपी शांति की प्राप्ति होती है। भाई, क्या जीवन ऐसे ही नष्ट होनेवाला है? लाचार मनुष्य क्या करे? ईश्वर की मरजी पर छोड़ देना है। पर आप

मेरे लिए चिंता नहीं करें। अपने कर्त्तव्य का विचार कर रही हूं। जैसा प्रारब्ध में होगा, वैसा ही होना है।

आपकी बहन,
सुवटा

: १६९ :

पूना,
२-११-३०

प्रिय भाई,

पत्र मिला, आपके कुशल समाचार पढ़कर मन को अत्यन्त हर्ष हुआ। मेरा पत्र देर से पहुंचने के कारण आपके मन को कुछ चिंता हुई, यह जान दुःख हुआ। उस दुःख का प्रायश्चित्त यही है कि भविष्य में ऐसा न होगा।

गांधी-युग का अनुभव मेरी राय से करीव-करीव सभीको होगा। मैं भी अपनी अल्प वुद्धि के अनुसार करती हूं। जिन-जिनको हम अवतार मानते हैं, उन्होंने अपने-अपने युग में ऐसे ही कष्ट सहन किये हैं। उन्होंने अपनी सुख-शांति का जनता के हित के लिए भोग देकर अपने-आपको होम दिया है। वैसा ही अवतार-युग आज उपस्थित है। सत्य-प्रिय परम पिता परमात्मा सत्यजय तथा पापक्षय करता है। जो-जो व्यक्ति सत्य के लिए अपने-आपको होम रहे हैं, उन्हें परमपिता परमात्मा अखंड शान्ति प्रदान करें, यही हृदयपूर्वक परम पिता परमात्मा से मेरी प्रार्थना है।

आपकी वहन,
सुवटा

: १७० :

पूना,
१७-८-३७

प्रिय भाई श्री जमनालालजी,

भाई आपके लिए राखी भेजती हूं। भाभी सौ० जानकीदेवी के लिए और कमल और सावित्री के लिए भी। आपके पास आकर बांधने में कितना

सन्तोष रहता और कितने दिनों से वहांपर आने की जो इच्छा बनी हुई है, उसकी पूर्ति होती। परन्तु जब संयोग होगा तभी आना बन सकेगा।

आपकी बहन,
सुव्रता

श्रीमती सुव्रतादेवी रुइया के नाम—

: १७१ :

पूना,
१-३-४०

श्री बहन सुव्रतादेवी,

मैं यहां कल सुबह पहुंचा। पूज्य बापू ने बताया कि उनके पास भी आपका पत्र नहीं पहुंचा। उन्होंने भी आपकी इच्छा को पसंद किया है। आप यह रकम बच्छराज कंपनी में भिजवा देंगी, तो मैं हिंदी-प्रचार कार्यालय, वर्धा में मिलने की व्यवस्था कर दूंगा।

मैंने प्रजा-मण्डल जयपुर व वनस्थली के बारे में आपसे कहा ही है। मुझे जयपुर में शीघ्र ही निश्चित सूचना मिल जायगी तो व्यवस्था होने में ठीक रहेगा। चिन्ता भी कम हो जायगी। मेरे गोड़े में दर्द अभी भी है। संभव है, कम हो जायगा। जयपुर आने पर वहां का बिगड़ा हुआ काम ठीक रास्ते आ जायगा। मन को भी शान्ति मिलेगी, और उसका शरीर पर भी अच्छा परिणाम होवेगा।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

डा० जवाहरलाल रोहतगी की ओर से—

: १७२ :

कानपुर,
२-२-४२

प्रिय जमनालालजी,

इधर मेरी तवीयत खराव होने के कारण वर्धा न आ सका। मैंने पत्र भी इसलिए नहीं लिखा कि आऊंगा। तवीयत अभी ठीक नहीं हुई है। अभी चक्कर आता है। उन्हीं सव कारण से 'गो-सेवा संघ' की मीटिंग में शामिल नहीं हो सका। आशा है, आप क्षमा करेंगे। मुझे इसका खेद वहुत रहेगा।

मुझे कोई खास वात तो विचारार्थ नहीं रखनी थी, केवल इस संघ का नाम जरा ठीक नहीं मालूम पड़ता। 'गो-सेवा संव' नाम में धार्मिक अंश वहुत टपकता है, और हर आदमी, जिसके गौ के लिए धार्मिक भाव नहीं होते उसके इसमें सम्मिलित होने में थोड़ा अटकाव मालूम पड़ता है। और जो इस संघ के स्थापित करने के भाव हैं, वे भी इस नाम से साफ जाहिर नहीं होते। ऐसा कोई नाम जैसे 'गो-वर्धन संघ' होता तो शायद ज्यादा अच्छा होता। लेकिन आप सवने इसपर विचार करके ही रखा होगा, सो सव ठीक ही है।

वापूजी की सेवा में वन्दे।

सस्नेह,
जवाहरलाल

श्री हरिकृष्ण रोहतगी के नाम—

: १७३ :

अलमोड़ा,
३०-४-३३

प्रिय श्री हरिकृष्णजी,

आपका वर्धा भेजा हुआ तार, वहां से वापस होकर मुझे कल शाम को मिला। आपका इस प्रकार का तार पढ़कर मुझे आश्चर्य व दुःख हुआ। अब तो आपको जैसा आपने लिखा है कि 'मैंनेजर ने वेईमानी से २० हजार रुपये कम जमा किये।' यह वात पुरावे-सहित श्री केशवदेवजी के पास सावित करनी होगी। अगर आप सावित कर देंगे तो मुझे पूरी उम्मीद है कि हिन्दुस्तान शुगर मिल का वोर्ड, जिस मैंनेजर ने वेईमानी की है और बीस हजार कम नोंध किये हैं उसे उचित सजा देगा व आपका कमीशन वगैरा जो न्याय से होगा, वह अवश्य मिलेगा। और अगर आपने यह गम्भीर आरोप विना तपास किये व सोचे एक जवावदार अफसर पर लगाया है, तो आपको विना शर्त अपना यह आरोप वापस लेना होगा और लिखित क्षमा भी मांगनी होगी। मैं और मेरी कम्पनी का वोर्ड इस प्रकार के आरोप, चाहे कोई भी आदमी लगाए, वरदाश्त करने को तैयार नहीं। इसलिए आप अपना लगाया हुआ चार्ज सावित करें। मैंने इस सम्वन्ध में श्री केशवदेव-जी को भी लिखा है। आपके तार से मालूम होता है कि आपको हिन्दुस्तान शुगर मिल्स द्वारा नुकसान व तकलीफ पहुंची है। अगर यह वात सच निकली, तो मुझे अवश्य दुःख होगा। अगर गलत निकली तो भी दुःख होगा कि क्यों मैंने डाक्टरसाहव के आग्रहवश आपके लिए सिफारिश की। खैर, अब तो आपको जो कष्ट हुआ व हानि हुई वह सब श्री केशवदेव-जी के सामने कृपा करके सावित करें।

जमनालाल का वन्देमातरम्

श्री जीतमल लूणिया के नाम—

: १७४ :

वर्धा,
१९-११-२६

श्री जीतमलजी,

आपका पत्र ता० १५ का मिला। मेले में गीता विकने की संभावना हो तो आप तार देकर भी मंगा सकते हैं। शायद महाबीरप्रसादजी गोरखपुर में न हों तो गीता प्रेस के नाम तार भेज देने से शायद वे लोग भेज देंगे।

'यंग इंडिया' के बारे में आप श्री घनश्यामदासजी से पूछ सकते हैं। प्रेस के बारे में आप उनसे वातचीत कर लेंगे और उनकी क्या राय है सो जानकर मुझे लिख भेजेंगे। उनका इलेक्शन का मामला समाप्त होने से मैं उन्हें पत्र लिखूंगा।

श्री चिंतामणराव वैद्य का पत्र भेजा है, सो पढ़ लेंगे। क्या आप तथा हरिभाऊजी समझते हैं कि यह पुस्तक अधिक विकेगी? अगर ऐसा हो तो १००) के बजाय १००-१५०) अधिक दिया जाय। पर सब आवृत्तियों पर देना मुझे पसंद नहीं है। आप हरिभाऊजी से परामर्श करके उनको लिख भेजेंगे। मैंने भी उनको लिख दिया है। इस वारे में आप अपनी राय मुझे भी बंबई शीघ्र भेजें, ताकि वहां श्री वैद्यजी मिलने वाले हैं, सो उनसे बात करने में सुभीता रहेगा। मेरा कल यहां से वम्बई जाने का विचार है। वहां से सावरमती होकर वर्धा ता० ४ तक वापस आने का है, पूज्य वापूजी के साथ।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

श्री जीतमल लूणिया की ओर से—

: १७५ :

अजमेर,
९-२-२७

मान्यवर सेठ साहब,

सादर सप्रेम वन्दे।

अजमेर के पते पर भेजा हुआ आपका पत्र मुझे काशी में मिला था। श्री केडियाजी का पत्र काशी से आया था। उन्होंने खादीवाला निबन्ध 'मंडल' की ओर से ही प्रकाशित करने के लिए लिखा था। तदनुसार श्री गौड़जी से मिलकर उसका अनुवाद शुरू करा दिया है। मुझे वहां ऐसा मालूम हुआ कि पूज्य महात्माजी ने उसे चर्खा-संघ की ओर से प्रकाशित करने का विचार किया है। इसलिए मैं महात्माजी से मिलने पटना गया था। उन्हें 'मंडल' का सब हाल सुनाकर उसे 'मंडल' के द्वारा ही प्रकाशित करने के लिए राजी कर लिया है। उन्होंने पुस्तक का मूल्य बहुत कम, करीब आठ आने रखने को कहा है। पर यह तभी सम्भव हो सकता है जबकि कुछ रकम कहीं से सहायता के रूप में मिल जाय। मैंने व हरिभाऊजी ने भाई शंकर-लालजी बैंकर को चर्खा-संघ से सहायता दिलाने के लिए पत्र दिया है। यदि सहायता मिल सकी तो आठ आना मूल्य रखने में 'मंडल' को कोई हानि नहीं होगी।

'जीवन साहित्य' (काका कालेलकर के लेख-संग्रह) की भूमिका भी बाबू राजेन्द्रप्रसादजी से पटना में लिखा ली थी। 'तमिल वेद' की श्री राजगोपाला-चारीजी से लिखाई है। सब पुस्तकें कल पोस्ट से भेजी जायंगी। लगातार करीब डेढ़-दो महीने बनारस में रहने से छः-सात पुस्तकें छप सकी हैं। 'मंडल' का प्रेस हो जाने से तो बड़ी सुविधा हो जायगी। योग्य सेवा लिखें।

आपका,
जीतमल लूणिया

श्री कांतिभाई व्यास की ओर से---

: १७६ :

विंध्याचल,
१४-९-४१

पूज्य भैयाजी,

मैं कल दोपहर २।।। वजे 'मां' (आनंदमयी) की कृपा से सकुशल पहुंच गया।

मेरी तवीयत वहुत अच्छी है और खूव आनन्द में हूं। यहां पहुंचने पर माताजी को न देखकर कुछ दु:ख तो हुआ। पर क्या हो? 'मां' की इच्छा के अधीन होने में ही सार है। मैं तो धीरे-धीरे अपने जीवन को मन, वचन और कार्य से प्रभु को समर्पण करने का प्रयत्न कर रहा हूं। मुझे तो अटूट श्रद्धा है कि प्रभु योग्य समय में योग्य कार्य ही करते हैं। सचमुच प्यारे प्रभु ने मुझे आप जैसे पूज्य गुरुजन से मिलाकर मुझपर दया की है। न जाने क्यों मेरा हृदय आपकी ओर आर्कार्षित होता है। वह आकर्षण शारीरिक नहीं, बल्कि ऐसा लगता है कि पिछले जन्म के संस्कार ही एक दूसरे की आत्मा को आर्कार्षित कर रहे हैं। मेरे जीवन में आपका स्थान एक पूज्य पिता के रूप में रहेगा। मेरे जन्म देनेवाले पिता ने तो मुझे भौतिक शिक्षा प्राप्त करने में मदद देकर पढ़ाया-लिखाया। पर आपने तो मुझे आध्यात्मिक शिक्षा अथवा प्रभु की ओर ले जानेवाली शिक्षा की ओर आगे वढ़ने में मदद की और प्रोत्साहन दिया है। सचमुच यह प्रभु की ही वलिहारी है कि योग्य समय पर योग्य पुरुषों द्वारा यह अपने भक्तों की मदद करता रहता है। अपने जीवन में मैंने ऐसा अनेक वार अनुभव किया है। अपने जीवन की अनेक जिम्मेदारियां मैंने 'मां' के चरणों में अर्पण की हैं। गीता में भी भगवान कहते हैं कि जो भक्त अनन्य रूप से मेरी भक्ति करता है उसका योग-क्षेम में उठा लेता हूं।

अपनी तबीयत के समाचार अवश्य लिखें।

अंत में आपसे यही प्रार्थना करता हूं कि मुझसे जो कुछ कष्ट आपको हुआ हो, क्षमा करें।[1]

आपका बालक,
कांति के प्रणाम

श्री शंकरलाल वर्मा के नाम—

: १७७ :

वर्धा,
१-११-३३

प्रिय शंकरलालजी,

अपका पत्र मिला। समाचार-पत्रों की ओर मेरी वृत्ति उदासीन-सी होती जा रही है, ऐसा आपने लिखा है, वह बिलकुल ठीक है। खास करके आर्डिनेंस के अमल से विवश होकर जब 'सस्ता साहित्य मंडल' का प्रेस तक बेच डालना आवश्यक हो गया। ऐसी अवस्था में मैं आपको एक नया समाचारपत्र निकालने का साहस करने में न तो आर्थिक मदद कर सकता हूं न किसी अन्य प्रकार से उत्तेजंना दे सकता हूं। विद्यमान परिस्थिति में इस तरह का साहस यशस्वी होना संभव नहीं है और आप भी इस कल्पना को वर्तमान में तो छोड़ ही दें तो अच्छा, ऐसी मेरी आपको सलाह है।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

---

१. गुजराती से अनूदित।

श्री प्रह्लादराय वैद्य के नाम—

: १७८ :

श्रीनगर,
२-७-२९

प्रिय प्रह्लाद,

तुम्हारा कार्ड ता० २३-६-२९ का मिला। समाचार विदित हुए। तुमने लिखा कि बिसाऊ में तुम्हें अच्छी जगह मिल रही है, सो समझा। मैं तो समझता हूं कि यदि तुम्हें सीकर में निर्वाह का खर्च पूर्ण रूप से मिल जाता हो तो अन्यत्र जाने की जरूरत नहीं। हां, यदि तुम यह समझो कि सीकर के निवासियों को तुम्हारी सेवा की आवश्यकता नहीं है तथा तुम्हें दूसरी जगह पसंद हो तो जा सकते हो। किंतु वहां जाने से पहले वहां रहने का निर्दिष्ट समय पक्का कर लेना। वहां जाकर कुछ दिन तो जरूर टिका रहना चाहिए। तुम मेरी तरफ से कोई विशेष विचार रखे बिना जिस प्रकार तुम्हें ठीक लगे और तुम्हारे मन को शांति मिले वैसा कर सकते हो। बिसाऊ भी राजपूताना में ही है। विशेष दूर नहीं है। जो रखना चाहते हैं, वह सज्जन स्वभाव के हों और तुम्हारी इच्छा हो तो जा सकते हो।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम

: १७९ :

सीकर,
२३-९-२९

प्रिय प्रह्लादराय,

तुम्हारा ता० १४-९-२९ का कार्ड मिला। मैं यहां कल शाम को पहुंचा और कल पिलानी के लिए रवाना होऊंगा। मेरा पिलानी करीब २८-२९ रहने का विचार है। तुम्हारी वहां आने की कोई आवश्यकता नहीं है। कोई बातें पूछनी हों तो पत्र-व्यवहार द्वारा पूछ सकते हो।

तुमने वहां दो मास से काम शुरू कर दिया है, सो ठीक है। नई जगह में पहले-पहल जी नहीं लगता है, परन्तु कुछ दिन के वाद जी लग जायगा। तुम्हें दो वर्ष तो वहां रहना ही चाहिए। इससे तुम्हारी स्थिति अच्छी हो जायगी।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम

: १८० :

वर्धा,
२-४-३७

प्रिय प्रह्लाद,

तुम्हारा पत्र मिला। तुमको मकान वनाने के लिए कमरे के पट्टे की जमीन में से पूर्व के कोने में सड़क के तरफ की कनीराम-स्मृति-भवन के सामने की जगह पूर्व-पश्चिम ७ हाथ व उत्तर-दक्षिण ४० हाथ दी है। इस वात के सवूत के लिए जरूरत पड़े, तो यह पत्र राज्य अधिकारियों को दिखा सकते हो।

आशा है, तुम्हें राज्य से जमीन मिल जायगी।

जमनालाल वजाज का वंदेमातरम्

श्रीमती जानकीदेवी बजाज की ओर से श्री प्रह्लादराय वैद्य के नाम—

: १८१ :

जनवरी, १९४०

श्री प्रह्लादरायजी,

आपका ३-१-४० का पत्र मिला। समाचार मालूम हुए। आपको स्वर्ण-पदक मिला व साथ में ५० रुपये, यह समाचार पूज्य सेठजी को भी

वता दिये। उन्हें व मुझे यह जानकर वहुत खुशी हुई है। इसी तरह आप प्रगति करते रहें। इसमें सीकर की भी तारीफ है ही। मेरे लिए दवा के वारे में लिखा, सो मालूम हुआ। यहांपर आपकी लिखी दवा मिल जायगी। वहां से भेजने की जरूरत नहीं।

पूज्य सेठजी का स्वास्थ्य तथा इलाज ठीक चल रहा है। वह घूमने जाते हैं। थोड़ा व्यायाम भी डाक्टर के कहने से शुरू कर दिया है। अभी अनाज नहीं लेते हैं, दूध लेते हैं व शाम को उवाली हुई सब्जी लेते हैं। अभी एक माह यहां रहना होगा। गोड़ों का दर्द वहुत कम है। वजन तो ३४ पौण्ड कम हुआ है। अव वढ़ रहा है। धीरे-धीरे और वढ़ने की उम्मीद है।

हरिजन पाठशाला में एक मासिक पत्रिका वर्धा से भिजवा रही हूं, आप भी पढ़ें।

केशरवाई तथा चि० नर्मदा को मेरा आशीर्वाद कहें।

जानकीदेवी बजाज का वंदेमातरम्

सर शादीलाल की ओर से—

: १८२ :

लाहौर,
७-११-२७

प्रिय सेठ जमनालालजी,

आपके १४ अक्तूबर के पत्र के लिए धन्यवाद। मुझे खेद है कि राय वहादुर सेवकराम के लाहौर में न होने की वजह से आपने वैश्य-वर्ग की विधवाओं के वारे में जो जानकारी मांगी थी, वह नहीं भेज सका। अव मैंने उनसे वात कर ली है और उन्होंने कहा है कि वह इस वारे में आपको लिखेंगे।

विधवा-विवाह विभाग फिलहाल संतोषजनक ढंग से काम नहीं कर

रहा है। पूरी कामयाबी से काम करने के लिए इस विभाग का पुनर्गठन जरूरी है। ऐसा लगता है कि युवा विधवाओं के रिश्तेदारों से मिलने और उनके पुर्नविवाह के लिए उन्हें राजी करने की ओर पुरअसर कदम नहीं उठाये जा रहे हैं। मुझे विश्वास है कि इस वारे में आपकी मदद बहुत फायदेमंद होगी।

आशा है, आपकी तबीयत ठीक होगी।[1]

आपका,
शादीलाल

सर शादीलाल के नाम—

: १८३ :

वंबई,
११-९-३१

प्रिय शादीलालजी,

चतुर्भुज यहां मुझसे मिला और उसने आपसे हुई मुलाकात व मिल के मामले के वारे में मुझे विस्तार से वताया। श्री रामेश्वरदास विड़ला और घनश्यामदासजी विड़ला से मैंने फिर बात की। वे चतुर्भुज को आपकी मिल के लिए खाली करने को तैयार हैं। मेरी राय है कि उसे दो साल आपके पास काम करने का मौका देना चाहिए। इस दौरान वह जगह आदि के वारे में पूरी तरह वाकिफ हो जायगा और आपको भी उसके काम के वारे में राय वनाने का मौका मिल सकेगा। नरकटियागंज में उसे ४५० रु० माहवार मिलता है। मेरी इच्छा है कि इतना तो उसे आपके पास मिलना ही चाहिए। मैं आपके इस विचार से भी पूरी तरह सहमत हूं कि मुनाफे का कुछ फीसदी भी उसे मिलना चाहिए, ऐसी हालत में कार्यकर्त्ता अपने काम में अधिक दिलचस्पी लेता है। अतः उसे या तो ४५० रु०

---

१. अंग्रेजी से अनूदित।

अथवा ४०० रु० और कुछ प्रतिशत लाभ दिया जाना चाहिए। इस बारे में आपकी राय कृपया तार द्वारा सूचित करें। उसने इस बारे में सारा निर्णय मुझपर छोड़ दिया है। वह आपकी मिल में जल्दी आ सकता था, किन्तु उसकी पत्नी , पार्वतीदेवी, के आपरेशन के कारण वह १ अक्तूबर से काम शुरू कर सकेगा। आपके यूरोप के लिए रवाना होने के पहले जब आप मुजफ्फरनगर जायंगे, तब वह आपसे वहां मिलेगा। मुझे विश्वास है कि उसके काम से आपको पूरा संतोष मिलेगा।

कृपया लिखें कि नरेन्द्र और राजेश्वरी मेरे पास कब आ रहे हैं। मैं यहां २५ ता० तक रहूंगा। मैं माउंट प्लेजेंट रोड पर रामनारायणजी के बंगले पर ठहरा हुआ हूं। कान का ड्रेसिंग हर रोज करवाना पड़ता है। संभव है कि इस महीने के अंत तक मुझे यहां रुकना पड़े।

चतुर्भुज का दिल्ली का पता है—मार्फत सेठ रामलाल खेमका कश्मीरी गेट, दिल्ली। उसके बारे में आप जो तय करें और मुझे लिखें, उसकी एक नकल सीधे उसे भी भेज दें।

आपका,
जमनालाल बजाज

सर शादीलाल की ओर से—

: १८४ :

लाहौर,
१५-१२-३१

प्रिय सेठ जमनालालजी,

आपका तार मिला। साथ ही कृष्णदत्त का पत्र भी, जो सेठ रामनिवासजी ने मुझे भेजा। इस विषय में मैंने रामनिवासजी को सविस्तर लिखा है और उनसे प्रार्थना की है कि इस बारे में वह फिर विचार करें तथा

विवाह-स्थान संबंधी अपने पहले के निश्चय पर टिके रहें। मुझे दुःख है कि इस सम्वन्ध में आपकी राय भिन्न है। मुझे विश्वास कि मैंने इन्हें जो कुछ लिखा है उसपर आप पूरी तरह विचार करेंगे और उन्हें भी राय देंगे कि ऐन वक्त पर वह विवाह-स्थान न वदलें।

लाहौर में विवाह सम्पन्न करने में कोई दोष हो या वह धर्मशास्त्र के प्रतिकूल हो, ऐसी कोई वात नहीं। आप जानते ही हैं कि मारवाड़ियों में कई जगह रिवाज है कि विवाह वर के घर सम्पन्न होता है। महज यह कि उत्तर प्रदेश के कुछ रूढ़िवादी लोगों की राय भिन्न है, आपका दृष्टिकोण वदलने के लिए तो पर्याप्त कारण नहीं। कुछ लोगों की तो यह आदत ही होती है कि वे हर वात की आलोचना करें। लेकिन यह आलोचना क्षणिक ही होती है और दृढ़ आदर्शयुक्त व्यक्तियों को उससे प्रभावित नहीं होना चाहिए।

आपसे संतोषप्रद उत्तर पाने की प्रतीक्षा में हूं।[1]

आपका,
शादीलाल

: १८५ :

लाहौर,
२३-१२-३३

प्रिय सेठजी,

आपके कृपा पत्र के लिए मैं आपका आभारी हूं। उत्तर देने में विलम्ब हुआ, उसके लिए क्षमा-प्रार्थी हूं।

आपका कहना सही है कि तीन-चार महीने में मेरा हाईकोर्ट से रिटायर होने का विचार है और उसके वाद मैं सार्वजनिक कार्य में लगना चाहता हूं।

---

१. अंग्रेजी से अनूदित।

किन्तु अभी तक मैंने तय नहीं किया है कि सार्वजनिक कार्य का रूप क्या होगा।

आशा है, आप स्वस्थ होंगे।[1]

आपका,
शादीलाल

: १८६ :

मसूरी,
१४-८-३४

प्रिय सेठ जमनालालजी,

आपका ११ अगस्त का पत्र मिला। यह जानकर खुशी हुई कि आप एक क्लीनिक में नियमित इलाज करवा रहे हैं। मैंने अखवारों में पढ़ा था कि डाक्टरों ने कहा है कि आपरेशन की ज़रूरत नहीं है। मुझे विश्वास है कि उचित इलाज से आप जल्दी ही ठीक हो जायंगे।

जिस मामले का हवाला आपने अपने पत्र में दिया है, उसके वारे में मुख्य प्रश्न यह है कि क्या किसी मामले में ऐसे व्यक्ति की गवाही देना उचित होगा जो भारत के सर्वोच्च न्यायासन के पद पर रह चुका हो और जो अव प्रिवी कौंसिल का सदस्य हो—खासकर जवकि उस मामले की अपील प्रिवी कौंसिल में की जाने की संभावना है।

तीन दिन पहले मैंने मुजफ्फरनगर से एक पत्र आपको भेजा था, जिसमें मैंने प्रार्थना की थी कि हमारी मंसूरपुर की फैक्टरी के मैनेजर के लिए एक कुशल व अनुभवी व्यक्ति आप भेजें। आशा है, जो व्यक्ति आपने चुना है वह अगस्त के अंत तक आ जायगा। जैसाकि मैंने अपने पत्र में लिखा था, टेक्नीकल विभाग को छोड़कर फैक्टरी के हर विभाग में मैनेजर को पूरे अधिकार रहेंगे। उसके काम में किसी भी तरह की दखलंदाजी नहीं की जायगी। लाला हरिराज स्वरूप ने इस व्यवस्था को मान लिया है और

---

१. अंग्रेजी से अनूदित।

इस आशय का एक पत्र भी लिखा है। मेरे पत्र के साथ उनका पत्र भी मैंने आपको भेज दिया था।

फैक्टरी के सारे मामलात मैं जल्दी ही निबटा रहा हूं और इस मामले का फैसला भी जल्दी करना चाहता हूं। अतः कृपया लौटती डाक से सूचना दें कि आपने किस व्यक्ति को चुना है और वह मुजफ्फरनगर कबतक आ रहा है।

मैं राजेन्द्रलाल के साथ मसूरी आया हुआ हूं और 'हलीम कैसल' में ठहरा हूं, क्योंकि 'नारायण निवास' खाली नहीं है। लगभग तीन सप्ताह यहां ठहरूंगा, लेकिन यदि जरूरत हुई तो एक-दो दिन के लिए मुजफ्फरनगर जाऊंगा।[१]

आपका,
शादीलाल

: १८७ :

लंदन,
१५-२-३५

प्रिय सेठ जमनालालजी,

आपके पत्र के लिए धन्यवाद। मेरी तबीयत अब कुछ ठीक है। जुलाई के पहले भारत आने की आशा नहीं है। खुद मेरी इच्छा भारत की सेवा करने की है और बंबई पहुंचकर इस संबंध में आपसे सलाह करूंगा।

राजेश्वरी अपनी परीक्षा की तैयारी में लगी हुई है। वह अपने देश और नारीवर्ग की सेवा करना चाहती है। मैं उसे हमेशा सलाह देता हूं कि वह भारत के नारी-वर्ग में सामाजिक व शैक्षणिक कार्य करने के लिए योग्यता प्राप्त करे। ऐसा लगता है, इस काम में उसकी सही दिलचस्पी है और वह आपके मार्गदर्शन में काम करने को तैयार होगी। मुझे खुशी है कि आपका उससे नियमित पत्र-व्यवहार होता है।

फैक्टरी और उसके लिए कर्ज वगैरा के बारे में आपने जो पत्र लिखा, उससे मुझे संतोष हुआ। मैंने हरिजी को लिखा है कि आपकी सुविधा के

१: अंग्रेजी से अनूदित।

अनुसार वह आपसे वर्धा में मिल लें। उचित व्याज पर कर्ज देने पर आप विचार करेंगे। इसके लिए मैं आपका शुक्रगुजार हूं। अभी जरूरत कर्ज की है और मुझे आशा है कि आप उसका इंतजाम करवा सकेंगे। अपने पत्र में आपने जो सुझाव मुझे लिखे हैं उनके बारे में हरिजी आपको पूरी सूचना दे सकेंगे और मुझे आशा है उससे आपका समाधान हो जायगा। कर्ज के लिए जो 'सिक्यूरिटी' दी है, वह पर्याप्त होगी और कर्ज की रकम जितनी जल्दी हो सकेगी वापस अदा कर दी जायगी। आपसे प्रार्थना है कि व्याज दर कम हो, तो ऐसा इंतजाम करवा दें। आपके प्रयत्नों से कर्ज की उचित शर्तें ठहराने में कुछ कठिनाई नहीं होगी।

आशा है, आपके कान की तकलीफ अब नहीं होगी। अखबारों में जो खबरें छपी हैं उनसे चिंता है। ऐसा लगता है कि आपरेशन पूरी तरह सफल नहीं हुआ।[1]

आपका,
शादीलाल

सर शादीलाल के नाम—

: १८८ :

वर्धा,
२४-२-३५

प्रिय सर शादीलालजी,

आपका ता० १५ का पत्र मिला। शायद यह पत्र आपने बंबई से लिखे मेरे पत्र मिलने के पहले भेजा था। इस पत्र में मैंने फैक्टरी से संबंधित सब बातें विस्तार से लिखी थीं। वह पत्र भेजने के बाद बम्बई में श्री रामनिवासजी से मेरी बात हुई थी। उन्होंने पैसे के संबंध में जो कठिनाइयां हैं, मुझे बताई। जैसाकि मैंने अपने पिछले पत्र में भी लिखा था, मेरे विचार

१. अंग्रेजी से अनूदित।

से चीनी के स्टाक, पर बैंक से कर्ज लेना अधिक अच्छा होगा। हिंदुस्तान शुगर मिल्स, गोला गोकरननाथ के लिए भी हम ऐसा ही करने की सोच रहे हैं। जहांतक बैंक से कर्ज लेने का सवाल है, श्री हरिजी या रामनिवासजी या मेरे लिए वैसा प्रबंध करवाने में कोई कठिनाई नहीं होगी।

जहां प्राइवेट तौर पर कर्ज लेने का प्रश्न है, बंबई के व्यापारी सिक्यूरिटी या स्थायी संपत्ति पर पैसा देने में कुछ झिझकते हैं, अगर सिक्यूरिटी बहुत अधिक हो, या ब्याज की दर ऊंची हो या जोखिम कम हो तो बात दूसरी है।

जहांतक फैक्टरी का सवाल है, मुझे उसके शेयर, डिबेंचर आदि का पूरा ब्योरा नहीं मालूम है। यदि आप श्री हरिजी को लिख दें कि वह सिक्यूरिटी, ब्याज की दर आदि का विस्तृत ब्यौरा मुझे दे दें तो अपने मित्रों से इस संबंध में बात करने में मुझे सहूलियत होगी। साथ ही वे इसकी जानकारी भी मुझे दे दें कि मिल की सिक्यूरिटी के अलावा निजी सिक्यूरिटी भी दी जा सकेगी या नहीं। श्री हरिजी मुझसे मिलें, उसके पहले ही यदि ऊपर लिखी जानकारी मुझे मिल जाय तो अच्छा रहेगा।

यह जानकर खुशी हुई कि आपकी तबीयत अब पहले से अच्छी है। मेरे कान का इलाज अभी जारी है। मैं २० मार्च तक वर्धा में ही हूं। उसके बाद किसी पहाड़ी स्थान पर जाने का विचार है।

आपका,
जमनालाल बजाज

: १८९ :

जयपुर,
१५-९-३९

प्रिय श्री सर शादीलालजी,

आपका ता० ५-९-३९ का पत्र पाकर खुशी हुई। अभी जो प्रश्न हमारे सामने उपस्थित है, उस बारे में यहां ऊपर से कुछ सूचना आ सके तो

ही हमारा काम आसानी से हो सकता है। क्या आप इस दिशा में कुछ प्रयत्न कर सकेंगे ?[१]

आशा है, आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा। मैं आज सीकर जा रहा हूं। ता० २८ तक जयपुर लौटूंगा। श्री महाराजा साहब एक सप्ताह के लिए काश्मीर गये हैं।

जमनालाल बजाज के वन्देमातरम्

सर शादीलाल की ओर से—

: १९० :

नई दिल्ली,
२७-९-३९

श्री जमनालालजी,

पत्र आपका २३-९-३९ का मिला।

आपसे मिलने की मुझे बहुत इच्छा है, आशा है, आप जल्दी मिलेंगे। आपने जयपुर की प्रजा के भले के लिए जो कार्य किया है, उसके लिए मुबारकबाद है।

आशा है, महाराजा के जो मंत्री हैं वह प्रजा की भलाई का काम करेंगे और उनको राजनैतिक अधिकार देंगे। अब बहुत अच्छा समय है। इसका पूरा फायदा उठाना चाहिए। फिर ऐसा समय नहीं मिलेगा। मंत्री प्रजा से मिलनेवाला हो, उनकी भाषा बोल सकता हो, उनकी आशाएं पूरी कर सकता हो, उसके राजनैतिक विचार अच्छे हों और उसपर प्रजा का पूरा भरोसा हो।[२]

आपका शुभचिंतक,
शादीलाल

---

१. जयपुर रियासत के प्रधान-मंत्रित्व के संबंध में। जमनालालजी का प्रयत्न था कि वहां हिन्दुस्तानी प्रधान मंत्री हो।

२. अंग्रेजी से अनूदित।

श्री शाट ताराचंद बेचरदास की ओर से—

: १९१ :

यवतमाल,
१५-२-३७

श्रीमान सेठ साहब,

जमनालालजी बजाज को वंदेमातरम्! आपका तार मिला। बहुत सन्तोष हुआ। आपने हमारे-जैसे का ख्याल किया, यह सोचकर मन में बहुत पूज्य भाव पैदा हुआ। देशभक्त ब्रिजलालजी कल ही यहाँ पधारे थे। आप लोगों को हमारे लिए कुछ तकलीफ करने की जरूरत नहीं है। देश को छोड़कर हम अपना दिल किधर भी नहीं झुका सकते। इस बात की खातरजमा रखना। हमारे दिल में कांग्रेस के सिवाय किसीका भी असर नहीं पड़ सकता। सेठ तापड़ियाजी का मत कांग्रेस का ही मत है, यह हमारी पूर्ण भावना है। आपके हार्दिकतापूर्ण कार्य के लिए हम हमेशा धन्यवाद देते रहेंगे।

भवदीय,
ताराचन्द वेचरदास का वंदेमातरम्

श्री ओ० कान्दास्वामी शेट्टी की ओर से—

: १९२ :

मद्रास,
७-१-३६

प्रिय जमनालालजी,

मैं सकुशल यहां पहुंचा। वहां आपके व परिवार के अन्य सदस्यों के आतिथ्य का जो आनन्द मुझे प्राप्त हुआ, उसके लिए हार्दिक धन्यवाद!

आप सब लोगों के बीच रहकर मझे वहुत आत्मीयता व प्रसन्नता का अनुभव हुआ। आपके युवक कर्मचारियों ने मेरी सुविधा-संबंधी आपकी प्रत्येक इच्छा को पूरी तरह निभाया।

आपके घर में सामाजिक सुधार व राष्ट्रीयता की भावना सर्वोपरि है, इसका दर्शन मुझे हुआ। स्वयं अपनी आंखों से यह देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई कि आप महात्माजी के विचारों के अनुसार कार्य कर रहे हैं।

मैंने अपने एक मित्र से आज सुबह ही एक शिक्षित महिला के विषय में बात की, जो आपकी पुत्री को अंग्रेजी और संगीत, खासकर वीणा सिखा सके। जब उचित महिला मिल जायगी तो आपको सूचित करूंगा।

इस पत्र के साथ अपनी पत्नी का, जिसको गुजरे तीन वर्ष हो चुके हैं, एक संक्षिप्त 'स्केच' भेज रहा हूं। आशा है, आपकी पुत्री व परिवार के अन्य लोगों को यह पसंद आएगा।[1]

शुभ कामनाओं सहित—

आपका,
ओ० कान्दास्वामी शेट्टी

पंडित सकलानंद शर्मा की ओर से—

: ११३ :

कलकत्ता,
१४-३-२६

श्रीमान मान्यवर प्रिय सेठजी,

असहयोग आन्दोलन के प्रारंभ से ही मैं आपके भव्य नाम तथा कर्त्तव्य-परायणता को सुनता आ रहा हूं। अनेक बार इच्छा हुई कि आपकी सेवा

---

१. अंग्रेज़ी से अनूदित।

में पत्र भेजकर आनंद अनुभव करूं। पर आजकल करते-करते तीन-चार वर्ष व्यतीत होने को हैं। मैं आपकी सेवाओं, कर्त्तव्य-परायणता, देशभक्ति की भावना एवं उदार दानशीलता के लिए आपको धन्यवाद दिये विना नहीं रह सकता, विशेषतः इस अवसर पर, जिसने मुझे वड़े उत्साह के साथ इस समय शीघ्र ही पत्र लिख देने के लिए प्रेरित किया है।

आज मुझे इस पत्र के द्वारा केवल यही व्यक्त करना है कि जो आपकी श्रीकन्या का शुभ विवाह हुआ है, एक दिन वह सनातन धर्म के विधान की प्रतिष्ठा का अंशतः पूर्व रूप सिद्ध हुए विना न रहेगा। और मुझे—एक तुच्छ सनातन—सत्‌धर्म के कट्टर उपासक को इससे वड़ा ही हर्ष हो रहा है। देश के वारे में मुझे आपसे वहुत भारी आशा है। मुझे दुःख है कि हम पिछड़ते जा रहे हैं। वंदर घुड़की के सिवा हममें कुछ भी सार नहीं रह गया है।

समय पर स्वराज्य पार्टी ने हमें या अपनेको वहुत भारी धोखा दिया है। अव भी समय है कि उन्हें वाहर-के-वाहर ही रोक देने लायक परिस्थिति उत्पन्न की जाय। देश की विजय के लिए एकमात्र मूलमंत्र मेरी समझ में असहयोग के सिवा दूसरा नहीं है। अव समय आ गया है कि उसकी उपासना या उसको सत्याग्रह के रूप में वदलने के लिए तपोमय जीवन की भगवान से एकमात्र भिक्षा मांगकर अग्रसर होने में हिचकिचाहट न हो। यदि हम इसी प्रकार हिचकते रहेंगे तो निःसंदेह हमारा किया कराया चौपट हो जायगा और हमें निराशा के दुर्गम दलदल में बेतरह फंस जाना पड़ेगा।

आप जैसे महान पुरुषों की कुशलता की भूखी मां अपने वच्चों की भूख दूर करने के लिए वहुत ही करुण रुदन कर रही है।

भवदीय,
सकलानन्द शर्मा

श्री सरयूप्रसाद के नाम—

: १९४ :

वर्धा,
२३-९-४१

प्रिय श्री सरयूप्रसादजी,

आपका विना ता० का पोस्टकार्ड मिला। पूज्य माताजी के संबंध में लिखा, सो मालूम हुआ। पूज्य वापूजी ने तो अभी जेल जाने की इजाजत नहीं दी है और गो-सेवा के काम में लगने को कहा है। उस कार्य का विचार करने के लिए २८ से ३० तक इस काम में दिलचस्पी लेनेवाले कुछ मित्रों को वुला रहा हूं। यदि आप भी आ सकें तो अच्छा हो।

इस कार्य की कल्पना देनेवाला टाइप किया हुआ पत्र इस पत्र के साथ मैं भेज रहा हूं। यदि आपको इस काम में रस हो और आप इस काम को करना चाहें तो अच्छा ही होगा। इस कार्य के निमित्त पूज्य वापूजी का और माताजी का भी संवंध वढ़ेगा।

जमनालाल वजाज के वंदेमातरम्

श्री श्रीपाद दामोदर सातवलेकर की ओर से—

: १९५ :

औंध,
२४-११-३८

श्रीमानजी सादर प्रणाम !

आपको श्री स्वामी भारतानन्दजी ने पूना से एक सप्ताह पूर्व पत्र लिखा था और निवेदन किया था कि औंध रियासत के महाराजा साहेव के राजपुत्र श्रीमंत अप्पासाहेव पंत (वैरिस्टर) श्री महात्माजी के साथ विचार करने

के लिए वर्धा आ रहे हैं। परन्तु उस समय वह नहीं आ सके। अब ता० २७-११-३८ रविवार के दिन सवेरे ७ वजे वर्धा पहुंच रहे हैं। उनके साथ उनके सेक्रेटरी और मैं रहूंगा।

श्री राजपुत्रजी को ग्रामोद्योग और स्वावलंबी शिक्षा का कार्य स्वयं देखना है और वह कार्य औंध रियासत में शुरू करना है। इसलिए मगनवाड़ी में ही हो सके तो हम सबके रहने आदि का प्रबंध करने को लिखा है। वहां कैसा प्रबंध होगा, यह मुझे पता नहीं। परन्तु वहां रहने से वहां का कार्य हम पूर्णता के साथ देख सकेंगे, इसलिए वर्धा में रहने की अपेक्षा मगनवाड़ी में रहना अच्छा है, ऐसा सोचा है।

श्री स्वामी भारतानन्दजी आपके पास आयें तो उनसे कहिएगा कि हम वर्धा स्टेशन पर २७ के सवेरे ७ वजे पहुंच रहे हैं।

भवदीय,
श्रीपाद दा० सातवलेकर

श्री पदमपत सिंघानिया के नाम—

: १९६ :

कानपुर,
२८-६-३७

प्रिय भाई पदमपतजी,

कल आपसे बात करके बहुत सुख मिला। आपने हिंदी-प्रचार के लिए पांच वर्ष तक १५००० रुपये सालाना सहायता देने का निश्चय किया, इसके लिए मैं आपका आभारी हूं। आपकी इच्छानुसार यह रुपया जहां तक हो सकेगा, अहिंदी प्रान्तों में ही खर्च किया जायगा। रुपया मेरी देख-रेख में व्यय होगा।

आप इस वर्ष का चेक मंत्री,हिंदी प्रचार समिति, वर्धा या बच्छराज जमनालाल-दूकान, वर्धा को भेजने की कृपा करें।

आपके प्रेम के लिए धन्यवाद !

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: १९७ :

वर्धा,
१०-९-३८

प्रिय पदमपतजी,

आपको इसके पूर्व भी पत्र लिखे गये थे व तार भी भेजे गये थे। सिर्फ आखिरी तार के उत्तर में आपका तार परसों मिला। आज आपका पत्र भी मिला। आप एक सफल व्यापारी हैं। आपकी ओर से पत्रोत्तर में इतनी देर होती देखकर आश्चर्य होना स्वाभाविक है।

जैसाकि मैंने पहले भी लिखा था, आपके रुपये केवल अहिंदी प्रान्तों में हिंदी के प्रचार के लिए ही खर्च किये जा रहे हैं । पिछले वर्ष, जैसाकि आपको ता० ३१-४-३८ के पत्र में लिखा गया था, महाराष्ट्र, सिन्ध, आसाम और उड़ीसा में विशेष रूप से कार्य किया गया। आपके रुपयों से जो कार्य अहिंदी प्रांतों में हो रहा है उसका थोड़े में विवरण तथा पिछले वर्ष का विवरण साथ में है। आपको याद होगा कि हिंदी के वारे में जब आपसे बात हुई थी तब मैंने तो आपसे इस कार्य में प्रत्यक्ष हिस्सा लेकर मेरा यह कार्य सम्हालकर मेरा बोझा हलका करने की प्रार्थना की थी। मुझे केवल इससे संतोष नहीं कि आप रुपया दे दें। आप थोड़ा समय भी इस कार्य में दे सकेंगे तो अच्छा रहेगा।

आप कई बार बंबई जाते हैं। कभी आते या जाते वक्त इस ओर होकर जाने का विचार करें। यहां जो कार्य किया जा रहा है, उसे देखें तो मुझे खुशी होगी।

हिंदी प्रचार समिति द्वारा राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने की दृष्टि से राष्ट्रभाषा के प्रचार का भरसक प्रयत्न किया जा रहा है। आपकी सहा-

थता से इस कार्य में बहुत मदद मिली है और आप विश्वास रखें कि आपकी रकम का पूरा सदुपयोग हो रहा है। आशा है, आप शीघ्र ही इस वर्ष की सहायता भेजने की कृपा करेंगे।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: १९८ :

वर्धा,
१०-१०-३८

प्रिय श्री पदमपतजी,

आपका पत्र मुझे प्रवास में मिला था। शिमला, दिल्ली तथा बंबई की ओर अधिक समय लग गया, जिसकी वजह से जवाब देने में देरी हो गई।

यहां के कार्यालय से आपको गत वर्ष का हिसाब व आगामी वर्ष का बजट भेज दिया गया है। पिछला हिसाब भी आडिट होने पर शीघ्र ही भेज दिया जायगा। हिसाब देखने पर आपकी दृष्टि से जो कुछ सूचनाएं आप लिखना चाहें, लिखकर भेज दीजिएगा, ताकि वे कार्यालय के कार्य में सहायक हो सकें और उनपर आयंदा ध्यान दिया जा सके।

मेरी आपके साथ राष्ट्रीय प्रचार के बारे में जो बातें हुई थीं, उसमें अहिंदी प्रान्तों में राष्ट्र-भाषा-प्रचार की कार्यवाही का उल्लेख था, यह ठीक है। अहिंदी प्रांतों में मद्रास, महाराष्ट्र, सिन्ध, आसाम, उत्कल, बंगाल आदि प्रांतों का समावेश होता है। मद्रास प्रांत में करीब २० वर्षों से हिन्दी का प्रचार-कार्य जारी है। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा ने गत बीस वर्ष में आंध्र, तमिलनाड, कर्नाटक, केरल, इन चार प्रांतों में राष्ट्र-भाषा का प्रचार जोरों से किया है। गत इंदौर अधिवेशन के बाद वहां के कार्य के लिए इंदौर से भी आर्थिक सहायता मिली है। आपको याद होगा कि मैं स्वयं इस काम के लिए इंदौर गया था। अब कांग्रेस सरकार की सहायता के कारण वहां के काम में और भी ताकत पैदा हो गई है और वहां की संस्थाओं की आर्थिक स्थिति भी ऐसी हो गई है कि अब वहां के कार्य

के लिए यहां से सहायता भेजने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। बंबई में जो काम हो रहा है वह भी और अच्छी तरह संगठित किया जा रहा है।

महाराष्ट्र में एक साल का कार्य करने के बाद वहां की समिति ने अमलनेर के श्री प्रताप सेठजी से छः हजार की सहायता प्राप्त की है। महाराष्ट्र में प्रचारक नियुक्त किये जा रहे हैं। हिन्दी-मराठी-कोश बनाने का कार्य भी योग्य व्यक्तियों की सहायता से पूना में शुरू हुआ है। समिति के प्रयत्न से बंबई सरकार ने भी राष्ट्रभाषा को शिक्षा-विभाग में स्थान दिया है।

सिंध में राष्ट्रभाषा का प्रचार-कार्य कठिन-सा है। यहां की अधिकांश जनता ग्रामीण मुसलमानों की है, जिन्हें अभी शिक्षा की कोई जरूरत महसूस नहीं होती। शहरों में जो लोग पढ़ते हैं, उनके दिलों में राष्ट्रभाषा के प्रति प्रेम उत्पन्न करना है। वहां का कार्य शुरू होगा, जिसमें समय है। आरंभ में अपनी समिति द्वारा मदद करनी होगी। बाद में, आशा है, श्री मोहता भी मदद करेंगे।

आसाम में जो संगठन इस साल किया गया है उसका भार श्री गोपीनाथ बारदोलाईजी पर रखा गया है। उनके प्रधान मंत्री चुने जाने के कारण अब शायद किसी और कार्यकर्त्ता को यह जिम्मेदारी सौंपनी होगी। आसाम में पैसा इकट्ठा करना मुश्किल है। परन्तु मैं स्वयं किसी समय आसाम में घूमकर वहां के आसामी एवं राजस्थानी धनिकों से द्रव्य संग्रह करने की उम्मीद रखता हूं। आज तक आसाम में पूज्य गांधीजी द्वारा काफी द्रव्य खर्च हुआ है। यदि आवश्यकता हुई तो आपके पैसे भी यहां खर्च किये जा सकेंगे।

उत्कल का बहुत-सा भार अबतक सर्वश्री भागीरथजी कनोडिया, बसंतलालजी मुरारका और सीतारामजी सेकसरिया ने उठाया है और आगे भी ये लोग उठायेंगे। इस माह के अंत तक श्री काकासाहेब कालेलकर, बसंतलालजी मुरारका और श्रीमन्नारायणजी अग्रवाल उत्कल का दौरा करेंगे। हमारी तरफ से दस हजार रुपये इकट्ठा होने पर यहां की सरकार भी दस हजार रुपये देनेवाली है। इस तरह से स्थान-स्थान पर कार्य हो

रहा है। राष्ट्रभाषा-प्रचार में बाधा डालनेवाले अंग्रेजी के पक्षपातियों से मुकावला करना पड़ता है। इसपर देश में संकीर्ण प्रांतीयता पैदा होने से वहां भी नया विघ्न उपस्थित हुआ है। हमारा प्रयत्न, जहांतक हो सके, राष्ट्रभाषा-प्रचार का कार्य स्थानीय लोगों के सिर पर ही डालने का है।

बंगाल में हिंदी का काफी विरोध है। तो भी श्री सुभाषबाबू की सहायता से और शांतिनिकेतन की अनुकूलता से लाभ उठाकर वहांपर भी प्रचार प्रारंभ करना है।

वर्धा में जो हिंदी प्रचारक विद्यालय है, उसका हेतु भी यही है कि प्रांत-प्रांत से कार्यकर्त्ता बुलाये जायं व उन्हें राष्ट्रभाषा-प्रचार-कार्य के योग्य बनाकर अपने अपने प्रांत में भेज दिया जाय।

आप यह न समझें कि इस कार्य में किसीका उत्तरदायित्व नहीं है। श्री राजेंद्रबाबू प्रचार समिति के अध्यक्ष हैं। वह इसमें दिलचस्पी लेते ही हैं। अबतक उपाध्यक्ष व कोषाध्यक्ष के काम की जिम्मेदारी मुझपर ही थी, परन्तु अन्य सार्वजनिक जिम्मेदारियों के कारण मैं इस कार्य में जितना समय देना चाहता था उतना नहीं दे पाता था, जिसका मुझे सदैव ध्यान रहता था। फलतः मेरी ही आग्रहपूर्ण सूचना के कारण उपाध्यक्ष व कोषाध्यक्ष के कार्यों की जिम्मेदारी क्रमशः आचार्य श्री काकासाहेब कालेलकर व श्रीकृष्णदास-जी जाजू ने स्वीकार की है। अब मेरी इस काम की चिन्ता भी कम हो गई है और मुझे संतोष भी है। आचार्य कालेलकरजी का परिचय तो आपको होगा ही। गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद के वह आचार्य थे। इस समय वह बहुत ही लगन व परिश्रम से राष्ट्रभाषा की सेवा कर रहे हैं। काकासाहब की तरह समय व शक्ति देनेवाला इस कार्य के लिए शायद ही कोई हो। श्री जाजूजी के बारे में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं समझता। १९२० से उन्होंने अपनी वकालत, जो खूब अच्छी तरह चलती थी, छोड़ दी है और सारा समय रचनात्मक कार्य में दिया है। अ० भा० ग्राम उद्योग संघ के वह अध्यक्ष रहे हैं। हिसाब-किताब के काम उनके हाथों में सुरक्षित हैं।

समिति के मंत्री श्रीमन्नारायणजी अग्रवाल होनहार उत्साही युवक हैं। थोड़े ही समय में इन्होंने अपने वुजुर्ग कार्यकर्त्ताओं का विश्वास संपादन कर लिया है।

समिति के सारे कार्य पर पूज्य गांधीजी की जाग्रत दृष्टि सदैव रहती ही है, यह अलग से लिखने की आवश्यकता नहीं समझता।

आपने अपने पत्र में ग्रंथ-निर्माण का जिक्र किया है। हमारी राष्ट्रभाषा कम-से-कम आज की अंग्रेजी का स्थान ग्रहण कर सके, यह हमारे वर्तमान प्रचार-कार्य का उद्देश्य है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए जिस तरह का व जितना साहित्य आवश्यक है, निर्माण हो रहा है। आपने जिस साहित्य-निर्माण की ओर ध्यान खींचा है, वह न तो हमारे उद्देश्यों में है और न हमने उस दिशा में प्रयत्न करना ही आवश्यक समझा है। जिस तरह लोगों ने अपनी मातृभाषा को छोड़कर अंग्रेजी को अपनाया और अंग्रेजी की सेवा भी शुरू की, उसी तरह लोग अपनी प्रांतीय भाषाओं को त्यागकर राष्ट्र-भाषा को अपनायें, यह तो हम विल्कुल नहीं चाहते। राष्ट्रभाषा का काम अहिंदी प्रांतों में प्रांतीय भाषाओं को मददगार बनाने का है। लोग प्रथम अपनी ही मातृभाषा में ग्रंथ-निर्माण करें। वाद में उसका अनुवाद राष्ट्र-भाषा में हो।

ऊपर मैंने प्रचार-कार्य का कुछ परिचय देने का प्रयत्न किया है। अधिक अच्छा तो यह होता है कि यहां का व दक्षिण भारत का कार्य आप स्वयं कभी देख पाते। मेरी तो हमेशा यही इच्छा रही है कि प्रचार-कार्य की जिम्मे-वारी आप ही उठा लें। धन की सहायता के वदले आप समिति को अपना समय दे सकें, जिससे संस्था को आपकी व्यवसाय-वुद्धि व अनुभव का लाभ हासिल हो सके। श्री घनश्यामदासजी विड़ला ने जिस प्रकार हरिजन सेवक संघ का कार्य-भार सम्भाल लिया है, आप भी इस प्रचार-समिति का कार्य अपने ऊपर उठाकर हम लोगों की चिन्ता कम कर दें।

मैं आशा करता हूं कि अब आप इस वर्ष की सहायता के रु० १५०००) भिजवाने का प्रवंध करा देंगे। प्रचार-समिति के लिए आपकी ओर से

जो सूचनाएं आती रहेंगी उनपर यथाशक्ति ध्यान देने का प्रयत्न किया जायगा, यह मैंने पत्र के प्रारंभ में ही लिख दिया है। बाकी विशेष शक्ति तो उन कार्यकर्त्ताओं की कठिनाइयों को सुलझाने में लगानी पड़ती है, जो प्रत्यक्ष कार्यक्षेत्र में चौबीस घंटे जुटे हुए हैं। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का वर्तमान कार्यक्षेत्र तथा उसमें उपस्थित होनेवाली कठिनाइयों से आपको अच्छी तरह वाकिफ करने की दृष्टि से श्री काकासाहब व श्रीमन्नारायणजी आपसे रुबरू मिलना चाहते हैं। इसी गर्ज से कल मैंने एक तार भी आपके नाम किया है। उसके उत्तर की प्रतीक्षा है।

मुझे तो आशा ही नहीं विश्वास है कि श्री काकासाहब व श्रीमन्नारायण-जी से वार्त्तालाप करने पर आपका पूर्ण समाधान हो जायगा। परन्तु इतने पर भी यदि आपको समिति के कार्य से सन्तोष न हो सका तो उस हालत में मैं आपको व्यक्तिगत रूप से यही सलाह दूंगा कि राष्ट्रभाषा-प्रचार के हेतु, आपने संकल्प की हुई सहायता किसी ऐसी संस्था को दीजिएगा, जिसकी रीति, नीति व कार्य से आपको पूरी तरह संतोष हो सके। आशा है, आप निःसंकोच होकर अपना निर्णय सूचित करेंगे, जिससे समिति भी किसी तरह की दुविधा में न रहने पाये।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

पुनश्च :

आपका तार अभी मिला। धन्यवाद। काकासाहब और श्रीमन्ना-रायण आपसे मिलने आ रहे हैं।

श्री पदमपत सिंघानिया की ओर से—

: १९९ :

कानपुर,
११-१-४०

प्रिय भाई बजाजजी,

आपका २८ दिसंबर का पत्र यथासमय मिल गया था। मैं बाहर चला गया था, अन्यथा उत्तर शीघ्र भेज देता। आपके स्वास्थ्य का समाचार पढ़कर संतोष होता है कि अब आप अच्छे हो रहे हैं, किन्तु बड़ी सावधानी से चिकित्सा कीजिये और कृपया पूर्ण विश्राम कीजिये।

जयपुर का समाचार तो पत्रों में पढ़ता ही रहता हूं। मुझे तो ऐसा भय लग रहा है कि जिस परिश्रम से आप लोगों ने एक आंधी शांत की थी, वह पुनः खड़ी न हो जाय। देखिये ईश्वर क्या करता है।

श्री विद्यादत्त राय के बारे में आपका और राजेन्द्रबाबू का पत्र मिला। मुझे दुःख है कि यह पत्र उस समय मिला, जबकि कार्य हो चुका था। हमने डाक्टर के चुनाव के लिए एक कमेटी बना दी थी और निर्वाचन का अंतिम अधिकार उसे दे दिया था। फलतः नियुक्त होने के पश्चात् आपका पत्र मिला, अन्यथा हम डा० राय के बारे में पहले विचार कर लेते। आशा है, आप इस लाचारी के बारे में क्षमा करेंगे।

राजेन्द्रबाबू का पत्र आपके कथानुसार वापस कर रहा हूं।

आपका,
पदमपत

श्री गोविंदराम सेकसरिया की ओर से—

: २०० :

बम्बई,
१४-१-४२

सेठ श्री जमनालालजी से मेरा जयगोपाल वंचना।

आपका पत्र मिला। पढ़कर वहुत प्रसन्नता हुई। २४ ता० की सभा में उपस्थित होने के लिए लिखा सो ठीक है। मेरा बहुत दिनों से आपके पास आने का विचार था, पर कई कारण वश आ नहीं सका। आना हो सका तो २४ तारीख को आने का विचार है।

कालेज की नई इमारत वनाने का विचार तो मेरा शुरू से ही है, यह आप जानते ही हैं। इस समय इमारत बनाने में खर्चा अधिक लगेगा, आपका यह लिखना वहुत ठीक है। पुरानी इमारत जो कालेज के लिए मिलती है, वह सर्वथा उपयुक्त है या नहीं, यह तो मौका पड़ने पर ही कहा जा सकता है।

आपका प्रेम मुझे सदैव याद आता है। प्रेमभाव है, उससे ज्यादा रखें। मेरे लायक सेवा लिखते रहें।

आपका स्नेही,
गोविंदराम सेकसरिया

श्री गोविंदराम सेकसरिया के नाम—

: २०१ :

वर्धा,
१७-१-४२

प्रिय श्री गोविंदरामजी,

आखिर आपका आना नहीं हो सका। दो बार कल व आज आपसे

कोशिश करने पर भी फोन की लाईन नहीं मिल सकी। कल कालेज की मीटिंग में तो सब ट्रस्टियों की राय से वर्तमान मारवाड़ी शिक्षा-मण्डल की इमारत लेने का निश्चय किया। ठहराव में आपकी व शिक्षा-मण्डल की स्वीकृति चाहिए। यहां की सारी स्थिति श्रीनिवासजी बगड़का व श्री शुभकरणजी आपसे कहेंगे ही। अब इस प्रश्न का जल्दी ही समाधान हो जाना चाहिए। कल भाई घनश्यामदासजी बिड़ला भी आ रहे हैं। पूज्य गांधीजी यहांपर हैं ही। आप, अगर ज्यादा समय न हो तो, एक रोज के लिए ही, कल रवाना होकर आ जायं, ताकि आप मौका देख लें और निश्चय हो जाय। आप न आ सकें या न आना चाहें तो अपनी स्वीकृति भेज दें, ताकि आगे की व्यवस्था करने में सुविधा हो।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

श्री सीताराम सेकसरिया की ओर से—

: २०२ :

कलकत्ता,
७-१-३०

पूज्यवर,

मैं कल यहां आ पहुंचा। पन्ना को जालंधर छोड़ आया हूं। मुझको जालंधर का विद्यालय एक अच्छे विद्यालयों में जंचा है। लाला देवराजजी का प्रेम बालिकाओं के प्रति अतुलनीय है। महावीरप्रसादजी, बसंतलालजी आदि भी जालंधर गये थे। यहां 'चांद'[1] का आंदोलन चल

---

१. श्री रामरख सिंह सहगल इलाहाबाद से 'चांद' मासिक पत्र निकालते थे। उन्होंने 'चांद' का 'मारवाड़ी अंक' निकाला था। उसे लेकर कलकत्ते के मारवाड़ी समाज में बड़ा आंदोलन हुआ और कलकत्ते के एक नवयुवक ने श्री सहगल को कलकत्ते की उनकी दुकान पर जूतों से पीटा था।

रहा है। 'चांद' के संपादक के साथ जो बर्ताव किया गया उसका तो आपको पता होगा। जिस नवयुवक ने उसके जूते लगाये उसका चित्र 'स्वतंत्र' में छपा था। यहां के अधिकांश लोग उसके कार्य की प्रशंसा कर रहे हैं और यह कार्य भी कई मित्रों की सलाह से हुआ था।

पूज्य जानकीदेवीजी को प्रणाम। कमला आदि बहनों को राम-राम। कमला प्रसन्न होंगी। लाहौर में नर्वदा व मदनलाल से मैं नहीं मिल सका था।

प्रभुदयालजी कौंसिल से इस्तीफा दे रहे हैं। बंगाल के लोग भी त्यागपत्र देंगे। पद्मराजजी उनकी जगह हिन्दू-हित के नाम पर दूसरे लोगों को खड़ा करने का विचार कर रहे हैं। घनश्यामदासजी की इस विषय में क्या नीति होगी, यह पता नहीं है। पर हिन्दू-हित के नाम पर जानेवाले का विरोध करने का विचार है, याने वोटरों को समझाना है कि वोट न दें। आपकी क्या सम्मति है? यदि घनश्यामदासजी पद्मराजजी के समर्थक न हों, तव तो बहुत ठीक रहे। हों तो भी जोरों से विरोध तो होगा ही। यदि आप ठीक समझें तो घनश्यामदासजी को कुछ लिखें।

विनीत,
सीताराम

: २०३ :

कलकत्ता,
२६-११-३१

पूज्यवर,

आपका ता० ९-११-३१ का पत्र यथा-समय मिल गया था। बम्बई से आने के वाद आप आराम करेंगे ऐसी, आशा थी। पर इधर अछूतों के लिए जो काम हुआ उससे तो मालूम होता है कि उस काम में आपको काफी परिश्रम करना पड़ा होगा। पत्रों में यह भी पढ़ा कि आपका स्वास्थ्य ऐसा है कि डाक्टरों ने विश्राम करने को कहा है। इससे चिंता है। अब

आप इस बार जरूर ही कुछ दिन पूर्ण विश्राम करें। आगे तो ज्यादा परिश्रम करने का समय आ ही रहा है।

यहां श्री जवाहरलालजी आये थे। उस समय अछूतों की एक सभा की गई थी। वह बहुत बड़ी सभा हुई और अछूतों ने उसमें बहुत बड़ी संख्या में भाग लिया था। आप जाते समय बंगाल के कार्यकर्त्ताओं को सहायता करने के लिए कह गये थे। जिन लोगों को शीघ्र सहायता देनी है, उनके नाम भी हम लोगों के सामने आये थे। धीरेन्द्रदास गुप्ता सिलहट को एक सौ रुपये देने के लिए आप कह गये हैं, सो वह रुपये मांगते हैं। यहां अभी विशेष रुपये इकट्ठे नहीं होते दिखाई देते। करीब एक हजार का जुगाड़ हुआ है, जिसमें दो सौ रुपया महीना कार्यकर्त्ताओं को देना शुरू कर दिया है। पचास रुपये प्रफुल्ल सेन को आरामबाग के लिए। पचास विमलाबाबू को ढाका में डा० प्रफुल्ल घोष के मारफत। पचीस सुरेनबाबू को। पचीस वसंतोबाबू को सिदनापुर के प्रमथोनाथ बनर्जी के मारफत। पचास रुपया विद्या आश्रम सिलहट मार्फत धीरेंद्रदास गुप्ता। इस प्रकार सहायता शुरू की है। यह आपकी जानकारी के लिए लिखा है। मित्रों से आपकी जो बातचीत हुई उससे यहां का वातावरण कुछ ठीक हुआ है। बेचारे सतीश सेन तकलीफ से उसे चला रहे हैं। काम थोड़ा अधिक हो रहा है। श्री महाबीरजी तीन-चार दिनों से काफी समय तक बाहर रहने के इरादे से यहां से गये हैं। भंडार का काम ठीक चल रहा है।

विनीत,

सीताराम सेकसरिया

: २०४ :

कलकत्ता,

१०-४-३३

पूज्यवर,

कल आपको एक पत्र लिखा था। आशा है, वह मिला होगा। इस बार कांग्रेस[1] के अवसर पर सात-आठ दिन डा० मुहम्मद आलम साहब के साथ जेल में रहने का मौका मिला और उनसे सांप्रदायिकता-विरोधी कार्यक्रम के संबंध में बातचीत हुई। उनका काम मेरे ख्याल में ठीक है तथा ऐसे आंदोलन की आवश्यकता भी प्रतीत होती है। पर किसी भी आंदोलन को चलाने के लिए सबसे पहले रुपयों की आवश्यकता होती है। इसलिए आलम साहब ने कहा कि कलकत्ते से कुछ रुपयों का बंदोवस्त कराके दो। आजकल रुपये देनेवाले लोग कम हो गये हैं। दूसरे, स्थानीय आंदोलन के लिए रुपये बराबर इकट्ठे करने पड़ रहे हैं तथा कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर भी काफ़ी रुपये खर्च हो गये। और भी कामों में रुपये खर्च हो रहे हैं। हरिजन-आंदोलन भी चल रहा है। उसमें भी रुपये खर्च हो रहे हैं। हरिजन-आंदोलन का पूज्य बापू संचालन कर रहे हैं तथा आपका भी वह प्यारा काम रहा है। इस कारण हम लोग उसमें सब प्रकार से सक्रिय काम कर रहे हैं। ऐसी हालत में आलम साहब को क्या जवाब दें? उनका काम भी ठीक जंचता है और रुपये न मिलने के अभाव में काम आगे बढ़ नहीं रहा है। इसलिए वह आपको पत्र लिख रहे हैं। यदि आप उचित समझें तो यहां के कुछ लोगों को लिखें तो आपके लिखने पर

---

१. १९३२ के शुरू में ब्रिटिश सरकार द्वार कांग्रेस गैरकानूनी संस्था घोषित कर दी गई थी। कानून तोड़कर १९३३ में कलकत्ते में उसका विशेष अधिवेशन श्रीमती नेली सेनगुप्ता की अध्यक्षता में हुआ। उसमें भाग लेने के लिए पं० मदनमोहन मालवीय आदि प्रमुख नेतागण गये थे और वे गिरफ्तार कर लिये गए थे।

शायद कुछ सहायता यहां से हो सके, ऐसी आशा है। आपके लिखने से मुझे उस काम के संबंध में ज्यादा विश्वास हो जायगा। आप यदि उसको समयानुकूल न समझते हों या और किसी प्रकार वर्तमान में अनुपयुक्त समझते हों तब तो मैं इसे छूना ही नहीं चाहता। पर अगर आप ठीक समझें तव कुछ मदद तो जरूर करनी है और उसके लिए कोई रास्ता भी निकालना चाहिए।

विनीत,
सीताराम सेकसरिया

: २०५ :

कलकत्ता,
६-११-४१

पूज्यवर,

सादर प्रणाम !

आशा है, आपका स्वास्थ्य सुधर रहा होगा। अव दो-तीन महीने वर्धा रहने का विचार है, यह जानकर खुशी हुई। आपकी तबीयत के लिए विश्राम की जरूरत है। मैं कुछ दिन आपके पास आकर रहना चाहता हूं। वालिका विद्यालय का आदमी मैंने ले लिया है। इसलिए उसकी परीक्षा होने पर दिसम्वर में आ सकूंगा।

श्री महावीरप्रसादजी जेल से चार-पांच दिन पहले छूटे थे। मैंने सोचा था कि आप उनको राजी कर सकें तो वह आपके गोरक्षा के काम में अच्छा सहयोग दे सकते हैं। उनके अंदर गो-सेवा की भावना खूब है और रही भी है। पर कल गोरखपुर से तार मिला है कि वह भारत रक्षा कानून में पकड़ लिये गए हैं। यह भारत रक्षा कानून भी अजब चीज है। पोद्दारजी के पकड़े जाने से तो हम लोग समझ सकते हैं कि इस कानून का कितना ज्यादा दुरुपयोग हो रहा है। पोद्दारजी तो एक रचनात्मक काम करनेवाले आदमी हैं। उनका राजनैतिक कामों से संबंध बहुत ही कम रहा

है। इस बार तो योंही मौज में सत्याग्रह करके जेल जाने की इच्छा हो गई थी। पोद्दारजी की स्त्री तथा उनकी लड़की शांता उनके इस प्रकार से पकड़े जाने से घबड़ा गई हैं। आप उनको एक पत्र लिखना ठीक समझें तो लिखे तथा पोद्दारजी को छुड़ाने के लिए क्या-कुछ किया जा सकता है, इसपर भी सोचें। श्री घनश्यामदासजी से रामकुमारजी ने आज फोन पर बात की थी। उनको भी पोद्दारजी के इस प्रकार पकड़े जाने पर आश्चर्य हुआ। उनका कहना था कि शायद सभी राजनैतिक बंदी जल्दी छूट जानेवाले हैं, इसलिए पोद्दारजी भी छूट जायंगे। जो हो, आपकी जानकारी के लिए यह सब लिखा है।

गोरक्षा का काम किस तरह हो रहा है तथा क्या करने का विचार है, सो लिखवावें। विशेष कृपा।

विनीत,
सीताराम का प्रणाम

सेठ रणछोड़लाल अमृतलाल की ओर से—

: २०६ :

सांकडीशेरी अहमदाबाद,
१-१-३२

प्रिय भाई श्री जमनालालजी,

आपका पत्र मिला था। उसका उत्तर हिंदी में देने का प्रयत्न करता हूं। भाषा-दोष सुधार लेना।

मैंने आज तक खत नहीं लिखा, इसलिए प्रथम उसकी क्षमा चाहता हूं। इधर आने के बाद दस-बारह दिन तक तो बहुत कम फुर्सत मिली।

मुझे आपकी याद हर रोज़ आती है। आपके साथ छः मास तक रहा। हम दोनों एक दूसरे के बहुत नज़दीक आ गये। मेरे स्वभाव के दोष से मेरा वर्ताव आपके साथ अविवेकी रहा था, जिसके लिए मुझको वहां से वाहर आने के वाद दिल में दुःख होता है और मुझको पछतावा होता है। आप मुझे माफ करेंगे? सचमुच यह लिखते वक्त भी दुःख होता है।

इधर के संग्राम के वारे में थोड़ी-सी वात श्री काकुभाई के पत्र में लिखी है, उससे आप जान लें। एक प्रकार की भीती तो लोगों में आ गई है, और वहुत-से ऐसे लोग हैं, जो आज खूव काम कर रहे हैं। खेड़े में काम अच्छा चलता है। यों शहर में वाहर से खास कुछ दिखाई नहीं देता है। स्वदेशी का काम जोर से चलता है। इधर की स्वदेशी सभा में अहमदावाद का सब परदेशी कपड़ा खरीद लेने का प्रस्ताव मंजूर किया है और पं० जवाहरलाल ने जो पत्र सव मिलों को लिखा था वह भी थोड़े-से फर्क के साथ स्वीकार किया है। यह स्वीकार करने में इधर की करीव ७० मिलें सहमत हैं। अव वंवई में भी ऐसा ही कराने की कोशिश श्री शंकरलाल-भाई करते हैं। मिलों में स्टोर और मशीनरी स्वदेशी या तो नान-ब्रिटिश खरीदने का ठहराव दिया गया है। आज स्वदेशी सभा की मीटिंग है, उसमें एक सिफारिश यह है कि मिलों में से अभारतीय नौकरों को निकाला जाय। स्वदेशी सभा क्या करती है इसका ख्याल देने विचार से ये सव वातें लिखी हैं।

श्री केशव गांधी आज से मिल में अपना प्रयोग करने के लिए आने लगे हैं। मेरे घर पर ही रहने का तय किया है। श्री नारायणदास-भाई के साथ इनका कुछ बनता नहीं दिखता है। आपने जिस तरह से वात की इसी तरह मिल में प्रयोग और एन्जीनियरिंग कोर्स तैयार करने का इन्होंने निश्चय किया है।

आर्थिक विषय की आश्रम की व्यवस्था मेरे आने के पहले की गई है। चर्खा संघ और विद्यापीठ की वात अभी तक हुई नहीं है। श्री शंकरलाल-

भाई के साथ आपने जब बात की है तो अब वह उस विषय में बात करेंगे तब मैं मेरी मदद जरूर दूंगा।

चर्खा संघ का तो काम अभी तक सिर पर कुछ आया नहीं है। ब्रिटिश माल बहिष्कार का काम मैं करूं, ऐसी श्री बैंकर की इच्छा है। मुझे जितना चर्खा का काम प्रिय है उतना ब्रिटिश माल बहिष्कार का नहीं है। तब भी जो कुछ करना होगा, वह किया जायगा। मिल का भी काम मुझे देखना पड़ता है। थोड़े समय में चर्खा संघ का काम मिल जायगा, ऐसी उम्मीद है।

इधर का काम ज्यादा व्यवस्थित करने की कोशिश की जाती है और दिखता है कि सब अच्छी तरह हो जायगा।

मेरी पत्नी की तबीयत बहुत खराब हो गई है। उनका इलाज करना मेरा प्रथम कर्तव्य है। अच्छा होने में ज्यादा समय लग जायगा। इलाज हो रहा है।

चि० रमा आनंद में है। अबकी बार वह आपको हिन्दी में पत्र लिखने की बात करती है।

श्री नरीमानजी खूब आनंद में होंगे। अभी तक नासिक की ही हवा खा रहे होंगे। श्री उसमानभाई भी आनंद में होंगे? चर्खा चलाते हैं? अब खादी पहनने की बात इनको जंची की नहीं?

आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा। आपको मिलने के लिए आने का इरादा है। बंबई दुकान पर लिखकर तारीख जान लूंगा।

आपका प्रेम हर वक्त याद आता है। सब मित्रों को वंदेमातरम्।

रणछोड़लाल का प्रणाम

श्री लालचंद सेठी की ओर से—

: २०७ :

झालरापाटन,
२३-९-३५

प्रियवर भाईसाहब,

आपका अलमोड़ा से ता० १६-९ का स्नेह-पत्र मिला। वृत्त जाना। आप भ्रमण कर विश्रांति के लिए यहां पहुंचे। अतः मेरा निवेदन है कि इतना परिश्रम कर शरीर का ह्रास न कीजिये। जितना सहन हो सके उतना ही करना चाहिए। देश को आप-जैसे योग्य, अनुभवी और सच्चे साधु पुरुषों की बहुत जरूरत है।

मैंने वर्धा आने के विषय में अवश्य कहा था और मेरी प्रवल इच्छा भी है, पर कर्म-संयोग अनुकूल मालूम नहीं होता। मैं और आप पिछली वार जव मिले हैं, तवसे दोनों वरावर भ्रमण कर रहे हैं। अंतर केवल इतना ही है कि आपका भ्रमण देश-सेवा-हित और मेरा स्वार्थ-हित में होता है। अब मुझे उज्जैन रहने की ही जरूरत है। परिस्थितियां ही ऐसी हैं। इसलिए संभावना नहीं लगती कि १३ अक्तूबर तमैंक वर्धा आ सकूंगा। आप आल इंडिया कांग्रेस की मीटिंग से निवटकर कवतक वर्धा आयेंगे। उस समय मैं आ सकूंगा। आशा बड़ी चीज है। उस रोज की ही प्रतीक्षा है। तेज-बाई वगैरा सव आंनद में हैं। कैलास मजे में है, आपको प्रणाम लिखाते हैं।

कभी-कभी पत्र दिया करें। स्नेह है, जैसा वनाये रखें। सेवा लिखें।

स्नेहाधीन,
लालचन्द सेठी

श्री हरीराम के नाम—

: २०८ :

वर्धा.
२-१०-४१

प्रिय श्री हरीरामजी,

आपके पत्र मिले। एक लखनऊ से, दूसरा काशी से। आप दशहरे पर न आ सके, सो जाना। मेरा दीपावली पर यहीं रहने का विचार है, सो उस समय वर्धा आओगे तो मुझे खुशी होगी। 'श्री मां आंनदमयी सेवा सदन,' हरिद्वार की बावत लिखा, सो आपके यहां आने पर समक्ष में वातचीत हो जायगी। डा० पंतजी से इतना जरूर मालूम करके आयें कि इस संस्था को यहां के महिला सेवा मंडल के सुपुर्द कर सकेंगे या नहीं। श्री मां के आशिर्वाद का तार ठीक समय पर मिल गया था, वहुत खुशी हुई।

पूज्य वापूजी ने गो-सेवा का कार्य विजयदशमी से शुरू करा दिया है। मेरी इच्छा आपसे इस काम में मदद लेने की है। मिलने पर सव वातें होंगी। पूज्य मां को भी तो आपको यहां लाना है। आप अपनी कोशिश चालू रखियेगा। मैं कल बंवई, पूना की ओर ५-७ रोज के लिए जा रहा हूं।

जमनालाल वजाज के वन्देमातरम्

: २०९ :

वर्धा,
२४-१-४२

प्रिय भाई हरीरामजी,

आपका २१ -१- ४२ का पत्र मिला। आपकी श्री पंतजी से विशेष बात न हो सकी, लेकिन अच्छा होता कि आपकी उनसे पूरी बात हो जाती। मेरी तो उनसे काफी वात हुई थी। यही राय हुई थी कि इस विषय में जल्दी नहीं करनी चाहिए। काफी सोच-विचार कर कुछ करना होगा।

पूज्य मां मैनपुरी से लखनऊ आयेंगी और वहां से वर्धा आने का उनका विचार होगा ही, सो तार तो आप मुझे कर ही देंगे। साथ में अंदाजन कितने लोग होंगे, वह भी तार में लिख दीजिएगा, जिससे कि उनका स्वतन्त्र प्रबंध करने में सुविधा हो। आप भी उनके साथ आसकें तो अवश्य आजाइयेगा। गो-सेवा-संघ के सम्मेलन में भी उपस्थित हो जाइयेगा और पूज्य मां का कुछ दिनों का सत्संग हो जायगा। अतः आप भी पूज्य मां के साथ अवश्य आ जाइयेगा। पूज्य मां का तथा आपका निमंत्रण-पत्र साथ में है और भी कोई गो प्रेमी हों तो उन्हें आप मेरी ओर से निमंत्रित कर दीजियेगा।

श्री नंदकिशोरजी को यहां से भी एक पत्र दिया है। आशा है, वह सम्मेलन के समय यहांपर आ सकेंगे। उनका पत्र अभी नहीं आया है। पू० मां को प्रणाम कहें। मैं आपके तार की राह देख रहा हूं। मां के वर्धा पहुंचने की तारीख और ट्रेन का निश्चित समय अवश्य लिख दीजियेगा।

जमनालाल बजाज के वन्देमातरम्

श्री आनंद टी० हिंगोरानी की ओर से—

: २१० :

इलाहाबाद

प्रिय काकाजी,

मुझे बहुत दुःख है कि वहां आपसे मिलने का अवसर नहीं मिल पाया। आप इतने अधिक व्यस्त थे कि मैंने आपका अमूल्य समय लेना उचित नहीं समझा। खैर, मुझे इसका काफी समय तक दुःख बना रहेगा।

बापूजी की वर्षगांठ पर जो पुस्तकें मैंने भेजी थीं, वे आपको पसंद आईं? उनके बारे में आपकी राय जानने व आपके आशीर्वाद पाने की उत्सुकता है। मुझे विश्वास है कि ये दोनों चीजें आप जरूर भेजेंगे। कृपया शीघ्र करांची के पते पर लिखें।

वर्धा छोड़ने के तुरंत पहले मुझे मदालसा के पुत्र होने का शुभ समाचार मिला। कृपया श्रीमन्‌जी व मदालसा को मेरी बधाई पहुंचा दें। आशा है, मदालसा व बच्चा ठीक होंगे।[1]

सादर आपका,
आनंद

---

१. अंग्रेजी से अनूदित

परिशिष्ट-१

श्री रामकृष्ण डालमिया द्वारा रामकृष्ण बजाज को—

नई दिल्ली,
११-६-६६

प्रिय श्री रामकृष्ण,

आपका पत्र मिला। पूज्य भाई जमनालालजी से मेरा बहुत गाढ़ा संबंध था और मेरी उनसे दोनों परिवारों के सम्बन्ध में घंटों तक तथा कभी-कभी दिन-दिन-भर बातें हुआ करती थीं। उनकी महानता का जितना अनुभव मुझे है उतना बहुत ही कम व्यक्तियों को है। गान्धीजी तथा सरदार पटेल के एवं सरदार पटेल तथा पूज्य जमनालालजी के मतभेद आदि के विषय में उनसे अक्सर बातचीत हुआ करती थी। वह बहुत ही सरल-हृदय एवं निष्कपट बात करनेवाले थे। उनके विषय में यदि कुछ लिखना शुरू करूं तो शायद एक पुस्तक बन जाय। वह समय-समय पर भिन्न-भिन्न व्यक्तियों को मेरे से रुपया भी दिलवाते थे।

आपने प्रकाशन के लिए बहुत ही अच्छे पत्र छांटे हैं। एक पत्र के विषय में कुछ स्पष्टीकरण करना जरूरी है। भाई जमनालालजी के कहने से बिहार के इलेक्शन का सारा खर्चा मैंने देना स्वीकार किया था। किन्तु अच्छे व्यक्ति बिहार की असेम्बली में चुने जायं, इसलिए यह शर्त रखी थी कि नामों की घोषणा करने से पहले मुझसे सलाह ली जाय। परन्तु मुझसे बिना सलाह किये ही बिहार कांग्रेस के नामों की घोषणा कर दी। मैंने देखा कि उसमें कई व्यक्ति ऐसे थे, जिनके कारण कांग्रेस के नाम पर धब्बा लगता था। इसीपर मैंने कहा था कि यदि गलत व्यक्तियों का नाम हटाकर

अच्छे व्यक्ति नहीं रखे जाते तो मैं पैसा नहीं दूंगा। इस कार्य के लिए श्री राजेन्द्रबाबू डालमियानगर आकर मेरे पास तीन दिन ठहरे थे। इसके पश्चात भाई जमनालालजी ने समझौता करवाया था और बाद में उनके कहने से ही मैं गांधीजी के पास वर्धा गया और वहां मैंने गांधीजी तथा पूज्य जमनालालजी के कहने से बिहार कांग्रेस का सारा चुनाव-खर्च देना स्वीकार कर लिया था। उस समय गांधीजी ने ये वचन कहे थे कि 'रामकृष्ण, तुमने इलेक्शन का खर्चा देना स्वीकार करके मेरा बिहार का एक बोझा हल्का कर दिया।' इसके बाद मैंने बिहार कांग्रेस का सारा चुनाव-खर्च दे दिया था।

यदि आप उचित समझें तो पत्र के साथ यह प्रकाशित कर देना कि "आपस के कुछ मतभेदों के कारण मैंने पैसा देना अस्वीकार कर दिया था और बाद में भाई जमनालालजी तथा गांधीजी की आज्ञानुसार मैंने यह पैसा दिया था।" यदि यह वाक्य साथ में जोड़ना आपको उचित न लगे तो भी मैं बिना हेरफेर के सब पत्र छापने का अधिकार आपको दे रहा हूं। कभी दिल्ली आना हो तो मुझसे मिलना। श्री कमलनयन से तो कभी-कभी मिलना हो जाता है। वह भी देश-सेवा करते ही रहते हैं। मेरे पास पूज्य जमनालालजी के और भी पत्र हैं। किन्तु उनको अभी खोजने का अथवा छांटने का समय नहीं है। आपकी इच्छानुसार आपके पत्रों की प्रतिलिपियां मैं साथ में वापस कर रहा हूं।

आपका,

रामकृष्ण डालमिया

परिशिष्ट-२

परिचय

अग्रवाल, रामेश्वर	: गंगाविशन वजाज के दामाद। मैनेजमेंट-कंसल्टेंट। आल इंडिया मैन्यूफेक्चरर्स एसोसिएशन के उपाध्यक्ष।
कर्वे, डी० के०	: स्वर्गीय महर्षि कर्वे। महान् क्रांतिकारी समाजसेवी।
कानोड़िया, भागीरथ	: कलकत्ता-निवासी प्रसिद्ध समाजसेवी, उद्योगपति एवं व्यापारी।
गंगाराम, सर	: स्वर्गीय। लाहौर-निवासी सुप्रसिद्ध समाजसेवी व उद्योगपति।
खंडेलवाल, दामोदरदास	: काशी-निवासी समाजसेवी व हिन्दी-प्रेमी।
गनेड़ीवाल, केशवदेव	: वर्धा की हीरालाल रामगोपाल फर्म के मालिक। इसी फर्म के साथ जमनालाल-जी के दादा बच्छराजजी की सं० १९२५ से १९७१ तक भागीदारी थी।
गनेड़ीवाल, श्रीनारायण	: अमरावती के प्रसिद्ध व्यवसायी।
गांधी, रामदास	: महात्मा गांधी के तीसरे पुत्र।
गांधी, लक्ष्मीबहन	: चक्रवर्ती राजपालाचार्य की पुत्री, महात्मा गांधी के चौथे पुत्र श्री देवदास

गांधी की पत्नी ।

गुप्त, घनश्यामदास : कोटा निवासी । तत्कालीन असिस्टेंट रेवेन्यू कमिश्नर व रजिस्ट्रार सहकारी संस्थाएं ।

गुप्त, घनश्यामसिंह : दुर्ग-निवासी । प्रमुख आर्य समाजी कार्य-कर्त्ता, व सी० पी० की तत्कालीन विधान सभा के अध्यक्ष ।

गुप्त, परमेश्वरीप्रसाद : डेरी तथा पशुपालन-विशेषज्ञ । हिन्दी में पशुपालन-सम्बन्धी अनेक पुस्तकों के लेखक तथा समाज-सेवी ।

गोयनका, गौरीशंकर : गोरखराम साधूराम फर्म व घुसरी टेक्स-टाइल मिल के मालिक । मुख्यतः काशी-निवासी ।

गोयनका, रतनलाल : राधाकिशन काटन मिल के मालिक तथा साधूराम तुलाराम फर्म के संचालक ।

जाजोदिया, रंगलाल : स्वर्गीय । कलकत्ता के उद्योगपति व व्या-पारी । समाजसेवी तथा राजनैतिक कर्मों में दिलचस्पी लेते रहे ।

जैन, रमा : रामकृष्ण डालमिया की पुत्री व प्रसिद्ध उद्योगपति शांतिप्रसाद जैन की पत्नी ।

झुनझुनवाला, फतेहचन्द : स्वर्गीय । जमनालालजी की कई कंपनियों के डायरेक्टर, ईस्ट इंडिया कॉटन एसो-सिएशन के डायरेक्टर, मारवाड़ी सम्मे-लन, वैस्टर्न इण्डिया चैम्बर ऑफ कामर्स व अखिल भारत जातीय कोष के अध्यक्ष रहे ।

डालमिया, रामकृष्ण : सुप्रसिद्ध उद्योगपति, व्यापारी तथा

समाज-सेवी।

तान युन शान, प्रो० : रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शांतिनिकेतन के चीना-भवन के संस्थापक तथा प्राध्यापक साहित्यिक।

देवदास, लेडी डेविड : मद्रास-निवासी सर डेविड देवदास की पत्नी। इनकी पुत्री का विवाह श्री भारतन् कुमारप्पा के साथ हुआ था।

नेवटिया, केशवदेव : जमनालालजी के समधी तथा सामाजिक तथा व्यापारिक कार्यों में उनके सहयोगी। समाजसेवी व रचनात्मक कार्यों में दिलचस्पी रखनेवाले।

नेवटिया, रामेश्वर : जमनालालजी के दामाद व व्यापार में सहयोगी। प्रमुख उद्योगपति, व्यापारी व राजनैतिक कार्यकर्त्ता। भूतपूर्व संसद सदस्य। आल इण्डिया शुगर मिल्स एसोसिएशन के भू० पू० अध्यक्ष।

नेवटिया, श्रीगोपाल : बंबई-निवासी। व्यापारी तथा उद्योगपति। साहित्यिक, लेखक व कवि। सुप्रसिद्ध मासिक पत्र 'नवनीत' के संचालक।

पटवर्धन, शि० ग० : अमरावती हनुमान व्यायाम मंडल के संचालक व समाजसेवी। कुष्ठ रोगियों की वस्ती वसाकर उनकी सेवा में लगे हुए हैं।

पड़वेकर, माधव नारायण : स्वर्गीय। वच्छराज कंपनी, बंबई के सेक्रेटरी।

पाठक, पी० एस० : सन् १९१२ में वर्धा के डी० सी०। बाद में बम्बई में बैरिस्टर। जमनालालजी के

आदरणीय व घनिष्ठ मित्र।

पारसनाथ सिंह : स्वर्गीय। हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक। श्री घनश्यामदास बिड़ला के निजी सचिव।

पित्ती, राजा गोविंदलाल : बम्बई-निवासी प्रसिद्ध समाजसेवी व व्यापारी। मारवाड़ी समाज में शिक्षा-कार्य में जमनालालजी के सहयोगी।

पुंगलिया, अमरचंद : मारवाड़ी समाज-सुधारक। मारवाड़ी विद्यालय, वर्धा के प्रथम छात्र।

पोद्दार, आनंदीलाल : स्वर्गीय। बंबई-निवासी प्रसिद्ध उद्योग-पति व दानशील व्यापारी, जिन्होंने मार-वाड़ी समाज के शिक्षा प्रसार में जमना-लालजी को बहुत सहयोग दिया।

पोद्दार, बिरदीचंद : जमनालालजी के बचपन के मित्र, धार्मिक कार्यों में सहयोगी तथा रिश्ते में मामा।

पोद्दार, रामदेव : बम्बई के प्रसिद्ध उद्योगपति तथा व्यापारी। आनंदीलालजी के बड़े पुत्र।

पोद्दार, रामेश्वर : धूलिया के व्यापारी तथा समाजसेवी। गांधीजी, विनोबाजी तथा जमनालालजी के भक्त।

फाटक, भास्कर : पूना के एक उत्साही युवक।

फाटक, हरिभाऊ : स्वर्गीय। पूना-निवासी। गांधीजी के अनन्य भक्त। विद्यार्थियों व कार्यकर्त्ताओं के असीम सहायक। आजन्म ब्रह्मचारी रहे।

बच्छराज जमनालाल : जमनालालजी की वर्धा की फर्म।

बजाज, गंगाबिसन : जमनालालजी के चचेरे भाई। वर्धा में जमनालालजी के रुई-व्यापार के

	व्यवस्थापक तथा सार्वजनिक कार्यों में सहयोगी।
वड़जाते, चिरंजीलाल	: जमनालालजी की वर्धा की वच्छराज जमनालाल फर्म के मुख्य व्यवस्थापक तथा सामाजिक कार्यकर्त्ता। भारत जैन महामंडल के आधार-स्तंभ।
वाजोरिया, नारायणदास	: कलकत्ता के प्रसिद्ध धर्म-निष्ठ व्यापारी तथा जमनालालजी के प्रशंसक।
विड़ला, गजानन	: रामेश्वरदास विड़ला के बड़े पुत्र।
विड़ला, गोपीवाई	: गजानन विड़ला की पत्नी।
विड़ला, जुगलकिशोर	: स्वर्गीय। विड़ला-वंधुओं में सवसे बड़े भाई। सुप्रसिद्ध दानी तथा उदारमना धार्मिक वृत्तिवाले। अछूतोद्धार, खादी तथा धार्मिक कार्यों में उदारतापूर्वक सहायता व सहयोग देनेवाले।
विड़ला, रामेश्वरदास	: सुप्रसिद्ध उद्योगपति व व्यवसायी। विड़ला वंधुओं में दूसरे भाई।
बिड़ला, लक्ष्मीनिवास	: सुप्रसिद्ध व्यवसायी, समाजसेवी तथा अग्रणी उद्योगपति श्री घनश्यामदास बिड़ला के बड़े पुत्र। साहित्य-प्रेमी। एफ. आई. सी. सी. आई. के भूतपूर्व अध्यक्ष।
मथुरादास त्रिकमजी	: स्वर्गीय। कस्तूरबा गांधी के भतीजे। राजनैतिक तथा सामाजिक कार्यकर्त्ता। बंबई-निवासी।
मालपाणी, जमनादास	: जवलपुर के प्रसिद्ध रईस तथा व्यापारी।
मेहरोत्रा, लालजी	: प्रारम्भ में जमनालालजी के निजी

सचिव। बच्छराज कंपनी करांची के भूतपूर्व व्यवस्थापक। कराची के भूतपूर्व मेयर। एफ. आई. सी.सी. आई. के भूतपूर्व अध्यक्ष। बर्मा व जापान में भारत के भूतपूर्व राजदूत।

मूंदड़ा, दामोदरदास : जमनालालजी के निजी सचिव तथा समाजसेवी। अब सर्वोदयी कार्यकर्त्ता।

मोतीलाल माणेकचन्द : (स्वर्गीय श्री प्रताप शेठ)। अमलनेर-निवासी। व्यापारी तथा उद्योगपति। जमनालालजी के सामाजिक व राजनैतिक कार्यों में सहयोगी।

मुरारजी, शांतिकुमार नरोत्तम : बंबई के प्रसिद्ध उद्योगपति व व्यवसायी। सिंधिया स्टीम नेवीगेशन कं० के डायरेक्टर। गांधीजी तथा जमनालालजी के भक्त।

रजब अली, जनाबेन : बंबई-निवासी प्रसिद्ध राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता डा० रजबअली की पत्नी।

रांका, राजकुमारी : रिषभदास रांका की पत्नी।

रांका, रिषभदास : सामाजिक तथा राजनैतिक कार्यकर्त्ता व साहित्यिक। जमनालालजी के सहयोगी। 'अणुव्रत' व 'जैन-जगत' के संपादक।

रुइया, सुव्रता देवी : बंबई के प्रसिद्ध व्यवसायी रामनारायण रुइया की पत्नी। जमनालालजी की धर्म-बहन।

रोहतगी, डा० जवाहरलाल : कानपुर के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता।

लूणिया, जीतमल : अजमेर के सामाजिक कार्यकर्त्ता तथा प्रकाशक। सस्ता साहित्य मंडल के

	संस्थापक-सदस्य।
व्यास, कांतिभाई	: माता आनन्दमयी के भक्त।
वर्मा, शंकरलाल	: स्वर्गीय। अजमेर के प्रसिद्ध राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता। दैनिक 'हिन्दुस्तान' के सह-संपादक रहे।
वैद्य, प्रह्लादराय	: सीकर के प्रसिद्ध वैद्य तथा खादी कार्यकर्त्ता।
शादीलाल, सर	: स्वर्गीय। लाहौर के प्रसिद्ध समाज-सेवी। लाहौर हाईकोर्ट के भूतपूर्व न्यायाधीश।
शाह, ताराचंद वेचरदास	: यवतमाल (विदर्भ) के व्यापारी।
सरयूप्रसाद	: माता आनन्दमयी के भक्त।
सातवलेकर, श्रीपाद दामोदर	: स्वर्गीय। औंध-निवासी सुप्रसिद्ध विद्वान तथा वेद एवं महाभारत के भाष्य-कर्त्ता।
सिंहानिया, पदमपत	: कानपुर के सुप्रसिद्ध उद्योगपति तथा व्यवसायी।
सेकसरिया, गोविंदराम	: स्वर्गीय। बंबई के सुप्रसिद्ध रूई के व्यवसायी। वर्धा के सेकसरिया कामर्स कालेज के प्रमुख दानदाता।
सेठ, रणछोड़लाल	: अहमदाबाद के मिल-मालिक। १९३२ में दिल्ली में हुए गैर-कानूनी कांग्रेस अधिवेशन के सभापति।
सेठी, लालचंद	: स्वर्गीय। झालरापाटन (राजस्थान) निवासी। उज्जैन के प्रसिद्ध उद्योगपति तथा व्यवसायी। साहित्य-प्रेमी व सामाजिक कार्यकर्त्ता।
हरिराम	: माता आनन्दमयी के भक्त।
हिंगोरानी, आनंद टी.	: कराची के प्रसिद्ध गांधीवादी अध्यापक। इलाहाबाद-निवासी।

निर्देशिका

जमनालाल बजाज-सम्बन्धी साहित्य

जीवनी तथा संस्मरण

जमनालाल बजाज : रामनरेश त्रिपाठी (अप्राप्य)
जमनालालजी : घनश्यामदास बिड़ला
श्रेयार्थी जमनालालजी : हरिभाऊ उपाध्याय
मेरी जीवन-यात्रा : जानकीदेवी बजाज
जीवन जौहरी : रिषभदास रांका
स्मरणांजलि : संपादक—काका कालेलकर
Jamnalal Bajaj : T. V. Parvate
रचनात्मक राजनीति : जमनालाल बजाज
बापू स्मरण : संपादक—रामकृष्ण बजाज
श्रेयसाधक : संपादक—केदारनाथ

गांधीजी के साथ का पत्र-व्यवहार

संपादक—काका कालेलकर

पांचवें पुत्रको बापू के आशीर्वाद : गांधीजी के साथ हुआ जमनालालजी का संपूर्ण पत्र-व्यवहार

बापू के पत्र
पांचमां पुत्रने बापुना आशीर्वाद
To a Gandhian Capitalist
} उपरोक्त किताब में से चुने हुए पत्रों का संकलन—हिन्दी, गुजराती व अंग्रेजी में

अन्य पत्र-साहित्य

विनोबा के पत्र : विनोबा के साथ हुआ पत्र-व्यवहार
पत्र-व्यवहार—१ : राजनीतिक नेताओं के साथ
पत्र-व्यवहार—२ : रियासती कार्यकर्ताओं के साथ
पत्र-व्यवहार—३ : रचनात्मक कार्यकर्ताओं के साथ
पत्र-व्यवहार—४ : जानकीदेवी बजाज के साथ
पत्र-व्यवहार—५ : परिवार के अन्य सदस्यों के साथ
पत्र-व्यवहार—६ : राज्याधिकारियों के साथ
पत्र-व्यवहार—७ : व्यापारी-वर्ग व समाज-सेवियों के साथ

जमनालाल बजाज की डायरी

(संपादक—रामकृष्ण बजाज)

खंड — १ : सन् १९१२ से १९१५ तक
खंड — २ : सन् १९२३ से १९२९ तक
खंड — ३ : सन् १९३० से १९३३ तक